गुटका
चन्द्रकान्ता सन्तति।
बीसवां हिस्सा।
बाबू देवकीनन्दन खत्री
रचित
1921
PRINTED BY
PANNA LAL ROY MANAGER
AT THE LAHARI PRESS,
BENARES.
Price
OPRIETOR
PIR HASAMUD DEEN KASHMIR

मिलने का पता—

मैनेजर लहरी प्रेस,

लाहौरी टोला,

बनारस सिटी ।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति।

बीसवां हिस्सा।
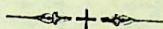
बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

और

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित।

(The right of translation and reproduction is reserved.)

पन्नालाल राय द्वारा

लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित।

चौथी बार ३०००] १९२१ [मूल्य ।-) आ०

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति।

बीसवां हिस्सा।

पहिला बयान।

भूतनाथ और देवीसिंह को कई आदमियों ने पीछे से पकड़ कर अपने काबू में कर लिया और उसी समय एक आदमी ने किसी विचित्र भाषा में पुकार कर कुछ कहा जिसे सुनते ही वे दोनों औरतें अर्थात् चम्पा और भूतनाथ की स्त्री चिराग फेंक फेंक कर पीछे की तरफ लौट गईं और अन्धकार के कारण कुछ मालूम न हुआ कि वे दोनों कहां गईं या क्या हुईं! हां भूतनाथ और देवीसिंह को इतना मालूम हो गया कि उन्हें गिरफ़ार करने वाले भी सब नकाबपोश हैं। भूतनाथ की तरह देवीसिंह भी सूरत बदल कर अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था॥

गिरफ़ार हो जाने के बाद भूतनाथ और देवीसिंह दोनों एक साथ कर दिये गये और दोनों ही को लिये हुए वे सब बीच वाले बङ्गले की तरफ रवाना हुए। यद्यपि अन्धकार के अतिरिक्त सूरत बदलने और नकाब डाले रहने के सबब एक को दूसरे का पहिचानना कठिन था

तथापि अन्दाज़ ही से एक को दूसरे ने जान लिया और शरमिन्दगी के साथ धीरे धीरे बङ्गले की तरफ जाने लगे। जब बङ्गले के पास पहुंचे तो आगे वाले दालान में जहां दो चिरागों की रोशनी थी, तीन आदमियों को हाथ में नङ्गी तलवारें लिये पहरा देते देखा। वहां पहुंचने पर हमारे दोनों ऐयारों को मालूम हुआ कि उन्हें गिरफ़ार करने वाले गिनती में आठ से ज्यादे नहीं हैं। उस समय देवीसिंह और भूतनाथ के दिल में थोड़ी देर के लिये यह बात पैदा हुई कि केवल आठ आदमियों से हमें गिरफ़ार हो जाना उचित न था और अगर हम चाहते तो इन लोगों से अपने को बचा लेते, मगर उन दोनों का यह विचार तुरत ही जाता रहा जब उन्होंने कुछ कम बेश यह सोचा कि अगर हम इन लोगों से अपने को बचा ही लेते तो क्या होता? क्योंकि इस समय यहां से निकल कर भाग जाना कठिन था और अगर हम भाग भी जाते तो जिस काम के लिये आये थे उससे हाथ धो बैठते, अस्तु जो होगा देखा जायगा॥

इस दालान में अन्दर जाने के लिये एक दर्वाज़ा था और उसके आगे लाल रङ्ग का रेशमी पर्दा लटक रहा था। दीवार छत इत्यादि सब सङ्गीन बने हुए थे और उन पर तरह तरह की तस्वीरें अपनी खूबी और खूबसूरती के सबब देखने वाले का दिल खींचे लेती थीं, इस समय उन पर भरपूर और बारीक निगाह डालना हमारे ऐयारों के लिये कठिन था इस लिये हम भी इसका खुलासा हाल बयान नहीं कर सकते॥

जो लोग दोनों ऐयारों को गिरफ़ार कर लाये थे उनमें से एक आदमी पर्दा उठा कर बङ्गले के अन्दर चला गया और चौथाई घड़ी के बाद लौट आकर अपने साथियों से बोला, "इन दोनों महाशयों को सर्कार के सामने ले चलो और एक आदमी जाकर इन दोनों के

लिये हथकड़ी बेड़ी भी ले आओ कदाचित हमारे सर्कार इन दोनें के लिये कैदखाने का हुक्म दें ॥"

अस्तु एक आदमी हथकड़ी बेड़ी लाने के लिये चला गया और वे सब देवीसिंह और भूतनाथ को लिये हुए बङ्गले के अन्दर रवाना हुए ॥

यह बङ्गला बाहर से जैसा सादा और मामूली ढङ्ग का मालूम होता था वैसा अन्दर से न था। जूता उतार कर चौकठ के अन्दर पैर रखते ही हमारे दोनें ऐयार ताज्जुब के साथ चारें तरफ देखने लगे और समझ गये कि इसके अन्दर रहने वाला या इसका मालिक कोई साधारण आदमी नहीं है। देवीसिंह के लिये यह बात सब से ज्यादे ताज्जुब की थी और इसी लिये उसके दिल में घड़ी घड़ी यह बात पैदा होती थी कि यह स्थान हमारे इलाके में होने पर भी अफसोस और ताज्जुब की बात है कि इतने दिनें तक हम लोगें को इसका पता न लगा ॥

पर्दा उठा कर अन्दर जाने पर हमारे दोनें ऐयारें ने अपने को एक गोल कमरे में पाया जिसकी छत भी गोल और गुम्बजदार थी और उस में बहुत सी बिल्लौरी हांडियां जिनमें इस समय मोमी बत्तीयां जल रही थीं कायदे और मौके २ के साथ लटक रही थीं। दीवारें पर खूबसूरत जङ्गल और पहाड़ें की तस्वीरें निहायत खूबी के साथ बनी हुई थीं जो इस समय ज्यादे रोशनी के सबब साफ मालूम होती थीं और यही जान पड़ता था कि अभी बन कर तैयार हुई हैं। इन तस्वीरें में अकस्मात देवीसिंह और भूतनाथ ने रोहतासगढ़ की पहाड़ी और किले की भी तस्वीर देखी जिसके सबब से और तस्वीरें को भी गौर से देखने का शौक उन्हें हुआ मगर ठहरने की मोहलत न मिलने के सबब लाचार थे। जमीन पर सुर्ख मख-

मली मुलायम गद्दा बिछा हुआ था और सदर दर्वाजे के अतिरिक्त उसमें और भी तीन दर्वाजे थे जिनमें बेशकीमत कमख्वाब के पर्दे पड़े हुए थे और उनमें मोतियों की झालरें लटक रही थीं। हमारे दोनों ऐयारों को दाहिने तरफ वाले दर्वाजे के अन्दर जाना पड़ा जहां गली के ढङ्ग पर एक रास्ता घूमा हुआ था। इस रास्ते में भी मखमली गद्दा बिछा था, दोनों तरफ की दीवार साफ चिकनी और छत के सहारे एक बिल्लोरी कन्दील लटक रही थी जिसकी रोशनी इस सात आठ हाथ लम्बी गली के लिये काफी थी। इस गली को पार कर के ये दोनों एक बहुत बड़े कमरे में पहुंचे जिसकी सजावट और खूबी ने उन्हें ताज्जुब में डाल दिया और वे हैरत की निगाह से चारों तरफ देखने लगे॥

जङ्गल, मैदान, पहाड़, खोह, दर्रे, झरने, शिकारगाह तथा शहरपनाह, किले, मोरचे और लड़ाई इत्यादि की तसवीरें चारों तरफ दीवारों में इस खूबी और सफाई के साथ बनी हुई थीं कि देखने वाला यह कह सकता था कि "बस इससे ज्यादे कारीगरी और सफाई का काम मुसौअर करही नहीं सकता।" छत पर तरह २ की चिड़ियाएं और उनके पीछे झपटते हुए बाज बहरी इत्यादि शिकारी परिन्दों की तस्वीरें बनी हुई थीं, जो दीवारगीरों और कन्दीलों की तेज रोशनी के सबब बहुत साफ दिखाई दे रही थीं। जमीन पर साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ था और सामने की तरफ हाथ भर ऊंची गद्दी पर दो नकाबपोश तथा गद्दी के नीचे भी कई आदमी अदब के साथ बैठे हुए थे मगर उनमें से ऐसा कोई भी न था जिसके चेहरे पर नकाब न हो॥

देवीसिंह और भूतनाथ को उम्मीद थी कि हम उन्हीं दोनों नकाबपोशों को उसी ढङ्ग की पोशाक में देखेंगे जिन्हें कई दफे देख चुके हैं, मगर यहां उसके विपरीत देखने में आया। इस बात का निश्चय तो

नहीं हो सकता था कि इस नकाब के अन्दर वही सूरत छिपी हुई है या कोई और लेकिन पोशाक और आवाज यही प्रगट करती थी कि ये दोनों कोई दूसरे ही हैं मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि इन दोनों की पोशाक उन नकाबपोशों से कहीं बढ़ चढ़ के थी जिन्हें भूतनाथ और देवीसिंह देख चुके थे॥

जब देवीसिंह और भूतनाथ उन दोनों नकाबपोशों के सामने खड़े हुए तो उन दोनों में से एक ने अपने आदमियों से पूछा— "ये दोनों कौन हैं जिन्हें तुम गिरफ्तार कर लाये हो ?"

एक०। जी इनमें से ये तो (हाथ का इशारा करके) राजा बीरेन्द्र-सिंह के ऐयार देवीसिंह हैं और यह वही मशहूर भूतनाथ है जिसका मुकद्दमा आजकल राजा बीरेन्द्रसिंह के दर्बार में पेश है॥

नकाबपोश०। (ताज्जुब से) हां! अच्छा तो ये दोनों यहां क्यों आये ? अपनी मर्जी से आये हैं या तुम लोग जबर्दस्ती गिरफ़ार कर लाये हो ?

वही आदमी०। इस हाते के अन्दर तो ये दोनों अपनी मर्जी से आये थे मगर यहां तक हम लोग गिरफ़ार करके लाये हैं॥

नकाबपोश०। (कुछ कड़ी आवाज में) गिरफ़ार करने जरूरत क्यों पड़ी ? किस तरह मालूम हुआ कि ये दोनों यहां बदनीयती के साथ आये हैं ? क्या इन दोनों ने तुम लोगों से कुछ हुज्जत की थी ?

वही आदमी०। जी हुज्जत तो किसी से नहीं की मगर छिप २ कर आने और पेड़ की आड़ में खड़े होकर ताक झांक करने से मालूम हुआ कि इन दोनों की नीयत अच्छी नहीं है, इस लिये गिर-फ़ार कर लिये गये॥

नकाबपोश०। इतने बड़े प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐसे नामी ऐयार के साथ केवल इतनी बात पर इस तरह का बर्ताव करना तुम

लोगों को उचित न था, कदाचित ये हम लोगों से मिलने के लिये आये हों ! हां, अगर केवल भूतनाथ के साथ ऐसा बर्ताव होता तो ज्यादे रञ्ज की बात न थी ॥

यद्यपि नकाबपोश की आखिरी बात भूतनाथ को कुछ बुरी मालूम हुई मगर कर ही क्या सकता था । साथ ही इसके यह भी देख रहा था कि नकाबपोश भलमनसी और सभ्यता के साथ बातें कर रहा है जिसकी उम्मीद यहां आने के पहिले कदापि न थी । अस्तु जब नकाबपोश अपनी बात पूरी कर चुका तो इसके पहिले कि उसका नौकर कुछ जवाब दे भूतनाथ बोल उठा :—

भूतनाथ० । कृपानिधान ! हमलोग यहां बुरी नीयत से नहीं आये हैं, न तो चोरी करने का इरादा है न किसी को तकलीफ देने का, मैं केवल अपनी स्त्री का पता लगाने के लिये यहां आया हूं क्योंकि मेरे जासूसों ने मेरी स्त्री के यहां होने की मुझे इत्तला दी थी ॥

नकाबपोश० । (मुसकुरा कर) शायद ऐसाही हो मगर मेरा खयाल कुछ दूसरा ही है, मेरा दिल यही कह रहा है कि तुम लोग उन दोनों नकाबपोशों का असल हाल जानने के लिये यहां आये हो जो राजा साहब के दर्बार में जाकर अपने विचित्र कामों से लोगों को ताज्जुब में डाल रहे हैं, मगर साथही इसके इस बात को भी समझ लो कि यह मकान उन दोनों नकाबपोशों का नहीं है बल्कि हमारा है, उनके मकान में जाने का रास्ता तुम उस सुरङ्ग के अन्दर ही छोड़ आये हो जिसे तै करके यहां आये हो अर्थात् हमारे और उनके मकान का रास्ता बाहर से तो एक ही है मगर सुरङ्ग के अन्दर आ कर दो हो गया है । खैर जो कुछ हो हम इस बारे में ज्यादे बातचीत करना उचित नहीं समझते और न तुम लोगों को कुछ तकलीफ दिया चाहते हैं बल्कि अपना मेहमान समझ कर कहते हैं कि अब आगये

हो तो रात भर कुटिया में आराम करो सवेरा होने पर जहां इच्छा हो चले जाना। (गद्दी के नीचे बैठे हुए एक नकाबपोश की तरफ देख के) यह काम तुम्हारे सुपुर्द किया जाता है, इन्हें खिला पिला कर ऊपर वाले मञ्जिल में सोने की जगह दो सुबह को इन्हें खोह के बाहर पहुंचा दो॥

इतना कह कर वह नकाबपोश उठ खड़ा हुआ और उसका साथी दूसरा नकाबपोश भी जाने के लिये तैयार हो गया। जिस जगह इन नकाबपोशों की गद्दी लगी हुई थी उस (गद्दी) के पीछे ही दीवार में एक दर्वाजा था और उसमें पर्दा लटक रहा था, दोनों नकाबपोश पर्दा उठा कर अन्दर चले गये और यह छोटा सा दर्बार बर्खास्त हुआ। गद्दी के नीचे बैठने वाले भी मुसाहब, सर्दार या नौकर जो कोई हो उठ खड़े हुए और उस आदमी ने जिसे दोनों ऐयारों की मेहमानी का हुक्म हुआ था देवीसिंह और भूतनाथ की तरफ देख कर कहा, "आपलोग मेहरबानी करके मेरे साथ आइये और ऊपर की मञ्जिल में चलिये।" भूतनाथ और देवीसिंह भी कुछ उज्र न करके उनके पीछे पीछे चलने के लिये तैयार हो गये॥

नकाबपोश की बातों ने भूतनाथ और देवीसिंह दोनों ही को ताज्जुब में डाल दिया। भूतनाथ ने नकाबपोश से कहा था कि "मैं अपनी स्त्री की खोज में यहां आया हूं।" मगर बहुत कुछ कह जाने पर भी नकाबपोश ने भूतनाथ की इस बात का कोई जवाब न दिया और उसका ऐसा करना भूतनाथ के दिल में खुटका पैदा करने के लिये कम न था। भूतनाथ को निश्चय हो गया कि हमारी स्त्री यहां है और अवश्य है। उसने सोचा कि जो नकाबपोश राजा बीरेन्द्रसिंह के दर्बार में पहुंचकर बड़ी २ गुप्त बातें इस अनूठे ढङ्ग से खोलते हैं, उनके घर यदि मैं अपनी स्त्री को देख तो यह कोई आश्चर्य की बात

नहीं है। हमारे देवीसिंह ने तो एक शब्द भी मुंह से निकालना पसन्द न किया। न मालूम इसका क्या सबब था और वह क्या सोच रहा था मगर इस बात की शर्म तो देवीसिंह को जरूर थी कि वह वहां आने के साथ ही गिरफ़ार हो गया। यह नकाबपोश की मेहरबानी थी कि हथकड़ी और बेड़ी से उनकी खातिर न की गई ॥

वह नकाबपोश कई रास्तों से घुमाता फिराता भूतनाथ और देवीसिंह को ऊपर वाली मञ्जिल में लेगया। जो लोग इन दोनों को गिरफ़ार कर लाये थे वे भी उनके साथ गये ॥

जिस कमरे में भूतनाथ और देवीसिंह पहुंचाये गये यद्यपि बहुत बड़ा न था मगर जरूरी और मामूली ढङ्ग के सामान से सजाया हुआ था। कन्दील में रोशनी हो रही थी, जमीन पर साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ था और कई तकिये भी रक्खे हुए थे, एक सङ्गमर्मर की छोटी चौकी बीच में रक्खी हुई थी और एक किनारे दो सुन्दर पलङ्ग आराम करने के लिये बिछे हुए थे ॥

भूतनाथ और देवीसिंह से खाने पीने के लिये कई दफे कहा गया मगर उन दोनों ने इन्कार किया। अस्तु लाचार हो कर नकाबपोश ने उन दोनों को आराम करने के लिये उसी जगह छोड़ा और स्वयं उन आदमियों को जो दोनो ऐयारों को गिरफ़ार कर लाये थे साथ लिये हुए वहां से चला गया और जाती समय बाहर से दर्वाजे की जञ्जीर बन्द करता गया। अब इस कमरे में भूतनाथ और देवीसिंह अकेले रह गये ॥
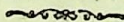
दूसरा बयान।

जब दोनों ऐयार उस कमरे में अकेले रह गये तब थोड़ी देर तक अपनी अवस्था और भूल पर गौर करने बाद आपुस में यों बातें करने लगेः—

देवी०। यद्यपि तुम मुझसे और मैं तुमसे छिप कर यहां आया मगर यहां आने पर वह छिपना बिलकुल व्यर्थ ही हो गया। तुम्हारे गिरफ़ार हो जाने का तो ज्यादे रञ्ज न होना चाहिये क्योंकि तुम्हें अपनी जान की फिक्र पड़ी हुई थी अतएव अपनी भलाई के लिये तुम यहां आये थे और जो कोई किसी तरह का फायदा उठाना चाहता है उसे कुछ न कुछ तकलीफ जरूर ही भोगनी पड़ती है मगर मैं तो दिल्लगी ही दिल्लगी में बेवकूफ बन गया। न तो मुझे इन लोगों से कोई मतलब ही था और न यहां आये बिना मेरा कुछ हर्ज ही होता था॥

भूतनाथ०। (मुस्कुरा कर) मगर आने पर आपका भी एक काम निकल आया, क्योंकि यहां अपनी स्त्री को देख कर अब किसी तरह की जांच किये बिना आप नहीं रह सकते॥

देवी०। ठीक है, मगर भूतनाथ! तुम बड़े ही निडर और हौसले के ऐयार हो, जो ऐसी अवस्था में भी हँसने और मुस्कुराने से बाज नहीं आते॥

भूत०। तो क्या आप ऐसा नहीं कर सकते?

देवी०। अगर बनावट के तौर पर हँसने या मुस्कुराने की जरूरत न पड़े तो मैं ऐसा नहीं कर सकता, मैं इस बात को खूब समझता हूं कि तुम्हारे जीवट और हौसले की इतनी तरक्की क्योंकर हुई मगर वास्तव में तुम निराले ढङ्ग के आदमी हो, सच तो यों है कि तुम्हारी अवस्था का जानना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है॥

भूत० । आपका कहना बहुत ठीक है, तब तक मेरे जीवट और मर्दानगी का अन्दाजा मिलना कठिन है जब तक मैं अपने को मुर्दा समझे हुए हूं, जिस दिन अपने को जिन्दा समझूंगा उस दिन यह बात न रहेगी ॥

देवी० । तो क्या तुम अभी तक अपने को मुर्दा समझे हुए हो ?

भूत० । बेशक ! क्योंकि अब मैं बेइज्जती और बदनामी के साथ जीने को मरने के बराबर समझता हूं, जिस दिन मैं राजा बीरेन्द्रसिंह का विश्वासपात्र बनने योग्य हो जाऊँगा उस दिन समझूंगा कि जी गया, मैं आपसे इस किस्म की बातें कदापि न करता अगर आपको अपना मेहरबान और मददगार न समझता । आपको जयपाल या नकली बलभद्रसिंह की पहिली मुलाकात का दिन याद होगा जब आपने मुझ पर मेहरबानी रखने और मुझे अपनाने का शपथ पूर्वक एकरार किया था ॥

देवी० । बेशक मुझे याद है, जब तुम घबड़ाये हुए और बेबसी की अवस्था में थे तब मैंने तुमसे कहा था कि—यदि मुझे यह भी मालूम हो जायगा कि तुम मेरे पिता के घातक हो जिन पर मेरा बड़ा ही स्नेह था तो भी तुम्हें इसी तरह मुहब्बत की निगाह से देखूंगा जैसा कि मैं अब देख रहा हूं* । कहो है न यही बात ?

भूत० । बेशक यही शब्द आपने कहे थे ॥

देवी० । और अब भी मैं उसी बात का एकरार करता हूं ॥

भूतनाथ० । (प्रसन्नता से) आपकी सचाई पर मुझे भी उतना ही विश्वास है जितना एक और एक दो होने पर ॥

देवी० । यह बात तो शायद तुम सच नहीं कहते ॥

भूत० । (चौंक कर) सो कैसे ?

* देखो ग्यारहवें हिस्से का आखिरी बयान ॥

देवी०। इसी से कि तुमने अपने भेद की कोई बात भी आज तक मुझसे नहीं कही, यहां तक कि इस जगह आने की इच्छा भी मुझ पर प्रगट न की ॥

भूत०। (शरमिन्दगी से सर नीचा करके) बेशक यह मेरा कसूर है जिसके लिये (हाथ जोड़ के) मैं आप से मांफी मांगता हूं, क्योंकि मैं इस बात को अच्छी तरह देख चुका हूं कि आपने अपनी बात का निर्बाह पूरा पूरा किया ॥

देवी०। खैर अब भी अगर तुम मुझे अपना विश्वासपात्र समझोगे तो मेरे दिल का रञ्ज निकल जायगा, असल तो यों है कि ऐसे ही मौके पर तुम से मिलने के लिये मैंने यहां आने का इरादा भी किया क्योंकि मुझे विश्वास था कि तुम यहां जरूर आओगे। खैर अब तुम अपने कौल और इकरार को याद रक्खो और इस समय इन बातों को इसी जगह छोड़ कर इस बात पर विचार करो कि अब हम लोगों को क्या करना चाहिये ? मैं समझता हूं कि तुम्हारे पास तिलिस्मी खञ्जर मौजूद है ॥

भूत०। जी हां (खञ्जर की तरफ इशारा करके) यह तैयार है ॥

देवी०। (अपने खञ्जर की तरफ बता के) मेरे पास भी है ॥

भूत०। आपको कहां से मिला ?

देवी०। तेजसिंह ने दिया था यह वही खञ्जर है जो मनोरमा के पास था कम्बख्त ने इसके जोड़ की अंगूठी अपने जंघे के अन्दर छिपा रक्खी थी जिसका पता बड़े मुश्किल से लगा और तब से इस ढङ्ग को मैंने भी पसन्द किया ॥

भूतनाथ०। अच्छा तो अब आपकी क्या राय होती है ? यहां से निकल भागने की कोशिश की जाय या यहां रह कर कुछ भेद जानने की ?

देवी०। इन दोनों खञ्जरों की बदौलत शायद हम यहां से निकल जा सकें मगर ऐसा न करना चाहिये । जब गिरफ़ार होने की शरमिन्दगी उठा चुके तो बिना कुछ किये चले जाना उचित नहीं है, तिस पर यहां आ कर हमने अपनी स्त्री को और तुमने अपनी स्त्री को देख लिया अब क्या बिना उन दोनों का असल भेद मालूम किये यहां से चलने की इच्छा हो सकती है ॥

भूत० । बेशक ऐसा ही है......

इतना कह कर भूतनाथ यकायक रुक गया क्योंकि उसके कान में किसी के ज़ोर से हँसने की आवाज आई और यह आवाज कुछ पहिचानी हुई सी जान पड़ी, देवीसिंह ने भी उस आवाज पर गौर किया और उसे भी इस बात का शक हुआ कि इस आवाज को मैं कई दफे सुन चुका हूं । मगर इस बात का निश्चय वे दोनों नहीं कर सकते थे कि यह आवाज किसका है ॥

देवीसिंह और भूतनाथ दोनों ही आदमी इस बात को गौर से देखने और जांचने लगे कि यह आवाज किधर से आती है और हम उसे किसी तरह देख सकते हैं या नहीं जिसकी आवाज है । यकायक उन दोनों ने दीवार में दो सूराख देखे जिनमें आदमी का सर बखूबी जा सकता था । ये सूराख छत से हाथ भर नीचे हट कर थे और हवा आने जाने के लिये बनाये गये थे । दोनों को खयाल हुआ कि इसी सूराख में से आवाज आती है और उसी समय पुनः हँसने की आवाज आने से इस बात का निश्चय भी हो गया ॥

दोनों ने चाहा कि किसी तरह उस सूराख तक पहुंच कर देखना चाहिये कि कुछ दिखाई देता है या नहीं मगर इस ढङ्ग से कि उस तरफ वालों को हमारी इस ढिठाई का पता न लगे ॥

हम लिख चुके हैं कि इस कमरे दो चारपाई बिछी हुई थीं ।

देवीसिंह ने उन्हीं दोनों चारपाइयों को उस सूराख तक पहुंचने का जरिया बनाया अर्थात् बिछावन हटा देने के बाद एक चारपाई दीवार के सहारे खड़ी करके दूसरी चारपाई उसके ऊपर खड़ी की और कमन्द से दोनों के पावे अच्छी तरह मजबूती के साथ बांध कर एक प्रकार की सीढ़ी तैयार की। इसके बाद देवीसिंह ने भूतनाथ के कन्धे पर चढ़ कर कन्दील की रोशनी बुझा दी और तब उस चारपाई की अनूठी सीढ़ी पर चढ़ने का विचार किया, उस समय मालूम हुआ कि उस सूराख में से रोशनी भी आ रही है। भूतनाथ ने नीचे खड़े रह कर चारपाई को मजबूती के साथ थाम्हा और बिनावट के सहारे अँगूठा अड़ाता हुआ देवीसिंह ऊपर चढ़ गया। वे सूराख टेढ़े अर्थात् दूसरी तरफ को झुकते हुए थे। एक सूराख में गर्दन डाल कर देवीसिंह ने देखना शुरू किया। उधर नीचे की मञ्जिल में बहुत बड़ा कमरा था जिसकी ऊंची छत इस कमरे की छत के बराबर पहुंची हुई थी जिसमें देवीसिंह और भूतनाथ थे। उस कमरे में सजावट की कोई चीज न थी सिर्फ जमीन पर साफ सुपेद फर्श बिछा हुआ था और दो शमादान जल रहे थे। वहां पर देवीसिंह ने दो नकाबपोशों को ऊँची गद्दी पर और चार को गद्दी के नीचे बैठे हुए पाया और एक तरफ जिधर कोई मर्द न था अपनी और भूतनाथ की स्त्री को देखा। ये लोग आपुस में धीरे धीरे बातें कर रहे थे। इनकी बातें साफ समझ में नहीं आती थीं हां जब कभी कोई जोर से बोल उठता था तो कुछ समझ में आ जाता था। जो कुछ टूटी फूटी बातें सुनने में आईं उनका मतलब यही था कि "सुरङ्ग का दरवाजा बन्द करने में भूल हो जाने के सबब से भूतनाथ और देवीसिंह यहां आ गये अस्तु अब ऐसी भूल न होनी चाहिये जिसमें यहां तक कोई आ सके इत्यादि।" इसी बीच में एक नकाबपोश वहां और भी आ पहुंचा

जो इस समय अपने नकाब को उलट कर सिर के ऊपर फेंके हुए था। इस आदमी की सूरत देखते ही देवीसिंह ने पहिचान लिया कि यह भूतनाथ का लड़का और कमला का सगा तथा बड़ा भाई हरनामसिंह है। देवीसिंह ने अपनी जिन्दगी में हरनामसिंह को शायद एक ही दो दफे किसी मौके पर देखा होगा, इस लिये उसको पहिचान तो लिया मगर ताज्जुब के साथ ही साथ शक बना रहा अस्तु इस शक को मिटाने के लिये देवीसिंह नीचे उतर आया और चारपाई को खुद पकड़ कर भूतनाथ को ऊपर चढ़ने और उस सूराख के अन्दर झांकने के लिये कहा॥

जब भूतनाथ चारपाई के बिनन के सहारे ऊपर चढ़ गया और उसने सूराख में झांक कर देखा तो अपने लड़के हरनामसिंह को पहिचान कर उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और बड़े गौर से देखने तथा उन लोगों की बातें सुनने लगा॥

पाठक ! ताज्जुब नहीं कि आप इस हरनामसिंह को एकदम भूल गये हों क्योंकि जहां तक हमें याद है इसका नाम शायद सन्तति के दूसरे हिस्से के पांचवें बयान में आकर रह गया और फिर कहीं इसका जिक्र तक नहीं आया। यह वह हरनामसिंह नहीं है जो मायारानी का ऐयार था बल्कि यह कमला का बड़ा भाई खास भूतनाथ का पहिला और असल लड़का हरनामसिंह है। इसे बहुत दिन के बाद आज यहां पर देख कर आप निःसन्देह आश्चर्य्य करेंगे। अस्तु अब हम लिखते हैं कि भूतनाथ ने सूराख के अन्दर झांक कर और क्या देखा॥

भूतनाथ ने देखा कि उसका लड़का हरनामसिंह गद्दी के ऊपर बैठे हुए दोनों नकाबपोशों के सामने खड़ा और सदर दरवाजे की तरफ बड़े गौर से देख रहा है। उसी समय एक आदमी दपेटे हुए

मोटे कपड़े का बहुत बड़ा लम्बा पुलिन्दा लिये हुए आ पहुंचा और उस पुलिन्दे को गद्दी पर रख के हाथ जोड़ खड़ा होगया और भर्राई हुई आवाज में बोला, "कृपानाथ! बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूंगा॥"

गद्दी के नीचे बैठे हुए दो आदमियों ने इशारा पाकर उस लपेटे हुए कपड़े को खोला और तब भूतनाथ ने भी देखा कि वह एक बहुत बड़ी और आदमी के कद के बराबर तस्वीर है॥

उस तस्वीर पर निगाह पड़तेही भूतनाथ की अवस्था बिगड़ गई और वह डर के मारे थर थर कांपने लगा। बहुत कोशिश करने पर भी वह अपने को सम्हाल न सका और उसके मुंह से एक चीख की आवाज निकल ही गई अर्थात् वह चिल्ला उठा। उसी समय उसने यह भी देखा कि मेरी आवाज उन लोगों के कान में पहुंच गई और इस सबब से वे लोग ताज्जुब के साथ ऊपर की तरफ देखने लगे॥

भूतनाथ जल्दी के साथ चारपाई के नीचे उतर आया और कांपती हुई आवाज में देवीसिंह से बोला, "ओफ! मैं अपने को सम्हाल न सका और मेरे मुंह से चीख की आवाज निकल ही गई जिसे उन लोगों ने सुन लिया, ताज्जुब नहीं कि उन लोगों में से कोई यहां आवे, अस्तु आप जो उचित समझिये कीजिये कुछ देर बाद मैं अपना हाल आपसे कहूंगा।" इतना कह भूतनाथ जमीन पर बैठ गया॥

देवीसिंह ने झटपट अपने बटुये में से सामान निकाल कर मोम-बत्ती जलाई, दो तीन डपट की बातें भूतनाथ को कह चैतन्य किया और उसके मोढ़े पर चढ़ कर कन्दील जलाने बाद मोमबत्ती बुझा कर बटुये में रख ली और इसके बाद दोनों चारपाई उसी तरह दुरुस्त कर दी जिस तरह पहिले थी एक चारपाई पर भूतनाथ को सुला-कर पेट दर्द का बहाना करने और हाय हाय करके कराहने के लिये

कह कर आप उसी चारपाई के सहारे बैठ गया । उसी समय कमरे का दरवाजा खुला और तीन चार आदमी नकाबपोश अन्दर आते हुए दिखाई पड़े ॥

उन आदमियों ने पहिले तो गौर से कमरे के अन्दर की अवस्था देखी और इनमें से एक ने आगे बढ़ कर देवीसिंह से पूछा, "क्या अभी तक आप लोग जाग रहे हैं ?"

देवी० । हां, (भूतनाथ को तरफ इशारा कर के) इसके पेट में दर्द हो रहा है और बड़ी तकलीफ है, अक्सर दर्द की तकलीफ से चिल्ला उठता है ॥

नकाबपोश० । (भूतनाथ की तरफ देख के) आज यहां कुछ खाने में भी तो नहीं आया !!

देवी० । पहिले ही की कुछ कसर होगी ॥

नकाब० । फिर कुछ दवा वगैरह का बन्दोबस्त किया जाय ?

देवी० । मैंने दो दफे दवा खिलाई है अब तो कुछ आराम हो रहा है । पहिले बड़ी तेजी पर था ॥

इतना सुन कर वे लोग चले गये और जाती समय पहिले की तरह दर्वाजा भी बन्द करते गये ॥

पुनः उस कमरे में सन्नाटा होगया और भूतनाथ तथा देवीसिंह को धीरे धीरे बातचीत करने का मौका मिला ॥

देवी० । हां अब बताओ तुमने पिछले कमरे में क्या देखा था और तुम्हारे मुंह से चीख की आवाज क्यों निकल गई थी ?

भूत० । ओफ मेरे प्यारे दोस्त देवीसिंह ! क्योंकि अब मैं आपको खुशी और सच्चे दिल से अपना दोस्त कह सकता हूं चाहे आप मुझ से हर तरह पर बड़े क्यों न हों । उस कमरे में जो कुछ मैंने देखा वह मुझे दहला देने के लिये काफी था । पहिले तो मैंने अपने लड़के

को देखा जिसे उम्मीद है कि आपने भी देखा होगा ॥

देवी०। बेशक उसे मैंने उसे देखा था मगर शक मिटाने के लिये तुम्हें दिखाना पड़ा, चाहे वह कोई ऐयार ही सूरत बदले हुए क्यों न हो मगर शक्ल ठीक वैसी ही है ॥

भूत०। अगर उसकी सूरत बनावटी नहीं है तो वह ठीक मेरा लड़का हरनामसिंह है। खैर उसके बारे में तो मुझे कुछ ज्यादे तरद्दुद न हुआ मगर उसके कुछ ही देर बाद मैंने एक ऐसी चीज देखी कि जिससे हौल हो गया और मेरे मुंह से चीख की आवाज निकल पड़ी ॥

देवी०। वह क्या चीज थी ?

भूत०। एक बहुत बड़ी तस्वीर थी जो एक आदमी ने पहुंच कर उस नकाबपोश के आगे रख दी थी जो गद्दी पर बैठा हुआ था और कहा था कि "बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूंगा ॥"

देवी०। वह किसकी तस्वीर थी किसी मर्द या औरत की ?

भूत०। (एक लम्बी सांस लेकर) वह औरत, मर्द, जङ्गल, पहाड़, बस्ती, उजाड़ सभी चीज की तस्वीर थी, मैं क्या बताऊं किस की तस्वीर थी, एक यही बात है जिसे मैं अपने मुंह से नहीं निकाल सकता मगर अब मैं आप से कोई बात न छिपाऊंगा चाहे कुछ ही क्यों न हो। आप यह तो अच्छी तरह जानते ही हैं कि मैं उस पीतल की सन्दूकड़ी से कितना डरता हूं जो नकली बलभद्रसिंह की दी हुई अभी तक तेजसिंह के पास है ॥

देवी०। मैं खूब जानता हूं और उस दिन भी मेरा खयाल उसी सन्दूकड़ी की तरफ चला गया था जब एक नकाबपोश ने दर्बार में खड़े हो कर तुम्हारी तारीफ की थी और तुम्हें मुंह मांगा इनाम देने के लिये कहा था ॥

भूत० । ठीक है, बलभद्रसिंह ने भी मुझे यही कहा था कि "ये नक़ाबपोश तुम्हारे मददगार हैं तुम्हारा भेद ढके रहने के लिये महाराज से वह सन्दूकड़ी तुम्हें दिलाया चाहते हैं ।" मैं भी यही सोच कर प्रसन्न था और चाहता था कि मुकद्दमा फैसल होने के पहिले ही इनाम मांगने का मुझे कोई मौका मिल जाय, मगर इस तस्वीर ने जिसे मैं अभी देख चुका हूं मेरी हिम्मत तोड़ दी और मैं पुनः अपनी ज़िन्दगी से नाउम्मीद होगया ॥

देवी०। तो उस सन्दूकड़ी से और इस तस्वीर से क्या सम्बन्ध?

भूत० । वह सन्दूकड़ी अपने पेट में जिस भेद को छिपाये हुए है उसी भेद को यह तस्वीर प्रगट करती है, इसके अतिरिक्त मैं सोचे हुए था कि अब उसका कोई दावीदार नहीं है मगर अब यह भी मालूम होगया कि उसका दावीदार भी आ पहुंचा और उसी ने यह तस्वीर नक़ाबपोश के आगे पेश की ॥

देवी० । क्या तुम नहीं बता सकते कि उस सन्दूकड़ी और इस तस्वीर में क्या भेद है ?

भूत० । (लम्बी सांस लेकर) अब मैं आप से कोई बात छिपा न रक्खूंगा मगर इतना समझ रखिये कि उस भेद को सुन कर आप अपने ऊपर एक तरद्दुद का बोझ डाल लेंगे ॥

देवी० । जो कुछ होगा सहना ही पड़ेगा और तुम्हारी मदद भी करनी ही पड़ेगी मगर सबके पहिले मैं यह सुना चाहता हूं कि उस भेद से हमारे महाराज को भी कुछ सम्बन्ध है या नहीं ?

भूत० । अगर कुछ सम्बन्ध है भी तो केवल इतना ही कि उस भेद को सुन कर मुझ पर घृणा करेंगे, नहीं तो महाराज से और उस भेद से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, मैंने महाराज के विपक्ष में कोई बुरा काम नहीं किया, जो कुछ बुरा किया है वह अपने और अपने

दुश्मनों के साथ ?

देवी० । जब महाराज से उस भेद को कोई सम्बन्ध ही नहीं है तो मैं हर तरह पर तुम्हारी मदद कर सकता हूं अच्छा तो अब बताओ कि वह कौन सा भेद है ?

भूत० । इस समय न पूछिये, क्योंकि हमलोग विचित्र स्थान में कैद हैं ताज्जुब नहीं कि हम दोनों की बातें कोई किसी जगह पर छिप कर सुनता हो, हां मैदान में निकल चलने पर जरूर कहूंगा ॥

देवी० । अच्छा यह तो बताओ कि उस आदमी की सूरत भी तुमने अच्छी तरह देख ली थी या नहीं, जिसने वह तस्वीर नकाबपोश के आगे पेश की थी ?

भूतनाथ०। हां,उसकी सूरत मैंने बखूबी देखी थी उसे खूब पहिचानता हूं क्योंकि दुनियां में मेरा सबसे बड़ा दुश्मन वही है और उसे अपनी ऐयारी का भी घमण्ड है ॥

देवी० । अगर वह तुम्हारे कब्जे में आय तो ?

भूतनाथ० । मैं जरूर उसे फँसाने बल्कि मार डालने की फिक्र करूंगा । मैं तो उसकी तरफ से बिल्कुल बेफिक्र हो गया था, मुझे इस बात की रत्ती भर उम्मीद न थी कि वह अभी तक जीता है ॥

देवी०। खैर कोई चिन्ता नहीं जैसा होगा देखा जायगा तुम अभी से हतास क्यों हो रहे हो ?

भूत० । अगर वह सन्दूकड़ी मुझे मिल जाती और उसके खुलने की नौबत न आती तो......

देवी० । वह सन्दूकड़ी मैं तुम्हें दिला दूंगा और उसे किसी के सामने खुलने न दूंगा उसकी तरफ से तुम बेफिक्र रहो ॥

भूत० । (मुहब्बत से देवीसिंह का पञ्जा पकड़ के) अगर ऐसा करो तो क्या बात है ॥

देवी० । ऐसा ही होगा । खैर अब यह सोचना चाहिये कि इस समय हमलोगों को क्या करना उचित है । मैं समझता हूं कि सुबह होने के साथ ही हम लोग इस हद्द के बाहर पहुंचा दिये जायंगे ॥

भूत० । मेरा खयाल भी यही है । अगर ऐसा हुआ तो आपकी और मेरी स्त्री के बारे में किसी बात का पता न लगेगा ॥

देवीसिंह और भूतनाथ इस विषय पर बहुत देर तक बातचीत और राय पक्की करते रहे, यहां तक कि सवेरा हो गया और कई नकाबपोश उस कमरे को खोल कर भूतनाथ और देवीसिंह के पास पहुंचे और बाहर चलने के लिये कहा ॥

तीसरा बयान ।

महाराज से जुदा हो कर देवीसिंह और बलभद्रसिंह से जुदा हो कर भूतनाथ दोनों नकाबपोशों का पता लगाने के लिये चले गये । बचा हुआ दिन और तमाम रात तो किसी ने इन दोनों की खोज न की मगर दूसरे दिन सवेरा होने के साथ ही इन दोनों की तलबी हुई और थोड़ी ही देर में जवाब मिला कि उन दोनों का पता नहीं है कि कहां गये और अभी तक क्यों नहीं आये । हमारे महाराज समझ गये कि देवीसिंह की तरह भूतनाथ भी उन्हीं दोनों नकाबपोशों का पता लगाने चला गया, मगर उन दोनों के न लैाटने से एक तरह की चिन्ता पैदा हो गई और लाचार हो कर आज दर्बारेआम का जलसा बन्द रखना पड़ा ॥

दर्बारेआम के बन्द होने की खबर वहां वालों को तो मिल गई मगर वे दोनों नकाबपोश अपने मामूली समय पर आही गये और

उनके आने की इत्तला राजा बीरेन्द्रसिंह से की गई। उस समय राजा बीरेन्द्रसिंह एकान्त में तेजसिंह तथा और भी अपने कई ऐयारों के साथ बैठे हुए देवीसिंह और भूतनाथ के बारे में बातें कर रहे थे। उन्होंने ताज्जुब के साथ नकाबपोशों का आना सुना और उसी जगह हाजिर करने का हुक्म दिया॥

हाजिर हो कर दोनों नकाबपोशों ने बड़े अदब से सलाम किया और आज्ञा पा कर महाराज से थोड़ी दूर पर तेजसिंह के बगल में बैठ गये। इस समय तखलिये का दर्बार था, गिन्ती के मामूली आदमी बैठे हुये थे और राजा बीरेन्द्रसिंह को नकाबपोशों की बातें सुनने का शौक था इस लिये तेजसिंह के बगल ही में बैठने की आज्ञा दी और स्वयम् बातचीत करने लगे॥

बीरेन्द्र०। आज भूतनाथ के न होने से मुकद्दमे की कार्रवाई रोक देनी पड़ी॥

एक नकाबपोश०। (अदब से हाथ जोड़ कर) जी हां मैंने यहां पहुंचने के साथ ही सुना कि "कल से देवीसिंह जी और भूतनाथ का पता नहीं है इसलिये आज दर्बार न होगा।" मगर ताज्जुब की बात है कि भूतनाथ और देवीसिंह जी एक साथ ही कहीं चले गये! मैं तो यही समझता हूं कि भूतनाथ हम लोगों का पता लगाने के लिये निकला है और उसका ऐसा करना कोई ताज्जुब की बात नहीं है मगर देवीसिंहजी बिना मर्जी के चले गये इस बात का ताज्जुब है॥

बीरेन्द्र०। देवीसिंह बिना मर्जी के नहीं गये बल्कि हमसे पूछ के गये हैं॥

नकाबपोश०। तो उन्हें महाराज ने हमलोगों का पीछा करने की आज्ञा क्यों दी? हमलोग तो महाराज के ताबेदार स्वयम् ही अपना भेद कहने के लिये तैयार हैं और शीघ्र ही समय पा कर अपने को

प्रगट करेंहीगे केवल मुकद्दमे की उलझन खोलने और कैदियों को निरुत्तर करने के लिये अपने को अभी छिपाये हैं ॥

तेज० । आप लोगों को शायद यह मालूम नहीं है कि भूतनाथ ने देवीसिंह को अपना दोस्त बना लिया है, जिस समय भूतनाथ के मुकद्दमे का बीज रोपा गया था उसके कई घण्टे पहिले देवीसिंह ने उसका सहायता करने की प्रतिज्ञा की थी क्योंकि वह भूतनाथ की चालाकी, ऐयारी तथा उसके अच्छे कामों से प्रसन्न थे ॥

नकाब०। ठीक है तब ता ऐसा हुआही चाहे, परन्तु कोई चिन्ता नहीं, भूतनाथ वास्तव में अच्छा आदमी है और उसे महाराज की सेवा का उत्साह भी है ॥

तेज० । इसके अतिरिक्त उसने हमारे कई काम भी बड़ी खूबी के साथ किये हैं ॥

नकाब० । ठीक है ॥

तेज० । हां मैं एक बात आप से और पूछना चाहता हूं ?

नकाब० । आज्ञा ॥

तेज०। निःसन्देह भूतनाथ और देवीसिंह आपलोगों का भेद लेने के लिये गये हैं, अस्तु आश्चर्य नहीं कि वे दोनों उस ठिकाने तक पहुंच गये हों जहां आपलोग रहते हैं और आपको उनका कुछ हाल भी मालूम हुआ हो ॥

नकाब०। न तो वे हमलोगों के डेरे तक पहुंचे और न हमलोगों को उनका कुछ हाल ही मालूम है । हमलोगों के विषय में हजारों आदमी बल्कि यों कहना चाहिये कि आजकल यहां जितने इकट्ठे हो रहे हैं सभी आश्चर्य्य करते हैं और इस लिये जब हम लोग यहां आते हैं तो सैकड़ों आदमी चारों तरफ से घेर लेते हैं और जाते हैं तो कोसों तक पीछा करते हैं, इस लिये हमलोगों को भी बहुत घूम

फिर कर लोगों को भुलावा देते हुए अपने डेरे की तरफ जाना पड़ता है ॥

तेज० । तब तो उन दोनों का न लौटना आश्चर्य्य है ॥

नकाब० । वेशक, अच्छा तो आज हमलोग कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का कुछ हाल ही महाराज को सुनाते जायँ । आखिर आ गये हैं तो कुछ काम ही करना चाहिये ॥

बीरेन्द्र० । (ताज्जुब से) उनका कौन सा हाल ?

नकाबपोश० । वही तिलिस्म के अन्दर का हाल । जब तक राजा गोपालसिंह जी वहां थे तब तक का हाल तो उनकी जुबानी आपने सुना ही होगा मगर उसके बाद क्या हुआ और तिलिस्म में उन दोनों भाइयों ने क्या क्या किया सो न सुना होगा । वह सब हाल हमलोग सुना सकते हैं । यदि आज्ञा हो तो......

बीरेन्द्र० । (ज्यादे ताज्जुब के साथ) कब तक का हाल आप सुना सकते हैं ?

नकाब० । आज तक का हाल, बल्कि आज के बाद भी रोज रोज का हाल तब तक बराबर सुना सकते हैं जब तक उनके यहां आने में दो घण्टे की भी देर हो ॥

बीरेन्द्र० । हम बड़ी प्रसन्नता से उनका हाल सुनने के लिये तैयार हैं बल्कि हम चाहते हैं कि गोपालसिंह और अपने पिता जी के सामने वह हाल सुनें ॥

नकाब० । जो आज्ञा, मैं सुनाने के लिये तैयार हूं ॥

बीरेन्द्र० । मगर वह सब हाल आपलोगों को कैसे मालूम हुआ, होता है और होगा ?

नकाब० । (हाथ जोड़ कर) इसका जवाब देने के लिये मैं अभी तैयार नहीं हूं यदि महाराज मजबूर करेंगे तो लाचारी है क्योंकि

हम लोग महाराज को अप्रसन्न नहीं किया चाहते ॥

बीरेन्द्र०। (मुस्कुरा कर) हम तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई काम ही करना नहीं चाहते ॥

इतना कह के बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की तरफ देखा तेजसिंह स्वयम् उठ कर महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास गये और थोड़ी ही देर में लौट आकर बोले, "चलिये महाराज बैठे हैं और आप लोगों का इन्तजार कर रहे हैं।" सुनते ही सब कोई उठ खड़े हुए और राजा सुरेन्द्रसिंह की तरफ चले। उसी समय तेजसिंह ने एक ऐयार राजा गोपालसिंह के पास भेज दिया ॥

चौथा बयान।

महाराज सुरेन्द्रसिंह का दर्बारेखास लगा हुआ है, जीतसिंह बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, गोपालसिंह और भैरोसिंह वगैरह अपने खास ऐयारों के अतिरिक्त कोई गैर आदमी वहां दिखाई नहीं देता। महाराज की आज्ञानुसार एक नकाबपोश ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल इस तरह कहना शुरू कियाः—

जब तक राजा गोपालसिंह जी वहां रहे तब तक का हाल तो इन्होंने आप से कहा ही होगा। मगर अब मैं उसके बाद का हाल बयान करूंगा ॥

राजा गोपालसिंह से बिदा हो दोनों कुमार उसी बावली पर पहुंचे और जब राजा गोपालसिंह सभों को लिये हुए वहां से चले गये उस समय सवेरा हो चुका था अतएव दोनों भाई जरूरी काम और प्रातः कृत्य से छुट्टी पाकर बावली के अन्दर उतरे। निचली सीढ़ी पर पहुंच कर आनन्दसिंह ने अपने कुल कपड़े उतार दिये और वह केवल

लंगोटा पहिरे हुए जल के अन्दर कूद पड़े और बीचोबीच में जाकर एक गोता लगाया। वहां जल के अन्दर एक छोटा सा चबूतरा था और उस चबूतरे के बीचोबीच लोहे की मोटी कड़ी लगी हुई थी। जल में जा कर उसी कड़ी को आनन्दसिंह ने उखाड़ लिया और इसके बाद जल के बाहर चले आये। बदन पोंछ कर कपड़े पहिर लिये, लंगोटा सूखने के लिये फैला दिया और दोनों भाई सीढ़ी पर बैठ कर जल के सूखने का इन्तजार करने लगे॥

जिस समय आनन्दसिंह ने जल में जाकर वह लोहे की कड़ी निकाल ली उसी समय से बावली का जल तेजी के साथ घटने लगा, यहां तक कि दो घंटे के अन्दर ही बावली खाली हो गई और सिवाय कीचड़ के उसमें कुछ भी न रहा और वह कीचड़ भी मालूम होता था कि बहुत जल्द सूख जायगा क्योंकि नीचे की जमीन पक्की और सङ्गीन बनी हुई थी और केवल नाममात्र की मिट्टी या कीचड़ का हिस्सा उसके ऊपर था इसके अतिरिक्त किसी सुरङ्ग या नाले की राह निकल जाते हुए पानी ने भी बहुत सफाई कर दी थी॥

बावली के नीचेवाली चारों तरफ की अन्तिम सीढ़ी लगभग तीन हाथ के ऊंची थी और उसकी दीवार में चारो तरफ चार दर्वाजों के निशान बने हुए थे जिनमें से पूरब तरफ वाले निशान को दोनों कुमारों ने तिलिस्मी खंजर से साफ किया और जब उसके आगे वाले पत्थरों को उखाड़ कर अलग किया तो अन्दर जाने के लिये रास्ता दिखाई दिया जिसके बिषय में कह सकते हैं कि वह एक सुरङ्ग का मुहाना था और इस ढङ्ग से बन्द किया गया था जैसा कि ऊपर बयान कर चुके हैं॥

इसी सुरङ्ग के अन्दर कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को जाना था मगर पहर भर तक उन्होंने इस खयाल से उसके अन्दर

जाना मैाकूफ रक्खा कि उस सुरङ्ग के अन्दर से पुरानी हवा निकल कर ताजी हवा भर जाय । क्योंकि यह बात उन्हें पहिले ही से मालूम थी की दर्वाजा खुलने के बाद थोड़े ही देर में उसके अन्दर की हवा साफ हो जायगी ॥

पहर भर दिन बाकी था जब दोनें। कुमार उस सुरङ्ग के अन्दर घुसे और तिलिस्मी खजर की रोशनी करते हुए आधे घंटे तक बराबर चले गये । इस सुरङ्ग में कई जगह ऐसे सूराख बने हुए थे जिनमें से रोशनी तो नहीं मगर हवा तेजी के साथ आ रही थी और यही सबब था कि उसके अन्दर की हवा थोड़ी ही देर में साफ हो गई ॥

आप सुन चुके हेंागे कि तिलिस्मी बाग के चैाथे दर्जे में (जहां के देवमन्दिर में दोनो कुमार कई दिन तक रह चुके हैं) देवमन्दिर के अतिरिक्त चारो तरफ चार मकान बने हुए थे * और उनमें से उत्तर तरफ वाला मकान गोलाकार स्याह पत्थर का बना हुआ था और उसके चारें तरफ चर्खियां और तरह २ के कल पुर्जे लगे हुए थे । अस्तु उस सुरङ्ग का दूसरा मुहाना उसी मकान के अन्दर था इस लिये सुरङ्ग के बाहर हो कर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने अपने को उसी मकान में पाया । इस मकान में चारो तरफ गोलाकार दालान के अतिरिक्त कोई कोठड़ी या कमरा न था । बीच में एक सङ्गमर्मर का चबूतरा था और उस पर स्याह रङ्ग का एक मोटा आदमी बैठा हुआ था जो जांच करने पर मालूम हुआ कि लोहे का है । उसी आदमी के सामने की तरफ दालान में सुरङ्ग का वह मुहाना था जिस में से दोनें। कुमार निकले थे । उसी सुरङ्ग के बगल में एक और सुरङ्ग थी और उसके अन्दर उतरने के लिये सीढ़ियां बनी हुई थीं । चारों तरफ देखभाल करने के बाद दोनें। कुमार उसी सुरङ्ग में उतर गए और

* देखो हिस्सा ८—बयान १ ॥

आठ दस सीढ़ी नीचे उतर जाने के बाद देखा कि सुरङ्ग खुलासी तथा बहुत दूर तक चली गई है। अस्तु लगभग सौ कदम के दोनों कुमार बेखटके चले गए और इसके बाद एक छोटे से बाग में पहुंचे जिसमें खूबसूरत पेड़ पत्तों का तो कहीं नाम निशान भी न था, हां जङ्गली बैर मकोय तथा केले के पेड़ों की कमी न थी। दोनों कुमार सोचे हुए थे कि यहां भी और जगहों की तरह हम सन्नाटा पावेंगे अर्थात किसी आदमी की सूरत दिखाई न देगी, मगर ऐसा न था। वहां कई अदमियों को इधर उधर घूमते देख दोनों कुमारों को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और गौर से उन आदमियों की तरफ देखने लगे जो बिल्कुल जङ्गली और भयानक मालूम पड़ते थे॥

वे आदमी गिनती में पांच थे और उन लोगों ने भी दोनों कुमारों को देख कर उतनाही ताज्जुब किया जितना कुमार ने उनको देख कर। वे लोग इकट्ठे होकर कुमार के पास चले आये और उन में से एक ने आगे बढ़ कर कुमार से पूछा, "क्या आप दोनों के साथ भी वही सलूक किया गया जो हमलोगों के साथ किया गया था? मगर ताज्जुब है कि आप के कपड़े और हरबे छीने नहीं गए और आप लोगों के चेहरे पर भी किसी तरह का रंज मालूम नहीं पड़ता?"

इन्द्रजीत०। तुम लोगों के साथ क्या सलूक किया गया था और तुम लोग कौन हो?

आदमी०। हम लोग कौन हैं इसका जवाब देना सहज नहीं है और न आप थोड़ी देर में इनका जवाब सुन सकते हैं मगर आप अपने बारे में सहज ही बता सकते हैं कि किस कसूर पर यहां पहुंचाये गये?

इन्द्रजीत०। हम दोनों भाई तिलिस्म को तोड़ते और कई कैदियों को छुड़ाते हुए अपनी खुशी से यहां तक आये हैं और अगर तुम

लोग कैदी हो तो समझ रक्खो कि अब इस कैद की अवधि पूरी हो गई और बहुत जल्द अपने को स्वतन्त्र बिचरते हुए देखोगे ॥

आदमी० । हमें कैसे विश्वास हो कि जो कुछ आप कह रहे हैं वह सच है ?

इन्द्र० । अब नहीं तो स्वयम् थोड़ी देर में विश्वास हो जायगा ॥

इतना कह कर कुमार आगे की तरफ बढ़े और वे लोग घेरे हुए साथ साथ जाने लगे । इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को विश्वास हो गया कि सर्यू की तरह यह लोग भी इस तिलिस्म में कैद किये गये हैं और दारोगा या मायारानी ने इनके साथ यह सलूक किया है । वास्तव में बात भी ऐसी ही थी ॥

इन आदमियों की उम्र यद्यपि बहुत ज्यादे न थी मगर रञ्ज गम और तकलीफ की बदौलत सूख कर कांटा हो गये थे । सर और दाढ़ी के बालों ने बढ़ और उलझ कर उनकी सूरत डरावनी कर दी थी और चेहरे की जर्दी तथा गड़हे में घुसी हुई आंखें उनकी बुरी अवस्था का विज्ञापन दे रही थीं ॥

इस बाग में पानी का एक चश्मा भी था और वही इन कैदियों की जिन्दगी का सहारा था मगर इस बात का पता नहीं लग सकता था कि पानी कहां से आता है और निकल कर कहां चला जाता है ! इसी नहर की बदौलत यहां की जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा तर हो रहा था और इस सबब से उन कैदियों को केला वगैरह खाकर अपनी जान बचाये रहने का मौका मिलता था ॥

बाग के बीचोबीच में बीस या पचीस हाथ का ऊंचा एक बुर्ज था और उस बुर्ज के चारो तरफ स्याह पत्थर का कमर बराबर ऊंचा चबूतरा बना हुआ था मगर इस बात का पता नहीं लगता था कि इस बुर्ज पर चढ़ने के लिये कोई रास्ता है या नहीं । अगर है तो कहां

है ? दोनों कुमार उस चबूतरे पर निधड़क जाकर बैठ गये और तब इन्द्रजीतसिंह ने उन कैदियों की तरफ देखके कहा, "कहो अब तुम्हें विश्वास हुआ कि जो कुछ हमने कहा था वह सच है ?"

आदमी०। जी हां अब हम लोगों को विश्वास हो गया क्योंकि हम लोगों ने इस चबूतरे को कई दफे आजमाकर देख लिया है इस पर बैठना तो दूर रहे इसे छूने के साथ ही बेहोश हो जाते थे मगर ताज्जुब है कि आप पर इसका असर कुछ भी नहीं होता॥

इन्द्रजीत०। इस समय तुम लोग भी इस चबूतरे पर बैठ सकते हो जब तक हम बैठे हैं॥

एक आदमी०। (चबूतरा छूने की नीयत से बढ़ता हुआ) क्या ऐसा हो सकता है ?

इन्द्रजीत०। आजमा के देख लो॥

उस आदमी ने चबूतरा छूआ मगर उस पर कुछ बुरा असर न हुआ और तब कुमार की आज्ञा पा चबूतरे पर बैठ गया। उसकी देखा देखी सभी आदमी उस चबूतरे पर बैठ गये और जब किसी तरह का बुरा असर होते न देखा तब हाथ जोड़ कर कुमार से बोले, "अब हम लोगों को आप की बात में किसी तरह का शक न रहा, आशा है कि आप कृपा कर अपना परिचय देंगे॥"

जब कुमार इन्द्रजीतसिंह ने अपना परिचय दिया तब सब के सब उनके पैरों पर गिर पड़े और डबडबाई हुई आंखों से उनकी तरफ देख के बोले "दोहाई है महाराज की ! हमारे मामले पर विचार हो कर दुष्टों को दण्ड मिलना चाहिये॥"

इतना कह कर नकाबपोश चुप होगया और कुछ सोचने लगा। इसी समय बीरेन्द्रसिंह ने उससे कहा, "मालूम होता है कि उस चबूतरे में बिजली का असर था और इस सबब से उसे कोई छू नहीं

सकता था मगर दोनों लड़कों के पास बिजली वाला तिलिस्मी खञ्जर मौजूद था और उसके जोड़ की अँगूठी भी थी इसलिये तबतक के लिये उसका असर जाता रहा जब तक दोनों लड़के उस पर बैठे रहे॥

नकाब०। (हाथ जोड़ कर) जी बेशक यही बात है॥

बीरेन्द्र०। अच्छा तब क्या हुआ?

नकाब०। इसके बाद कुमार ने उन सभों का हाल पूछा और उन सभों ने रो रो कर अपना हाल बयान किया॥

बीरेन्द्र०। उन लोगों ने अपना हाल क्या कहा?

नकाब०। मैं यही सोच रहा था कि उन लोगों ने जो कुछ अपना हाल बयान किया था वह मैं इस समय कहूं या न कहूं॥

तेज०। क्या उन लोगों का हाल कहने में कोई हर्ज है? आखिर हम लोगों को मालूम होहीगा॥

नकाब०। जरूर मालूम होगा और मेरेही जुबानी मालूम होगा, मैं जो कहने से रुकता हूं वह केवल एकही दो दिन के लिये हमेशा के लिये नहीं॥

जीत०। अगर यही बात है तो हमें दो एक दिन के लिये कोई जल्दी भी नहीं है॥

नकाब०। (हाथ जोड़ कर) अस्तु अब आज्ञा हो तो हम लोग डेरे पर जावें कल पुनः सभा में उपस्थित होकर, यदि देवीसिंह और भूतनाथ न आये तो कुमार का हाल सुनावेंगे॥

सुरेन्द्र०। (इशारे से जाने की आज्ञा देकर) तुम लोगों ने इन्द्र-जीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल सुना कर अपने विषय में हम लोगों का आश्चर्य्य और भी बढ़ा दिया॥

दोनों नकाबपोश उठ खड़े हुए और अदब के साथ सलाम कर के वहां से रवाना हुए॥

पांचवां बयान।

देवीसिंह और भूतनाथ को यह इच्छा न थी कि आज सवेरा होते ही हम लोग यहां से चले आयँ और अपनी स्त्री के विषय में किसी तरह की जांच न करें, मगर लाचारी थी, क्योंकि नकाबपोश की इच्छा के विरुद्ध वे यहां रह नहीं सकते थे। साथ ही इसके मालिक मकान की मेहरबानी और मीठे बर्ताव का भी उन्हें वैसाही खयाल था जैसा कि इस मजबूरी अवस्था में होना चाहिये। सवेरा होने पर कई नकाबपोश उनके सामने आये और उन्हें बाहर निकलने के लिये कहा तो देवीसिंह और भूतनाथ उठ खड़े हुए और कमरे के बाहर निकल उनके पीछे पीछे रवाना हुए। जब मकान के नीचे उतर कर मैदान में पहुंचे तो देवीसिंह का इशारा पाकर भूतनाथ ने एक नकाबपोश से कहा "हम तुम्हारे मालिक से एक दफे और मिला चाहते हैं॥"

नकाब०। इस समय उनसे मुलाकात नहीं हो सकती॥

भूत०। अगर घण्टे या दो घण्टे में भी मुलाकात हो सके तो हम लोग ठहर जायँ॥

नकाब०। नहीं अब मुलाकात होही नहीं सकती, उन्होंने रातही को जो हुक्म दे रक्खा था हम लोग उसको पूरा करते हैं॥

भूत०। हम लोगों को उनसे कोई जरूरी बात पूछनी हो तो?

नकाब०। एक चीठी लिख कर रख जाओ उसका जवाब तुम्हारे डेरे पर पहुंच जायगा॥

भूत०। अच्छा यह बताओ कि यहां हम लोगों ने गिरफ्तार होने के पहिले जिन दो औरतों को देखा था उनसे मुलाकात हो सकती है या नहीं?

नकाब०। नहीं, क्या उन लोगों को आपने खानगी समझ रक्खा है ?

दूसरा नकाब० । इन सब फजूल बातों से कोई मतलब नहीं और न हम लोगों को इतनी फुरसत ही है, आप लोग नाहक हम लोगों को रञ्ज करते हैं और हमारे मालिक की उस मेहरबानी को एकदम भूले जाते हैं जिसकी बदौलत आपलोग कैदखाने की हवा खाने से बच गये ॥

भूत० । (कुछ क्रोध भरी आवाज में) अगर हमलोग न जायं तो तुम क्या करोगे ?

नकाब० । (रञ्ज के साथ) जबरदस्ती निकाल बाहर करेंगे, आप लोग अपने तिलिस्मी खञ्जर के भरोसे न भूलियेगा ऐसे ऐसे तुच्छ खञ्जर का काम हम लोग अपने नाखून से लेते हैं । बस सीधी तरह कदम उठाइये और इस जमीन को अपनी मिलकियत न समझिये ॥

नकाबपोश की बातें यद्यपि भूतनाथ और देवीसिंह को बुरी मालूम हुईं मगर बहुतसी बातों को सोच विचार कर चुप हो रहे और तकरार करना उचित न जाना । सब नकाबपोशों ने मिल कर उन्हें खोह के बाहर किया और लौटती समय भूतनाथ और देवीसिंह से एक नकाबपोश ने कहा, "बस अब इसके अन्दर आने का खयाल न कीजियेगा, कल दरवाजा खुला रह जाने के कारण आप लोग चले आये मगर अब ऐसा मौका भी न मिलेगा ॥"

नकाबपोशों के चले जाने बाद भूतनाथ और देवीसिंह वहां से रवाना हुए और कुछ दूर जा कर जङ्गल में एक घने पेड़ की छाया देख कर बैठ गये और यों बातचीत करने लगे ॥

भूत० । कहिये क्या इरादा है ?

देवी० । बात तो यह है कि हम लोग नकाबपोशों के घर जाकर बेइज्जत हो गये । चाहे वे दोनों नकाबपोश कुछ ही कहें मगर मुझे

निश्चय है कि दर्बार में आने वाले दोनों नकाबपोश यही हैं जिनके हम मेहमान हुए थे। मुझे तो शर्म आवेगी जब दर्बार में मैं उन्हें अपने सामने देखूंगा। इसके अतिरिक्त यदि यहां से जाकर अपनी स्त्री को घर में न देखूंगा तो मेरे आश्चर्य रंज और क्रोध की कोई हद्द न रहेगी॥

भूत०। यद्यपि मैं एक तौर पर बेहया होगया हूं परन्तु आज की बेइज्जती दिल को फाड़े डालती है, बहुत ऐयारी की मगर ऐसी जक कभी नहीं उठाई, मेरी तो यहां से टलने की इच्छा नहीं होती, यही जी में आता है कि इनमें से एक न एक को अवश्य पकड़ना चाहिये और अपनी स्त्री के विषय में तो इतना ही कहना काफी है कि यदि आपने घर जाकर अपनी स्त्री को पा लिया तो मैं भी अपनी स्त्री की तरफ से बेफिक्र हो जाऊंगा॥

देवी०। करने के लिये तो हमलोग बहुत कुछ कर सकते हैं मगर जब मैं उनके बर्ताव पर ध्यान देता हूं तब लाचारी आकर पल्ला पकड़ती है, एक तो जब उन्होंने हमलोगों को गिरफ्तार किया था तो हर तरह का सलूक कर सकते थे, परन्तु किसी तरह की बुराई हमलोगों के साथ न की। दूसरे वे लोग स्वयं हमारे महाराज के दर्बार में हाजिर हुआ करते हैं और समय पर अपने को प्रगट कर देने का वादा भी किया है ऐसी अवस्था में उनके साथ खोटा बर्ताव करते डर लगता है, कहीं ऐसा न हो कि वे लोग रंज होजायं और दर्बार में आना छोड़ दें, ऐसा हुआ तो बड़ी बदनामी होगी और कैदियों का मामला भी आज कल के ढंग से अधूरा रह जायगा॥

भूतनाथ०। बात तो ठीक कहते हैं परन्तु ....

देवी०। नहीं अब इस समय तरह देना ही उचित है जिस तरह मैं अपनी बदनामी का खयाल करता हूं उसी तरह तुमको भी तो खयाल होगा॥

भूतनाथ० । जरूर !! हां यदि उन नकाबपोशों का कोई अकेला आदमी कब्जे में आ जाय तो शायद काम निकल जाय और किसी को इस बात की खबर भी न हो ॥

इस तरह की बातें होही रही थीं कि उनके कानों में घोड़े के टापों की आवाज आई और दोनों ने घूम कर पीछे की तरफ देखा । एक नकाबपोश सवार आता हुआ दिखाई पड़ा जिसपर निगाह पड़ते ही भूतनाथ ने देवीसिह से कहा, "यह भी जरूर उन्हीं लोगों में से है, भला एक दफे और तो कोशिश कीजिये और जिस तरह हो सके इसे गिरफ्तार कीजिये फिर जैसा होगा देखा जायगा बस अब इस समय सोचने बिचारने का मौका नहीं है ॥"

वह सवार बिल्कुल बेफिक्री के साथ धीरे २ आ रहा था अस्तु ये दोनों भी उसके रास्ते के दोनों तरफ पेड़ों की आड़ देकर उसे गिरफ्तार करने की नीयत से खड़े होगये । जब वह नकाबपोश सवार उन दोनों की सीध पर आया और आगे बढ़ा ही चाहता था कि भूतनाथ के हाथ की फेकी हुई कमन्द उसके घोड़े के गले में जा पड़ी, घोड़ा भड़क कर उछलने कूदने लगा और तब तक दोनों ने लपट कर घोड़े की लगाम थाम ली । उस सवार ने खञ्जर खैंच कर वार करना चाहा मगर कुछ सोच कर रुक गया और साथही इसके उन दोनों को भी उसने लड़ने के लिये तैयार देखा ॥

नकाब० । (भूतनाथ से) तुम लोग मुझे व्यर्थ क्यों रोकते हो ? मुझसे क्या चाहते हो ?

भूत० । हम लोग तुम्हें किसी तरह की तकलीफ देना नहीं चाहते; थोड़ी देर के लिये घोड़े से नीचे उतरो और हमारी दो चार बातों का जवाब देकर जहां जी में आवे चले जाओ ॥

नकाब० । बहुत अच्छा मगर नकाब हटाने के लिये जिद्द न करना ॥

इतना कह कर नकाबपोश घोड़े के नीचे उतर पड़ा और भूतनाथ ने उससे कहा, "तुम्हें अपने चेहरे से नकाब हटाना ही पड़ेगा और यह काम सब के पहिले होगा॥"

यह कहते ही भूतनाथ ने अपने हाथ से उसके चेहरे की नकाब उलट दी और उसके चेहरे पर निगाह पड़तेही चौंक कर बोल उठा, "यह तो मेरी स्त्री है जो नकाबपोशों के घर में दिखाई पड़ी थी!!"

छठवां बयान।

अपनी स्त्री की सूरत देख कर जितना ताज्जुब भूतनाथ को हुआ उतना ही आश्चर्य देवीसिंह को भी हुआ। यह बिचार कर रंज, गम और गुस्से से देवीसिंह का सिर घूमने लगा कि इसी तरह उसकी स्त्री भी अवश्य नकाबपोशों के यहां होगी और हमलोगों को उस की सूरत देखने में किसी तरह का भ्रम नहीं हुआ। यदि यह सोचा जाय कि जिन दोनों औरतों को हमलोगों ने देखा था वे वास्तव में हमलोगों की औरतें न थीं बल्कि वे औरतों की सूरत में दो ऐयार थे, तो इसका निश्चय भी इसी समय हो सकता है। यह औरत सामने मौजूद ही है देख लिया जायगा कि ऐयार है या वास्तव में भूतनाथ की स्त्री॥

उस स्त्री ने भूतनाथ के मुंह से यह सुन कर कि "यह तो मेरी स्त्री है..." क्रोध भरी आंखों से भूतनाथ की तरफ देखा और कहा, "एक तो तुमने जबर्दस्ती मेरी नकाब उलट दी, दूसरे बिना कुछ सोचे बिचारे आवारा लोगों की तरह यह कह दिया कि "यह तो मेरी स्त्री है।" क्या सभ्यता इसी को कहते हैं? (देवीसिंह की तरफ देखके) आप ऐसे सज्जन और प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार हो कर क्या इस बात को पसन्द करते हैं?"

देवी० । अगर तुम भूतनाथ की स्त्री नहीं हो तो मैं उस बर्ताव को बहुत बुरा समझता हूं जो भूतनाथ ने तुम्हारे साथ किया है ॥

औरत० । (भूतनाथ से) क्यों साहब ! आपने मेरी ऐसी बेइज्जती क्यों की ? अगर मेरा मालिक या कोई वारिस इस समय यहां होता तो अपने दिल में क्या कहता ?

भूत० । (ताज्जुब से उसका मुंह देखता हुआ) क्या मैं भ्रम में पड़ा हूं ? या मेरी आंखे मेरे साथ दगा करती हैं ?

औरत० । सो तो आप ही जानें, क्योंकि दिमाग आपका है और आंखें आपकी हैं, हां इतना मुझे अवश्य कहना पड़ेगा कि आप अपनी असभ्यता का परिचय दे कर पुरानी बदनामी को चरितार्थ करते हैं । कौन सी बात मुझमें ऐसी देखो जिससे इतना कहने का साहस हुआ ?

भूत० । मालूम होता है कि तू कोई ऐयार है और किसी दूसरे ने तेरी सूरत मेरी स्त्री के ढङ्ग को बनाई है जिसे तूने कभी देखा नहीं ॥

भूतनाथ ने उस औरत की बातों का जवाब तो दिया मगर वास्तव में बहुत घबराया हुआ था । अपनी स्त्री की ढिठाई और चपलता पर उसे तरह २ के शक होने लगे और वह बड़ी बेचैनी के साथ सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये, इसी बीच में स्त्री ने भूतनाथ की बात का यों जवाब दिया :—

स्त्री० । यों तो आप जिस तरह चाहें सोच समझ कर अपनी तबीयत खुश कर लें मगर इस बात को खूब समझ रक्खें कि मैं लावारिस नहीं हूं और जो कुछ मेरे साथ आप बेअदबी का बर्ताव करेंगे उसका बदला भी अवश्य पावेंगे । साथ ही इस बात को भी समझ लें कि आपके इस कहने पर कि "तू कोई ऐयार है" मैं आपके सामने अपना चेहरा धोने की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकती ॥

भूत०। मगर अफसोस कि मैं बिना जांच किये तुम्हें छोड़ भी नहीं सकता !!

स्त्री०। (देवीसिंह की तरफ देख के) बहादुरी तो तब थी जब आप लोग किसी मर्द के साथ इस ढिठाई और बेअदबी का बर्ताव करते एक कमजोर औरत को इस तरह मजबूर करके फजीहत करना सच्चे ऐयार और बहादुरों का काम नहीं है, इस जगह अगर मेरा कोई होता तो यह दुःख क्यों भोगना पड़ता! (यह कहकर वह औरत आंसू बहाने लगी) ॥

उस औरत की बातचीत कुछ ऐसे ढङ्ग की थी कि सुनने वालों को उस पर दया आ सकती थी और यही मालूम होता था कि यह जो कुछ कह रही है उसमें झूठ का लेश भी नहीं है यहां तक कि स्वयं भूतनाथ को उसकी बातों पर सहम जाना पड़ा और वह ताज्जुब के साथ उस औरत का मुंह देखने लगा, खास करके इस खयाल से भी कि देखें आंसू बहने के सबब उसके चेहरे का रङ्ग कुछ बदलता है या नहीं। देवीसिंह तो उसकी बातों से बहुतही हैरान हुए और उनके जी में रह रह के यह बात पैदा होने लगी कि भूतनाथ इसके पहिचानने में धोखा खागया वास्तव में यह भूतनाथ की स्त्री नहीं है, अक्सर लोगों ने एक रङ्ग रूप के दो आदमी देखे हैं ताज्जुब नहीं कि यहां भी वैसाही मामला आ पड़ा हो ॥

देवी०। (स्त्री से) तो तू इस भूतनाथ की स्त्री नहीं है?

स्त्री०। जी नहीं ॥

देवी०। आखिर इसका फैसला क्योंकर हो ॥

स्त्री०। आप लोग जरा तकलीफ करके मेरे घर तक चले चलें, वहां मेरे बच्चों को देखने और मेरे मालिक से बातचीत करने पर आप को मालूम हो जायगा कि मेरा कहना सच है या झूठ ॥

देवी० । (औरत की बात पसन्द करके) तुम्हारा घर यहां से कितनी दूर है ?

स्त्री० । (हाथ का इशारा करके) इसी तरफ है यहां से थोड़ी दूर पर । इन घने पेड़ों को पार होनेही से आपको वह झोंपड़ी दिखाई देगी जिसमें आजकल हमलोग रहते हैं ॥

देवी०। क्या तुम झोंपड़ी में रहती हो ? मगर तुम्हारी सूरत शक्ल तो किसी झोपड़ी में रहने योग्य नहीं है !!

स्त्री०। जी मेरे दो लड़के बीमार हैं उनकी तन्दुरुस्ती का खयाल करके हवा पानी बदलने की नीयत से आजकल हम लोग यहां आ टिके हैं । (हाथ जोड़ कर) आप कृपा कर शीघ्र उठिये और मेरे डेरे पर चलकर इस बखेड़े को तै कीजिये, बिलम्ब होने से मैं मुफ्त में सताई जाऊंगी ॥

देवी० । (भूतनाथ से) क्या हर्ज है अगर इसके डेरे पर चलकर शक मिटा लिया जाय ?

भूत०। जो कुछ आपकी राय हो मैं करने को तैयार हूं मगर यह तो मुझे अजीब ढङ्ग से अन्धा बना रही है !!

देवी० । अच्छा फिर उठो अब देर करना उचित नहीं है ॥

उस औरत की अनूठी बातचीत ने इन दोनों को इस बात पर मजबूर किया कि वे दोनों उसके साथ २ डेरे तक या जहां वह ले जाय चुपचाप चले जायं और देखें कि जो कुछ वह कहती है कहां तक सच है । आखिर ऐसा ही हुआ ॥

इशारा पाते ही औरत उठ खड़ी हुई । देवीसिंह और भूतनाथ उसके पीछे २ रवाना हुए । उस औरत को घोड़े पर सवार होने की आज्ञा न मिली इसलिये वह घोड़े की लगाम थामे हुए धीरे २ इन दोनों के साथ चली ॥

लगभग आध कोस के गये होंगे कि दूर से एक छोटासा कच्चा मकान दिखाई पड़ा जिसे एक तौर पर छोटी झोंपड़ी ही कहना उचित है। इस मकान के ऊपर खपड़े की जगह केवल पत्ते ही से छाया हुआ था॥

जब वे लोग झोंपड़ी के दर्वाजे पर पहुंचे तब उस औरत ने अपने घोड़े को खूंटे के साथ बांध कर थोड़ी सी घास उसके आगे डाल दी जो उसी जगह एक पेड़ के नीचे पड़ी हुई थी और मालूम होता था कि रोज इसी जगह घोड़ा बंधा करता है। इसके बाद उसने देवीसिंह और भूतनाथ से कहा, "आप लोग जरा सा इसी जगह ठहर जायं मैं अन्दर जाकर आप लोगों के लिये चारपाई ले आती हूं और अपने मालिक तथा लड़कों को भी बुला लाती हूं॥"

देवीसिंह और भूतनाथ ने इस बात को कबूल किया और कहा, "क्या हर्ज है जाओ मगर जल्द आना क्योंकि हमलोग ज्यादे देर तक यहां नहीं ठहर सकते॥"

वह औरत मकान के अन्दर चली गई और वे दोनों देर तक बाहर खड़े रह कर उसका इन्तजार करते रहे। यहां तक कि घण्टे भर से ज्यादे बीत गया और वह औरत मकान के बाहर न निकली। आखिर भूतनाथ ने पुकारना और चिल्लाना शुरू किया मगर इसका भी कोई नतीजा न निकला अर्थात् किसी ने भी उसे किसी तरह पर जवाब न दिया, तब लाचार होकर वे दोनों मकान के अन्दर घुस गये मगर फिर भी किसी आदमी की यहां तक कि उस औरत की भी सूरत दिखाई न पड़ी। इस छोटीसी झोंपड़ी में किसी को ढूंढ़ना वा पता लगाना कौन कठिन था अस्तु बित्ता बित्ता भर जमीन देख डाली मगर सिवाय एक सुरङ्ग के और कुछ भी दिखाई न पड़ा, न तो उस मकान में किसी तरह का असबाबही था और न चारपाई, बिछावन,

कपड़ा लत्ता या अन्न इत्यादि ही दिखाई पड़ा, अस्तु लाचार होकर भूतनाथ ने कहा, "बस बस हम लोगों को उल्लू बना कर इस सुरङ्ग की राह से निकल गई !!"

बेवकूफ़ बना कर इस तरह उस औरत के निकल जाने से दोनों ऐयारों को बड़ाही अफसोस हुआ और भूतनाथ ने सुरङ्ग के अन्दर घुस कर उस औरत के ढूंढ़ने का इरादा किया । पहिले तो इस बात का खयाल हुआ कि कहीं उस सुरङ्ग में दो चार आदमी घुस कर बैठे न हों जो हम लोगों पर बेमैाके वार करें, मगर जब अपने तिलिस्मी खञ्जर का ध्यान आया तो यह सब खयाल जाता रहा और बेफिक्री के साथ हाथ में तिलिस्मी खञ्जर लिये हुए भूतनाथ उस सुरङ्ग के अन्दर घुसा, पीछे पीछे देवीसिंह ने भी उसके अन्दर पैर रक्खा ॥

यह सुरङ्ग लगभग पांच सैा कदम के लांबी होगी । इसका दूसरा सिरा घने जङ्गल में पेड़ों के झुरमुट के अन्दर निकला हुआ था । देवीसिंह और भूतनाथ भी सुरङ्ग के अन्दर ही अन्दर वहां तक चले गये और इन्हें विश्वास हो गया कि अब उस औरत का पता किसी तरह नहीं लग सकता ॥

इस समय इन दोनों के दिल की क्या कैफियत थी सो वेही जानते होंगे । अस्तु लाचार होकर देवीसिंह ने घर लैाट चलने का विचार किया मगर भूतनाथ ने इस बात को स्वीकार न करके कहा, "इस तरह तकलीफ उठाने और बेइज्जत होने पर भी बिना कुछ काम किये घर लैाट चलना मेरे खयाल से तो उचित नहीं है ॥"

देवी० । आखिर फिर कियाही क्या जायगा ? मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि कई दिनों तक बेफिक्री के साथ इन लोगों का पीछा करूं । उधर दर्बार की जोकुछ कैफियत है तुम जानते हो ! ऐसी अवस्था में मालिक की प्रसन्नता का खयाल न करके दूसरी तरफ एक

साधारण काम में उलझे रहना मेरे लिये उचित नहीं है॥

भूत०। आपका कहना ठीक है मगर इस समय मेरी तबीयत का क्या हाल है सो भी आप अच्छी तरह समझते होंगे॥

देवी०। मेरे खयाल से तो तुम्हारे लिये कोई ज्यादे तरद्दुद की बात नहीं है। इसके अतिरिक्त घर लैाट चलने पर मैं अपनी स्त्री को देखूंगा अगर वह मिल गई तो तुम भी अपनी स्त्री की तरफ से बेफिक्र हो जाओगे॥

भूत०। अगर आप की स्त्री घर पर मिल जाय तौ भी मेरे दिल का खुटका न जायगा॥

देवी०। अपनी स्त्री का हाल चाल लेने के लिये तुम भी अपने आदमियों को भेज सकते हो॥

भूत०। यह सब कुछ है मगर क्या करूं इस समय मेरे पेट में अजब तरह की खिचड़ी पक रही है और क्रोध क्षण क्षण में बढ़ाही चला आता है॥

देवी०। अगर ऐसाही है तो जो कुछ तुम्हें उचित जान पड़े सो करो मैं अकेला ही घर की तरफ लैाट जाऊंगा॥

भूत०। अगर ऐसा भी कीजिये तो मुझपर बड़ी कृपा होगी मगर जब महाराज मेरे बारे में पूछेंगे तब क्या जवाब......

देवी०। (बात काट कर) महाराज की तरफ से तुम बेफिक्र रहो जैसा मुनासिब समझूंगा कह सुन लूंगा मगर इस बात का वादा कर जाओ कि कितने दिन पर तुम वापस आओगे? या तुम्हारा हाल मुझे कब और क्योंकर मिलेगा?

भूत०। मैं आप से सिर्फ तीन दिन की छुट्टी लेता हूं अगर इस से ज्यादे दिन तक अटकने की नैाबत आवेगी तो किसी न किसी तरह अपने हालचाल की खबर आप तक पहुंचा दूंगा॥

देवी० । बहुत अच्छा (मुसकुराते हुए) अब आप जाइये और पुनः लात खाने का बन्दोबस्त कीजिये, मैं घर की तरफ रवाना होता हूं ! जय माया की ॥

भूत० । जय माया की ॥

भूतनाथ को उसी जगह छोड़ कर देवीसिंह रवाना हुए और सन्ध्या होने के पहिले ही तिलिस्मी इमारत के पास आ पहुंचे ॥

सातवां बयान ।

डेरे पर पहुंच कर स्नान करने और पोशाक बदलने के बाद देवीसिंह सब के पहिले राजा बीरेन्द्रसिंह के पास गये और उसी जगह तेजसिंह से मुलाकात की । पूछने पर देवीसिंह ने अपना और भूतनाथ का कुल हाल बयान किया जो कि हम ऊपर के बयानों में लिख आए हैं । उस हाल को सुन कर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को कई दफे हँसने और ताज्जुब करने का मौका मिला और अन्त में बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "अच्छा किया जो तुम भूतनाथ को छोड़ कर यहां चले आये तुम्हारे न रहने के कारण नकाबपोशों के आगे हम लोगों को शर्मिन्दा होना पड़ा ॥"

देवी० । (ताज्जुब से) क्या वे लोग यहां आये थे ?

बीरेन्द्र० । हां वे दोनों अपने मामूली वक्त पर यहां आये थे और तुम दोनों के पीछा करने पर ताज्जुब और अफसोस करते थे, साथ ही इसके उन्होंने यह भी कहा था कि वे दोनों, "ऐयार हमारे मकान तक नहीं पहुंचे ॥"

देवी० । वे लोग जो चाहें सो कहें मगर मेरा खयाल यही है कि हम दोनों उन्हीं के मकान में गए थे ॥

बीरेन्द्र०। खैर जो हो, मगर उन नकाबपोशों का यह कहना बहुत ठीक है कि "जब हमलोग समय पर अपना हाल आपही कहने के लिये तैयार हैं तो आपको हमारा भेद जानने के लिये उद्योग करना न चाहिये॥"

देवी०। वेशक उनका कहना ठीक है मगर क्या किया जाय ऐयारों की तबीयत ही ऐसी चंचल होती है कि किसी भेद को जानने के लिये वे देर तक या कई दिनों तक सब्र नहीं कर सकते। यद्यपि भूतनाथ इस बात को खूब जानता है कि वे दोनों नकाबपोश उसके पक्षपाती हैं और पीछा करके उनका दिल दुखाने का नतीजा शायद अच्छा न निकले, मगर फिर भी उसकी तबीयत नहीं मानती, तिसपर कल की बेइज्जती और स्त्री के खयाल ने उसके जोश को और भी भड़का दिया है, अगर वह अपनी स्त्री को वहां न देखता तो निस्सन्देह मेरे साथ वापस चला आता और उन लोगों के पीछा करने का खयाल अपने दिल से निकाल देता॥

तेज०। खैर कोई चिन्ता नहीं, वे नकाबपोश खुशदिल, नेक और हमारे प्रेमी मालूम होते हैं इस लिये आशा है कि भूतनाथ को अथवा तुम्हारे किसी आदमी को तकलीफ पहुंचाने का खयाल न करेंगे॥

बीरेन्द्र०। हमारा भी यही खयाल है (देवीसिंह से मुस्कुरा कर) तुम्हारा दिल भी तो अपनी बीबी साहेबा को देखने के लिये बेताब हो रहा होगा?

देवी०। वेशक मेरे दिल में धुकनी सी लगी हुई है और मैं चाहता हूं कि किसी तरह आपकी बात पूरी हो तो महल में जाऊं॥

बीरेन्द्र०। मगर हमसे तो तुमने पूछा ही नहीं कि तुम्हारे जाने बाद तुम्हारी बीबी महल में थीं या नहीं॥

देवी०। (हँस कर) जी आपसे पूछने की मुझे कोई जरूरत नहीं

है और न मुझे विश्वास ही है कि आप इस बारे में मुझसे सच बोलेंगे ॥

बीरेन्द्र० । (हँस कर) खैर मेरी बातों पर विश्वास न करो और महल में जा कर अपनी रानी को देखो, मैं भी उसी जगह पहुंच कर तुम्हें इस बेयातबारी का मजा चखाता हूं !!

इतना कह कर राजा बीरेन्द्रसिंह उठ खड़े हुए और देवीसिंह भी हँसता हुआ वहां से चला गया ॥

महल के अन्दर अपने कमरे में एक कुर्सी पर बैठी हुई चम्पा रोहतासगढ़ पहाड़ और किले की तस्वीर दीवार के ऊपर बना रही है और उसकी दो लौंडियां हाथ में मोमी शमादान लिये हुए रोशनी दिखा कर इस काम में उसकी मदद कर रही हैं । चम्पा का मुंह दीवार की तरफ और पीठ सदर दर्वाजे की तरफ है और दोनों लौंडियां भी उसीकी तरह दीवार की तरफ देख रही हैं इसलिये चम्पा तथा उसकी लौंडियों को इस बात की कुछ भी खबर नहीं कि देवीसिंह धीरे २ पैर दबाता हुआ इस कमरे में आकर दूर से और कुछ देर से उसकी कार्रवाई देखता हुआ ताज्जुब कर रहा है । चम्पा तस्वीर बनाने के काम में बहुत ही निपुण और शीघ्र काम करने वाली थी तथा उसे तस्वीरों के बनाने का शौक भी हद्द से ज्यादे था । देवीसिंह ने उसके हाथ की बनाई हुई सैकड़ों तस्वीरें देखी थीं मगर आज की तरह ताज्जुब करने का मौका उसे आज के पहिले नहीं मिला था । ताज्जुब इस लिये कि इस समय जिस ढङ्ग की तस्वीर चम्पा बना रही थी, ठीक उसी ढङ्ग की तस्वीर देवीसिंह ने भूतनाथ के साथ जाकर नकाबपोशों के मकान में दीवार के ऊपर बनी हुई देखी थी । कह सकते हैं कि "एक स्थान या इमारत की तस्वीर अगर दो कारीगर बनावें तो सम्भव है कि एक ढङ्ग की तैयार हो जायं ।" मगर यहां यह बात न थी । नकाबपोशों के मकान में जो रोहतास-

गढ़ पहाड़ी की तस्वीर देवीसिंह ने देखी थी उसमें दो नकाबपोश सवार पहाड़ी के ऊपर चढ़ते हुए दिखलाये गये थे जिनमें से एक का घोड़ा मुश्की और दूसरे का सब्ज़ा था। इस समय जो तस्वीर चम्पा बना रही है उसमें भी उसी ठिकाने उसी ढङ्ग के दो सवार इसने बनाये थे और उसी तरह इन दोनों सवारों में से भी एक का घोड़ा मुश्की और दूसरे का सब्ज़ा था। देवीसिंह का खयाल है कि यह बात इत्तफाक से नहीं हो सकती॥

ताज्जुब के साथ उस तस्वीर को देखते हुए देवीसिंह सोचने लगे—क्या यह तस्वीर इसने यों ही अन्दाज से तैयार की है? नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, अगर यह तस्वीर इसने अन्दाज से बनाई होती तो दोनों सवार और घोड़े ठीक उसी रङ्ग के न बनते जैसा कि मैं उन नकाबपोशों के यहां देख आया हूं। तो क्या यह वास्तव में उन नकाबपोशों के यहां गई थी? बेशक गई होगी, क्योंकि उस तस्वीर के देखे बिना उसके जोड़ की तस्वीर यह बना नहीं सकती थी, मगर इस तस्वीर के बनाने से साफ जाहिर होता है कि यह अपनी उन नकाबपोशों के यहां जाने वाली बात भी गुप्त रखना नहीं चाहती, मगर ताज्जुब है कि जब इसका ऐसा खयाल है तो वहां (नकाबपोशों के घर पर) मुझे देख कर छिप क्यों गई? खैर अब बातचीत करने पर जो कुछ भेद है सब मालूम हो जायगा॥

यह सोच कर देवीसिंह दो कदम आगे बढ़े ही थे कि पैरों की आहट पाकर चम्पा चौंकी और घूम कर देखने लगी। देवीसिंह पर निगाह पड़ते ही चौकी और रङ्ग की प्याली जमीन पर रख कर उठ खड़ी हुई और हाथ जोड़ कर प्रणाम करने बाद बोली, "आप सफर से लौट कर कब आये?"

देवी०। (मुसकुराते हुए) चार पांच घण्टे हुए होंगे, मगर यहां

भी मैं आधी घड़ी से तुम्हारा तमाशा देख रहा हूं ॥

चम्पा० । (मुसकुराती हुई) क्या खूब ! इस चोरी से ताकझांक करने की क्या जरूरत थी ?

देवी० । इस तस्वीर और इसकी बनावट को देख कर ताज्जुब करता था और तुम्हारे काम में हर्ज डालने का इरादा नहीं होता था ॥

चम्पा० । (हँस कर) बहुत ठीक ! खैर आइये बैठिये ॥

देवी० । पहिले मैं तुम्हारी इस कुर्सी पर बैठ के इस तस्वीर को गौर से देखूंगा ॥

इतना कह कर देवीसिंह उस कुर्सी पर बैठ गये जिस पर थोड़ी ही देर पहिले चम्पा बैठी हुई तस्वीर बना रही थी और बड़े गौर से उस तस्वीर को देखने लगे । चम्पा भी कुर्सी की पिछवाई पकड़ कर खड़ी हो गई और देखने लगी । देखते देखते देवीसिंह ने झट हलके जर्द रङ्ग की प्याली और कूँची उठा ली और उसी तस्वीर में रोहतासगढ़ किले के ऊपर एक बुर्ज और उसके साथ सटे हुए पताके का साधारण निशान बनाया, अर्थात् उसकी जमीन बांधी, जिसे देखते ही चम्पा चौंकी और बोली, "हां हां ठीक है, यह बनाना तो मैं भूल ही गई थी ! बस अब आप रहने दीजिये इसे भी मैं ही अपने हाथ से बनाऊंगी तब आप देख कर कहियेगा कि तस्वीर कैसी बनी और इसमें कौन सी बात छूट गई थी ॥"

चम्पा की इस बात को सुन कर देवीसिंह चौंक पड़े अब उन्हें पूरा पूरा विश्वास हो गया कि चम्पा उन नकाबपोशों के मकान में जरूर गई हुई थी और मैंने निःसन्देह इसी को देखा था । अस्तु देवीसिंह ने घूम कर चम्पा की तरफ देखा और कहा, "मगर यह तो बताओ कि वहां मुझे देख कर तुम भाग क्यों गईं ?"

चम्पा० । (ताज्जुब की सूरत बना के) कहां ? कब ?

देवी०। उन्हीं नकाबपोशों के यहां॥

चम्पा०। मुझे बिलकुल याद नहीं पड़ता कि आप कब की बात कह रहे हैं॥

देवी०। अब लगीं न नखरा करके परेशान करने!!

चम्पा०। मैं आपके चरणों की कसम खाकर कहती हूं कि मुझे कुछ भी याद नहीं कि आप कब की बात कह रहे हैं॥

अब तो देवीसिंह के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा, क्योंकि वे खूब जानते थे कि चम्पा जितनी ही खूबसूरत और ऐयारी के फन में तेज है उतनी ही नेक और पतिव्रता भी है, वह उनके चरणों की कसम खा कर झूठ कदापि नहीं बोल सकती। अस्तु कुछ देर तक ताज्जुब के साथ गौर करने के बाद पुनः देवीसिंह ने कहा, "आखिर कल या परसों तुम कहां गई थीं?"

चम्पा०। मैं तो कहीं भी नहीं गई! आप महारानी चन्द्रकान्ता से पूछ लें क्योंकि मेरा उनका तो दिन रात का सङ्ग है। अगर मैं कहीं जाती तो किसी काम ही के सिर जाती और ऐसी अवस्था में आप से छिपाने की जरूरत ही क्या थी?

देवी०। फिर यह तस्वीर तुमने कहां देखी?

चम्पा०। तस्वीर मैं......

इतना कह कर चम्पा कपड़े का एक लपेटा हुआ पुलिन्दा उठा लाई और देवीसिंह के हाथ में दिया। देवीसिंह ने उसे खोल कर देखा और चौंक कर चम्पा से पूछा, "हैं!! यह नकशा तुम्हें कहां से मिला?"

चम्पा०। यह नकशा मुझे कहां से मिला सो मैं पीछे कहूंगी पहिले आप यह बतावें कि इस नकशे को देख कर आप चौंके क्यों और यह नकशा वास्तव में कहां का है? क्योंकि मैं इसके बारे में

कुछ भी नहीं जानती ॥

देवी० । यह नकशा उन्हीं नकाबपोशों के मकान का है जिनके बारे में मैं अभी तुमसे पूछ रहा था ॥

चम्पा० । कौन नकाबपोश ? वेही जो दर्बार में आया करते हैं ?

देवी० । हां वेही, और उन्हीं के यहां मैंने तुमको देखा था ॥

चम्पा० । (ताज्जुब के साथ) यों मैं कुछ भी नहीं समझ सकती पहिले आप अपने सफर का हाल सुनावें और यह बतावें कि आप कहां गये थे और क्या क्या देखा ?

इसके जवाब में देवीसिंह ने अपने और भूतनाथ के सफर का हाल बयान किया और इसके बाद उस कपड़े वाले नकशे की तरफ बता के कहा, "यह उसी स्थान का नकशा है, इस बङ्गले के अन्दर दीवारों पर तरह तरह की तस्वीरें बनी हुई हैं जिसे कारीगर दिखा नहीं सकता इस लिये नमूने के तौर पर बाहर की तरफ यही रोह-तासगढ़ की एक तस्वीर बना कर नीचे लिख दिया कि "इस बङ्गले में इसी तरह की बहुत सी तस्वीरें बनी हुई हैं।" वास्तव में यह नक्शा बहुत ही अच्छा, साफ और बेशकीमत बना हुआ है ॥

चम्पा०। अब मैं समझी कि असल मामला क्या है,मैं उस मकान में नहीं गई थी ॥

देवी० । तब यह तस्वीर तुमने कहां से पाई ?

चम्पा० । यह तस्वीर मुझे लड़के (तारासिंह) ने दी थी ॥

देवी०। तुमने पूछा तो होगा कि यह तस्वीर उसे कहां से मिली ?

चम्पा० । नहीं, उसने बहुत तारीफ कर के यह तस्वीर मुझे दी थी और मैंने लेली थी ॥

देवी० । कितने दिन हुए ?

चम्पा० । आज पांच छः दिन हुए होंगे ॥

इसके बाद देवीसिंह बहुत देर तक चम्पा के पास बैठे रहे और जब वहां से जाने लगे तब वह कपड़े वाली तस्वीर अपने साथ बाहर लेते गये ॥

आठवां बयान।

महल से बाहर आने पर भी देवीसिंह के दिल को किसी तरह चैन न पड़ा। यद्यपि रात बहुत बीत चुकी थी तथापि राजा बीरेन्द्र-सिंह से मिलकर उस तस्वीर के विषय में बातचीत करने की नीयत से राजा साहब के कमरे में चले गये, मगर वहां जाने पर मालूम हुआ कि बीरेन्द्रसिंह महल में गये हुए हैं, लाचार होकर लौटा ही चाहते थे कि राजा बीरेन्द्रसिंह भी आ पहुंचे और अपने पलङ्ग के पास देवी-सिंह को देखकर बोले, "रात को भी तुम्हें चैन नहीं पड़ती? (मुस्कुरा कर) ताज्जुब है कि चम्पा ने तुम्हें इतनी जल्दी बाहर आने की छुट्टी क्योंकर देदी !!"

देवी०। इस हिसाब से तो मुझे भी आप पर ताज्जुब करना चाहिये मगर नहीं, असल तो यह है कि मैं एक ताज्जुब की बात आपको सुनाने के लिये यहां चला आया हूं ॥

बीरेन्द्र०। वह कौनसी बात है? और यह तुम्हारे हाथ में कपड़े का पुलिन्दा कैसा है?

देवी०। इसी कम्बख़्त ने तो मुझे इस आनन्द के समय में आपसे मिलने पर मजबूर किया ॥

बीरेन्द्र०। सो क्या? (चारपाई पर बैठ कर) बैठ के बातें करो ॥

देवीसिंह ने महल में चम्पा के पास जा कर जो कुछ देखा और सुना था सब बयान किया और इसके बाद वह कपडे वाली तस्वीर

खोल कर दिखाई तथा उस नकशे को अच्छी तरह समझाने के बाद कहा, "न मालूम यह नक्शा तारा को क्योंकर और कहां से मिला! और उसने इसे अपनी मां को क्यों दे दिया ॥

बीरेन्द्र० । तारासिंह से तुमने क्यों नहीं पूछा ?

देवी० । अभी तो मैं सीधा आप ही के पास चला आया हूं अब जो कुछ मुनासिब हो किया जाय । कहिये तो लड़के को इसी जगह बुलाऊं ?

बीरेन्द्र० । क्या हर्ज है किसी को कहो बुला लावे ॥

देवीसिंह कमरे के बाहर निकले और पहरे के एक सिपाही को तारासिंह को बुला लाने की आज्ञा देकर पुनः कमरे में चले गये और राजा साहब से बातचीत करने लगे । थोड़ी ही देर में पहरे वाले ने वापस आकर अर्ज किया कि "तारासिंह जी से मुलाकात नहीं हुई और इसका भी पता न लगा कि वे कब और कहां गये हैं, उनका खिदमतगार कहता है कि सन्ध्या होने के पहिले ही से उनका पता नहीं है ॥"

बेशक यह बात ताज्जुब की थी, रात के समय बिना आज्ञा लिये तारासिंह का गैरहाजिर रहना सभों को ताज्जुब में डाल सकता था मगर राजा बीरेन्द्रसिंह ने यह सोचा कि—आखिर तारासिंह ऐयार है शायद किसी काम की जरूरत समझ कर कहीं चला गया हो, अस्तु राजा साहब ने भैरोसिंह को तलब किया और थोड़ी ही देर में भैरोसिंह ने हाजिर होकर सलाम किया ॥

बीरेन्द्र० । (भैरो से) तुम जानते हो कि तारा क्यों और कहां गया है?

भैरो० । तारासिंह तो आज सन्ध्या होने के पहिले ही से गायब है, पहर भर दिन बाकी था जब वह मुझसे मिला था उसे तरद्दुद

में देख कर मैंने पूछा भी था कि आज तुम तरद्दुद में क्यों मालूम पड़ते हो मगर इसका उसने कोई जवाब नहीं दिया ॥

बीरेन्द्र०। ताज्जुब की बात है! हमें उम्मीद थी कि तुम्हें उसका हाल जरूर मालूम होगा ॥

भैरो०। क्या मैं सुन सकता हूं कि इस समय उसे याद करने कि जरूरत क्यों पड़ी?

बीरेन्द्र०। जरूर सुन सकते हो ॥

इतना कह कर बीरेन्द्रसिंह ने देवीसिंह की तरफ देखा और देवीसिंह ने कुछ कमबेश अपना और भूतनाथ का किस्सा बयान करने बाद उसे तस्वीर का हाल और तस्वीर भी दिखाई अन्त में भैरोसिंह ने कहा कि "मुझे कुछ भी मालूम नहीं कि तारासिंह को यह तस्वीर कब और कहां से मिली मगर अब इसका हाल जानने की कोशिश जरूर करूंगा ॥"

हुक्म पाकर भैरोसिंह बिदा हुआ और थोड़ी देर तक बातचीत करने बाद देवीसिंह भी चले गए ॥

दूसरे दिन मामूली कामों से छुट्टी पाकर राजा बीरेन्द्रसिंह जब दर्बारेखास में बैठे तो पुनः तारासिंह के विषय में बातचीत शुरू हुई और इसी बीच में नकाबपोशों का भी जिक्र छिड़ा। उस समय वहां राजा बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह तथा देवीसिंह वगैरह अपने ऐयारों के अतिरिक्त कोई गैर आदमी न था। जितने थे सभी ताज्जुब के साथ तारासिंह के विषय में तरह २ की बातें कह रहे थे और मौके २ पर भूतनाथ तथा नकाबपोशों का भी जिक्र आता था। दोनों नकाबपोश यहां आ कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का किस्सा सुना गए थे उसे आज तीन दिन का जमाना गुजर गया, इस बीच में न तो वे दोनों नकाबपोश आये और न उनके विषय में कोई बात ही

सुनी गई । साथ ही इसके अभी तक भूतनाथ का भी कोई हालचाल मालूम न हुआ । खुलासा यह कि इस समय के दर्बार में इन्हीं सब बातें की चर्चा थी और तरह २ के खयाल दौड़ाये जा रहे थे । इसी समय चोबदार ने दोनें नकाबपोशों के आने की इत्तला की और हुक्म पाकर दोनें नकाबपोश हाजिर किये गए और वे दोनें सलाम करके आज्ञानुसार उचित स्थान पर बैठ गए ॥

एक नकाबपोश० । [हाथ जोड़ के राजा बीरेन्द्रसिंह से] महाराज ताज्जुब करते होंगे कि ताबदारें ने हाजिर होने में दो तीन दिन का नागा किया ॥

बीरेन्द्र० । बेशक ऐसाही है क्योंकि हम लोग इन्द्रजीत और आनन्द का तिलिस्मी किस्सा सुनने के लिये बेचैन हो रहे थे ॥

नकाब० । ठीक है । हमलोग हाजिर न हुए इसके कई सबब हैं । एक तो इसका पता हमलोगों को लग चुका था कि भूतनाथ जो हमलोगों की फिक्र में गया था अभी तक लौट कर नहीं आया और इस सबब से कैदियों के मुकद्दमे में दिलचस्पी नहीं आ सकती थी । दूसरे कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के किस्से में कई बातें ऐसी थीं जिनका खुलासा हाल दरयाफ्त करना बहुत जरूरी था और इस काम के लिये हमलोग तिलिस्म के अन्दर गए हुए थे ॥

बीरेन्द्र० । क्या आपलोग जब चाहें तब उस तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं जिसे वे दोनें लड़के फतह कर रहे हैं ?

नकाब० । जी सब जगह तो नहीं मगर खास २ ठिकाने कभी २ जा सकते हैं जहां तक कि हमारे गुरू महाराज जाया करते थे, मगर उनकी खबर एक २ घड़ी की हमलोगों को मिला करती है ॥

बीरेन्द्र० । आपलोगों के गुरू कौन और कहां हैं ?

नकाब० । अब तो वे परमधाम को चले गए ॥

बीरेन्द्र०। खैर तो जब आपलोग तिलिस्म में गए थे तो क्या दोनों लड़कों से मुलाकात हुई थी ?

नकाब०। मुलाकात तो नहीं हुई मगर जिन बातों का शक था वह मिट गया और जो बातें मालूम नहीं हुई थीं वे मालूम होगईं और इस समय हम लोग पुनः उनका किस्सा कहने के लिये तैयार हैं (देवीसिंह की तरफ देख कर) आपने भूतनाथ को अकेला ही छोड़ दिया !!

देवी०। हां, क्योंकि मुझे आपलोगों के भेद जानने का उतना शौक न था जितना भूतनाथ को शौक है, मैं तो उस दिन केवल इतना ही जानने के लिये गया था कि देखें भूतनाथ कहां जाता है और क्या करता है मगर मेरी तबीयत इतने ही में भर गई ॥

नकाब०। मगर भूतनाथ की तबीयत अभी नहीं भरी ॥

तेज०। वह भी विचित्र ढङ्ग का ऐयार है ! साफ साफ देखता है कि आपलोग उसके पक्षपाती हैं, मगर फिर भी आपलोगों का असल हाल जानने के लिये बेताब हो रहा है ! यह उसकी भूल है तथापि आशा है कि आपलोगों की तरफ से उसे किसी तरह की तकलीफ न पहुंचेगी ॥

नकाब०। नहीं नहीं, कदापि नहीं, (बीरेन्द्रसिंह की तरफ देख के और हाथ जोड़ के) हमलोगों को आप अपना लड़का समझिये और विश्वास रखिये कि आपके किसी ऐयार को हमलोगों की तरफ से किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुंच सकती चाहे वे लोग हमें किसी तरह का रंज पहुंचावें ॥

बीरेन्द्र०। आशा तो ऐसी ही है, हमारे ऐयार भी बड़े ही नालायक होंगे अगर आपलोगों को किसी तरह की तकलीफ पहुंचाने का इरादा करेंगे ॥

देवी० । मैं कल से एक और तरद्दुद में पड़ गया हूं ॥

नकाब० । वह क्या ?

देवी० । कल से मेरे लड़के तारासिंह का पता नहीं है न मालूम वह क्यों और कहां चला गया है !!

नकाब० । तारासिंह के लिये आपको तरद्दुद करना न चाहिये, आशा है कि वह घण्टे भर के अन्दर ही यहां आ पहुंचे ॥

देवी० । आपके इस कहने से मालूम होता है कि आपको उसका हाल मालूम है ॥

नकाब० । बेशक मालूम है मगर मैं अपनी जबान से कुछ भी न कहूंगा आप स्वयं उससे जो कुछ पूछना हो पूछ लेंगे (वीरेन्द्रसिंह से) आज जिस समय हमलोग घर से यहां की तरफ रवाना हो रहे थे उसी समय एक चिट्ठी कुंअर इन्द्रजीतसिंह की मुझे मिली जिसमें उन्हीं ने लिखा था कि तुम महाराज के पास जाकर मेरी तरफ से अर्ज करो कि महाराज भैरोसिंह और तारासिंह को मेरे पास भेज दें क्योंकि उनके बिना हमलोगों को कई बातों की तकलीफ हो रही है, साथ ही इसके एक चीठी महाराज के नाम की भी भेजी है ॥

इतना कह के नकाबपोश ने अपने जेब में से एक बन्द लिफाफा निकाल कर वीरेन्द्रसिंह के हाथ में दिया ॥

वीरेन्द्र० । (ताज्जुब के साथ लिफाफा लेकर) सीधे मेरे पास क्यों नहीं भेजा ?

नकाब० । वे न तो खुद तिलिस्म के बाहर आ सकते हैं और न किसी को भेज सकते हैं, हमलोगों का आदमी हरदम तिलिस्म के अन्दर मौजूद रहता है और उनके हालचाल की खबर लिया करता है इसलिये उसके मारफत पत्र भेज सकते हैं ॥

इतना सुन कर वीरेन्द्रसिंह चुप हो रहे और लिफाफा खोलकर

पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ थाः—

प्रणाम इत्यादि के बाद॥

"हम दोनों भाई कुशल पूर्वक तिलिस्म की कार्रवाई कर रहे हैं, परन्तु कोई ऐयार या मददगार साथ न रहने के कारण कभी कभी तकलीफ हो जाती है इसलिये आशा है कि भैरोसिंह और तारासिंह को शीघ्र भेज देंगे। यहां तिलिस्म में ईश्वर ने हमें दो मददगार बहुत अच्छे पहुंचा दिये हैं जिनका नाम रामसिंह और लक्ष्मणसिंह है वे दोनों मायारानी और तिलिस्मी दारोगा इत्यादि के भेदों से खूब वाकिफ हैं। यदि आप उनलोगों के सामने दुष्टों का मुकद्दमा फैसल करेंगे तो आशा है कि देखने सुनने वालों को एक अपूर्व आनन्द मिलेगा। इन्हीं दोनों की जुबानी हम दोनों भाईयों का हाल भी पूरा पूरा मिला करेगा और येही दोनों भैरोसिंह और तारासिंह को भी हमलोगों के पास पहुंचा देंगे। भाई गोपालसिंह जी से कह दीजियेगा कि उनके दोस्त भरथसिंहजी भी इस तिलिस्म में मुझे मिले हैं, उन्हें कम्बख्त दारोगा ने कैद किया था, ईश्वर की कृपा से उन की जान बच गई। भाई गोपालसिंह जी मुझसे बिदा होती समय तालाब वाले नहर के विषय में गुप्त रीति से जो कुछ कह गये थे वह ठीक निकला, चांद वाला पताका भी हमलोगों को मिल गया॥"

आपका आज्ञाकारी पुत्र—

इन्द्रजीत, आनन्द।

इस चीठी को पढ़ कर बीरेन्द्रसिंह बहुत ही प्रसन्न हुए मगर साथ ही इसके ताज्जुब भी हद्द से ज्यादे हुआ। इन्द्रजीतसिंह के हाथ के अक्षर पहिचानने में किसी तरह भूल नहीं हो सकती थी तथापि शक मिटाने के लिये बीरेन्द्रसिंह ने वह चीठी राजा गोपालसिंह के हाथ

में दे दी क्योंकि उनके विषय में भी दो एक गुप्त बातों का ऐसा इशारा था जिसके पढ़ने से इस बात का रत्ती भर भी शक नहीं हो सकता था कि यह चीठी कुमार के हाथ की लिखी हुई नहीं है या दोनों नकाबपोश जाल करते हैं॥

चीठी पढ़ने के साथ ही राजा गोपालसिंह हद्द से ज्यादे खुश होकर चौंक पड़े और राजा बीरेन्द्रसिंह की तरफ देख के बोले, "निस्सन्देह यह पत्र इन्द्रजीतसिंह के हाथ का लिखा हुआ है। बिदा होती समय जो गुप्त बातें मैं उनसे कह आया था, इस चीठी में उनका जिक्र एक अपूर्व आनन्द दे रहा है, तिस पर अपने मित्र भरथसिंह के पाजाने का हाल पढ़ कर मुझे जो प्रसन्नता हुई उसे मैं शब्दों द्वारा प्रगट नहीं कर सकता।" (नकाबपोशों की तरफ देख के) अब मालूम हुआ कि आप लोगों का नाम रामसिंह और लक्ष्मणसिंह है। आप लोग बहुत सी बातों को छिपा रहे हैं परन्तु जिस समय अपने भेदों को खोलेंगे उस समय निस्सन्देह एक अपूर्व आनन्द मिलेगा॥

इतना कह कर राजा गोपालसिंह ने वह चीठी तेजसिंह के हाथ में देदी और उन्होंने पढ़ कर देवीसिंह को और देवीसिंह ने पढ़ कर और ऐयारों को भी दिखाई जिसके सबब से इस समय सभों के चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई दे रही थी। उसी समय तारासिंह भी वहां आ पहुंचा॥

नकाबपोश ने जो कुछ कहा था वही हुआ, अर्थात् थोड़ी देर में तारासिंह ने भी वहां पहुंच कर सभों के दिल से खुटका दूर किया, मगर हमारे राजा साहब और ऐयारों को ताज्जुब था कि नकाबपोश को तारासिंह का हाल क्योंकर मालूम हुआ और उसने किस जानकारी पर कहा कि "तारासिंह घण्टे भर के अन्दर ही आ जायगा!" अस्तु इस समय तारासिंह के आ जाने से सभों को प्रसन्नता हुई और

देवीसिंह को उस तस्वीर के विषय में खुलासा हाल पूछने का मौका मिला मगर नकाबपोशों के सामने उस विषय में बातचीत करना उचित न जाना॥

नकाबपोश०। (बीरेन्द्रसिंह से) देखिये तारासिंह आ गये, जो मैंने कहा था वही हुआ। अब इन दोनों के विषय में क्या हुक्म होता है? क्या आज ये दोनों ऐयार कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के पास जाने के लिये तैयार हो सकते हैं?

तेज०। हां तैयार हो सकते हैं और आप लोगों के साथ जा सकते हैं मगर दो एक जरूरी कामों की तरफ ध्यान देने से यही उचित जान पड़ता है कि आज नहीं कल्ह इन दोनों भाइयों को आपके साथ बिदा किया जाय॥

नकाब०। जैसी मर्जी। अब आज्ञा हो तो हमलोग बिदा हों॥

तेज०। क्या आज इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का किस्सा आप न सुनावेंगे॥

नकाब०। देर तो हो गई है मगर फिर भी कुछ थोड़ा सा हाल सुनाने के लिये हमलोग तैयार हैं, आप दरियाफ़ करावें यदि बड़े महाराज निश्चिन्त हों तो........

इशारा पाते ही भैरोसिंह बड़े महाराज अर्थात् सुरेन्द्रसिंह के पास चले गये और थोड़ी ही देर में लौट आकर बोले, "महाराज आप लोगों का इन्तज़ार कर रहे हैं॥"

इतना सुनते ही बीरेन्द्रसिंह के साथ ही साथ सब कोई उठ खड़े हुए और बात को बात में यह दर्बारेखास महाराज सुरेन्द्रसिंह का दर्बारेखास हो गया॥
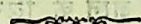
नौवां बयान।

राजा सुरेन्द्रसिंह और बीरेन्द्रसिंह तथा उनके ऐयारों के सामने एक नकाबपोश ने दोनों कुमारों का हाल इस तरह बयान करना शुरू किया :—

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने भी उन पांचों कैदियों के साथ रात को उसी बाग में गुजारा किया और सवेरा होने पर मामूली कामों से छुट्टी पाकर उस बीचवाले बुर्ज के पास गये और चबूतरे वाले पत्थरों को गौर से देखने लगे। उन पत्थरों में कहीं कहीं अङ्क और अक्षर भी खुदे हुए थे, उन्हीं अङ्कों को देखते देखते इन्द्र-जीतसिंह ने एक चौखूटे पत्थर पर हाथ रक्खा और आनन्दसिंह की तरफ देख के कहा, "बस इसी पत्थर को उखाड़ना चाहिये।" इसके जवाब में आनन्दसिंह ने "जी हां" कहा और तिलिस्मी खञ्जर की नोक से उसके जोड़ की दरार खुलासा करके खञ्जर ही के जरिये पत्थर के उस टुकड़े को उखाड़ डाला॥

उसके नीचे एक छोटा सा चौखूटा कुंड बना हुआ था और उस कुंड के बीचोबीच में लोहे की गोल कड़ी लगी हुई थी जिसे कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने खैंचना शुरू किया। उस कड़ी के साथ लोहे की पचीस तीस हाथ लांबी जञ्जीर लगी हुई थी जो बराबर खिचती हुई चली आई और जब वह बन्द हो गया अर्थात् वह अपनी हद्द तक खिंच कर बाहर निकल आई तब उस चबूतरे के चारों तरफ का निचला पत्थर आपसे आप उखड़ कर जमीन के साथ लग गया और उसके अन्दर जाने के लिये दो रास्ते दिखाई देने लगे। इनमें से एक रास्ता नीचे तहखाने में उतर जाने के लिये था और दूसरा बुर्ज के ऊपर चढ़ने के लिये॥

दोनों कुमार पहिले बुर्ज के ऊपर चढ़ गये और वहां से चारो तरफ की बहार देखने लगे। खास बाग के कुल हिस्से और उनके कई तरफ की मजबूत दीवार तथा कुछ इमारत और पेड़ पत्ते इत्यादि दिखाई दे रहे थे। उन सभों को गौर से देखने बाद कुमार नीचे उतर आये और उन पांचो कैदियों को यह कह कर कि "तुम इसी बाग में रहो खबरदार नीचे न उतरना।" दोनों भाई तहखाने में उतर गये॥

नीचे उतरने के लिये चक्करदार ग्यारह सीढ़ियां थीं जिन्हें तै करने बाद वे दोनों एक लम्बे चौड़े कमरे में पहुंचे जहां बिलकुल अन्धकार था मगर तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी करने पर वहां की सब चीजें साफ दिखाई देने लगीं। वह कमरा लम्बाई में बीस हाथ और चौड़ाई में पन्द्रह हाथ से ज्यादे न होगा। इसके बीचोबीच में लोहे का एक चबूतरा था और उसके ऊपर एक शेर लोहे का बैठा हुआ था जिसकी चमकदार आंखें उसके भयानक चेहरे के साथ ही साथ देखने वालों के दिल पर खौफ पैदा कर सकती थीं। उसके सामने जमीन पर लोहे का एक हथौड़ा पड़ा हुआ। बस इसके अतिरिक्त उस कमरे में और कुछ भी न था। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उस शेर के सर को अच्छी तरह टटोलना शुरू किया॥

उस शेर के दाहिने कान की तरफ केवल एक उँगली जाने लायक छोटा सा गड़हा था, कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने अपने जेब में से एक चमकदार चीज निकाल कर उसी गड़हे में फँसाने के बाद शेर के सामने वाला हथौड़ा जमीन से उठा कर उसीसे वह चमकदार चीज (कील) एक ही चोट में ठोंक दी और इसके बाद तुरत ही दोनों भाई उस तहखाने के बाहर निकल आये॥

वह चमकदार चीज जो शेर के सर में ठोंकी गई थी, क्या थी? इसे हमारे पाठक बखूबी जानते हैं, यह वही चमकदार चीज थी जो

कुंअर इन्द्रजीतसिंह को बाग के उस तहखाने में एक पुतले के पेट में से मिली थी जिसमें कुंअर आनन्दसिंह को खोजते हुए गये थे* ॥

जब दोनों कुमार तहखाने के बाहर निकल आये उसके थोड़ी ही देर बाद जमीन के अन्दर से घरघराहट और घड़घड़ाहट की आवाज आने लगी जिससे वे पांचों कैदी बहुत ही ताज्जुब और घबरहट में आगये मगर कुमार ने उन्हें समझा कर शान्त किया और कुछ खाने पीने की फिक्र में लगे पहर भर के बाद वह आवाज बन्द हुई और तब तक कुमार भी हर तरह से निश्चिन्त होगये । दोपहर दिन ढलने के बाद पांचो कैदियों को साथ लिये हुए दोनों कुमार पुनः तहखाने के अन्दर उतरे । जब उस कमरे में पहुंचे तो शेर और चबूतरे का नाम निशान भी न पाया, हां उसके बदले में उसी जगह एक गड़हा देखा जिसमें उतरने के लिये छः सात सीढ़ियां बनी हुई थीं । कैदियों को भी साथ लिये हुए दोनों कुमार नीचे उतर गये और वहां सुरङ्ग का एक मुहाना पाया । कैदियों को साथ लिये और तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी किये हुए दोनो कुमार सुरङ्ग में चले गये और लगभग पचास कदम के जाने बाद पुनः एक कमरे में पहुंचे । यह कमरा भी पहिले ही कमरे के बराबर था और सामने की दीवार में पुनः आगे जाने के लिये सुरङ्ग का मुहाना था, अर्थात् इस कमरे को लांघ कर पुनः आगे बढ़ जाने के लिये भी सामने की तरफ सुरङ्ग दिखाई दे रही थी ॥

यह कमरा पहिले कमरे की तरह खाली या सुनसान न था । इसमें तरह २ की बेशकीमत चीजें, हर्बे, जवाहिरात और अशर्फियों के भी ढेर लगे हुए थे जिन्हें देख कर उन पांचो कैदियों में से एक

* देखो सन्तति दसवां हिस्सा पहिला बयान ।

ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से पूछा,"यह इतनी बड़ी रकम यहां किसके लिये रक्खी हुई है?"

इन्द्र०। यह सब दौलत हमारे लिये रक्खी हुई है। केवल इतनी ही नहीं बल्कि इसी तरह और कई जगह इससे भी बढ़ के अच्छी २ और कीमती चीजें दिखाई देंगी॥

कैदी०। इन चीजों को आप क्योंकर बाहर निकालेंगे?

इन्द्र०। जब हमलोग तिलिस्म तोड़ते हुए चुनारगढ़ पहुंचेंगे तब ये सब चीजें निकलवा ली जायँगी॥

कैदी०। तब तक इसी तरह ज्यों की त्यों पड़ी रहेंगी?

इन्द्र०। हां॥

इस कमरे में चारों तरफ दीवारों के साथ तरह २ के बेशकीमती हर्बे लटक रहे थे जिनपर इस खयाल से कि जङ्ग इत्यादि लग कर खराब न हो जायँ,एक किस्म का मोमी रोगन लगा हुआ था। नीचे दो सन्दूक जड़ाऊ जेवरों से भरे हुए थे जिनमें ताले लगे हुए न थे। इसके अतिरिक्त सोने के जड़ाऊ खुशनुमा और नाजुक बर्तन और कई ढेर अशर्फियों के भी दिखाई दे रहे थे॥

इन चीजों को देख भाल कर कुमार आगे बढ़े और सुरङ्ग के दूसरे मुहाने में घुस कर दूर तक चले गये। अबकी दफे का सफर सीधा न था बल्कि घूमघुमौआ था। लगभग दो या डेढ़ कोस जाने बाद पुन: एक कमरे में पहुंचे। पहिले कमरे की तरह इसमें भी आमने सामने दोनों तरफ सुरङ्ग का रास्ता बना हुआ था?

इस कमरे में सोने चांदी या जवाहिरात की कोई चीज न थी हां दीवारों पर बड़ी बड़ी कई तस्वीरें लटक रही थी जो एक किस्म के रोगनी कपड़े पर जिस पर सर्दी गर्मी का असर नहीं पहुंच सकता था लगी हुई थीं। इन तस्वीरों में रोहतासगढ़ और चुनार की तस्वीरें

ज्यादे थीं और तरह तरह के नकशे भी उन्हीं के पास लटक रहे थे जिन्हें बड़े गौर से दोनों कुमार देर तक देखते रहे ॥

इस कमरे की कैफियत को देख के इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "मालूम होता है 'ब्रह्ममण्डल' यही है, इसी जगह हमलोगों को बराबर आना पड़ेगा तथा चुनारगढ़ तिलिस्म की चाभी भी इसी जगह से हमें मिलेगी ॥"

आनन्द० । बेशक यही बात है, इस जगह के "ब्रह्ममण्डल" होने में कुछ भी सन्देह नहीं हो सकता ॥

इन्द्र० । फिर अब तुम्हारी क्या राय है । इस समय यहां कुछ काम किया जाय या नहीं ? क्योंकि इस काम को हमलोग अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं ॥

आनन्द० । मेरी राय में तो इस समय यहां कोई काम न करना चाहिये क्योंकि (कैदियों की तरफ इशारा कर के) इनलोगों को तकलीफ होगी । इस लिये पहिले इन लोगों को तिलिस्म के बाहर कर देना ही उचित होगा, फिर हम लोग यहां आकर अपना काम किया करेंगे ॥

इन्द्र० । मैं भी यही उचित समझता हूं । इसके अतिरिक्त हम लोगों को यहां कई दफे आने की जरूरत पड़ेगी । अस्तु इस समय अगर यहां अटक कर कोई काम करेंगे तो बाहर निकलने में बहुत देर हो जायगी और हम सब परेशान और दुःखी हो जायंगे ॥

इतना कह के इन्द्रजीतसिंह आगे की तरफ बढ़े और सभों को लिये हुए सामने वाले सुरङ्ग के रास्ते में घुसे । अब की दफे दोनों कुमार और कैदियों को बहुत ज्यादे चलना पड़ा और साथही इसके भूख प्यास की भी तकलीफ उठानी पड़ी । कई कोस का सफर करने के बाद जब वे लोग सुरङ्ग के बाहर निकले तो सुबह की सुपेदी

आसमान पर फैल चुकी थी इस लिये दोनों कुमारों ने अन्दाज़ से समझा कि अबकी दफे हमलोग चैादह या पन्द्रह घण्टे तक बराबर चलते रहे और जमानियां को बहुत दूर छोड़ आये॥

सुरङ्ग के बाहर निकल कर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने जिस सरजमीन में अपने को पाया वह बहुत ही दिलचस्प और सुहावनी घाटी थी। चारों तरफ कम ऊंची, सुन्दर और हरीभरी पहाड़ियां और बीच में सरसब्ज़ मैदान तथा बरसाती पानी से बचने के लिये एक स्थान भी था। इस सरजमीन को इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने बहुत ही पसन्द किया और इन्द्रजीतसिंह ने उन कैदियों की तरफ देख के कहा, "अब तुमलोग अपने को आज़ाद और तिलिस्मी कैदखाने से बाहर निकला हुआ समझो, थोड़ी ही देर में हम लोग तुम्हें इस घाटी के बाहर पहुंचा देंगे फिर जहां तुम लोगों की इच्छा हो चले जाना॥"

इसके जवाब में उन कैदियों ने हाथ जोड़ के कहा—"अब हम लोग इन चरणों को छोड़ नहीं सकते, यद्यपि अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिये हमलोग बेताब हो रहे हैं परन्तु हमारी यह अभिलाषा भी आपकी कृपा बिना पूरी नहीं हो सकती अस्तु हम लोग आपके साथ ही साथ राजा बीरेन्द्रसिंह के दरबार में चलने की इच्छा रखते हैं॥"

दोनों कुमारों ने उनकी प्रार्थना मञ्जूर कर ली और इसके बाद जो कुछ अनूठी कार्रवाई उन लोगों ने की उसे दूसरे दिन बयान करूंगा॥

इतना कह कर नकाबपोश चुप होगया। और अपने घर जाने की इच्छा से राजा साहब का मुंह देखने लगा। यद्यपि महाराज इसके आगे भी इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल सुना चाहते थे

परन्तु इस समय नकाबपोशों को छुट्टी दे देना ही उचित जान कर घर जाने की इजाजत देदी और दर्बार भी बर्खास्त किया॥

दसवां बयान।

अब देखना चाहिये कि देवीसिंह का साथ छोड़ के भूतनाथ ने क्या किया। भूतनाथ वास्तव में विचित्र ऐयार है और वह अपने फन में बड़ा ही तेज और होशियार है वह जिस काम के पीछे पड़ जाता है उसे कुछ न कुछ सीधा किये बिना नहीं रहता। इसी तरह वह निडर भी परले सिरे का कहा जा सकता है। यद्यपि आजकल उसे इस बात की धुन चढ़ी हुई है कि मेरे दो एक पुराने ऐब जिस के सबब से ऐयारी में धब्बा लगता है छिपे रह जायँ और मैं किसी न किसी तरह राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार बन जाऊँ, मगर फिर भी ऐयारी के समय अपना काम निकालने की धुन में जान तक की पर-वाह नहीं करता। इस मौके पर भी उसने नकाबपोशों का पीछा करके जो कुछ किया उसके विषय में भी यही कहने की इच्छा होती है कि उसने अपनी जान को हथेली पर ले कर यह काम किया जिसका हाल हम इस बयान में लिखते हैं॥

सन्ध्या होने में अभी घण्टे भर की देर है। उस खोह के मुहाने पर जिसके अन्दर नकाबपोशों का मकान है या जिसमें भूतनाथ और देवीसिंह नकाबपोशों का पता लगाते हुए गये थे हम दो नकाब-पोशों को ढाल तलवार लगाये हाथ में हाथ दिये टहलते हुए देखते हैं। इन दोनों नकाबपोशों की पोशाक और नकाब साधारण थी और हाथ पैर से भी वे दोनों दुबले पतले और कमजोर मालूम पड़ते थे। यह नहीं कह सकते कि ये दोनों यहां कितनी देर से और किस फिक्र

में घूम रहे हैं तथा आपुस में किस ढङ्ग की बातें कर रहे हैं, हां इनके हाव भाव से इस बात का पता जरूर लगता है कि ये दोनों किसी के आने का इन्तजार कर रहे हैं। ऐसे समय में एक आदमी इनके पास आ कर खड़ा हो गया जो सूरत शक्ल से बिलकुल उजड्ड और देहाती मालूम पड़ता था। हाथ पैर और चेहरे पर गर्द पड़े रहने से यह भी जान पड़ता था कि यह कुछ दूर से सफर करता हुआ आ रहा है॥

दोनों नकाबपोशों ने उसकी सूरत गौर से देखी और एक ने पूछा कि "तू कौन है और क्या चाहता है?"

उस देहाती ने नकाबपोश की बात का कुछ जवाब न दिया और इशारे से बताया कि "यहां से थोड़ी ही दूर कोई किसी को मार रहा है।" पुनः एक नकाबपोश ने पूछा कि "क्या तू गूंगा है?" इसका भी कुछ जवाब न दे कर फिर पहिले की तरह इशारे में कुछ समझाया और अपने साथ आने के लिये कहा॥

दोनों नकाबपोशों को विश्वास होगया कि यह गूंगा और बहरा और साथ ही इसके उजड्ड तथा बेवकूफ भी है। अस्तु एक नकाबपोश ने अपने साथी से कहा कि "इसके साथ चल कर देखो तो सही क्या कहता है॥"

दोनों नकाबपोश उसके साथ चलने के लिये तैयार होगये और वह भी यह इशारा कर के कि तुम्हें थोड़ी ही दूर चलना पड़ेगा उन्हें अपने साथ लिये हुए पूरब की तरफ रवाना हुआ॥

थोड़ी ही दूर जाने के बाद उस देहाती ने जमीन पर गिरे हुए कई रुपै और दो तीन जनानी जेवर नकाबपोशों को दिखाये जिससे उन्हें ताज्जुब हुआ और उन्होंने उस देहाती को जेवर और रुपै उठा लेने के लिये कहा। देहाती ने ऐसा करने से इन्कार किया और उन्हें

आगे चलने के लिये कहा ॥

दोनों नकाबपोश भी उन जेवरों और रुपयों को उसी तरह छोड़ उस देहाती के पीछे २ चल कर और आगे बढ़े और कुछ दूर चलने पर पुनः दो तीन जेवर और एक कटा हुआ हाथ जमीन पर देखा। ताज्जुब में आकर एक नकाबपोश ने दूसरे से कहा, "यह क्या मामला है? हमारे पड़ोस ही में कोई बुरी घटना भई हुई जान पड़ती है॥"

दूसरा०। रङ्ग तो ऐसा ही मालूम पड़ता है॥

पहिला०। यह हाथ भी किसी औरत का जान पड़ता है शायद यह जेवर भी उसी के हों॥

दूसरा०। बेशक ये जेवर उसी के होंगे। इस बात का पता लगा के अपने सर्दार को इत्तला देनी चाहिये॥

ये बातें हो ही रही थीं कि आगे से किसी औरत के रोने की आवाज इन दोनों नकाबपोशों ने सुनी और ताज्जुब में आकर आगे की तरफ बढ़े॥

इसी तरह चल कर वे दोनों अपने स्थान से दूर निकल गये और अन्त में एक औरत को जोर जोर से रोते और चिल्लाते देखा। वह औरत साधारण न थी बल्कि किसी अमीर के घर की मालूम पड़ती थी, उसके बदन में खुशबूदार फूलों के जेवर पड़े हुए थे और वह दोनों हाथों से अपना सर पीट २ के रो रही थी। उसके सामने एक दूसरी औरत की लाश पड़ी हुई थी और उसके बदन में भी खुशबूदार फूलों के जेवर पड़े हुए थे। उस लाश के बदन से खून बह रहा था और उसका एक हाथ भी कटा हुआ था॥

थोड़ी देर तक ताज्जुब के साथ देखने के बाद एक नकाबपोश ने उस औरत से पूछा, "इसे किसने मारा और यह तेरी कौन है।" इसके जवाब में उस औरत ने अपनी आंचल से आंसू पोंछ करकहा,

"मैं क्या बताऊं कि इसे किसने मारा तुम्हीं ने या तुम्हारे किसी साथी ने इसे मारा है, अब तुम मुझे भी मार कर छुट्टी करो जिससे अब बखेड़ा ही तै हो जाय॥"

एक नकाब०। (ताज्जुब और कुछ क्रोध के साथ) क्या हमलोग ऐसे नामर्द और पतित हैं जो औरतों के खून से अपना हाथ रङ्गेंगे?

औरत०। मैं तो ऐसा ही सोचती हूं जब खुद मुझ पर बीत चुकी और बीत रही है तब मैं और क्या कहूं? शायद आप न हों मगर आप ही की तरह पर्दे में मुंह छिपाने वालों ने इसे मारा है। चाहे वह मर्द हो या औरत मगर याद रहे कि मैं इसका बदला लिये बिना न रहूंगी या इसके साथ अपनी जान भी दे दूंगी॥

नकाबपोश०। मगर यह तू कह किससे रही है और तुझे क्योंकर यकीन हो गया कि इसे हमारे साथियों ने मारा?

औरत०। मैं तुम्हीं लोगों से कह रही हूं और मुझे अच्छी तरह यकीन है कि इसे तुम्हारे साथियों ने मारा है॥

नकाबपोश०। (क्रोध से) क्या कहूं तू औरत है तुझ पर हाथ छोड़ नहीं सकता, अगर कोई मर्द ऐसी बातें करता तो उसे इस कहने का मजा चखा देता॥

औरत०। शायद मुझे धोखा हुआ हो मगर इसमें कोई शक नहीं कि जिसने इसे मारा था वह तुम्हारी शक्ल का था॥

नकाब०। तू अपना और इस औरत का हाल तो कह शायद उस से कुछ पता लगे॥

औरत०। मैं इस जगह कुछ भी नहीं कहने की, अगर तुम उन लोगों में से नहीं हो जिसने मुझे सताया है और असल में मर्द हो तो अपने सर्दार के पास ले चलो उसी जगह मैं सब हाल कहूंगी॥

नकाब०। हमारे सर्दार के पास तू नहीं जा सकती॥

औरत० । तो अब मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ किया है सब तुम्हीं लोगों ने किया ॥

इसी तरह की बातें देर तक होती रहीं, यद्यपि वे दोनों नकाबपोश उस औरत को अपने सर्दार के पास ले चलना या उसे अपना पता देना नहीं चाहते थे मगर उस औरत ने ऐसी तीखी तीखी बातें कहीं कि वे दोनों जोश में आ गये और उसे तथा लाश को उठाकर अपने खोह के मुहाने पर चलने के लिये तैयार हो गये और लाश उठाकर ले चलने में मदद करने के लिये उस गूंगे देहाती से इशारे में कहा मगर उसने ऐसा करने से साफ इन्कार किया । जब उन दोनों नकाबपोशों ने उसे डांटा तब वह डरकर वहां से भागा और कुछ दूर पर जाकर खड़ा होगया ॥

फिर उन दोनों नकाबपोशों ने उस गूंगे से कुछ कहना उचित न जाना और जोश में आकर खुद उस लाश को उठाकर ले चलने के लिये तैयार होगये और उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि इस औरत की जुबानी कोई अनूठी ही बात सुनने में आवेगी ॥

हम ऊपर बयान कर चुके हैं कि उस औरत की लाश भी फूलों के गहनों से भरी हुई थी, अब इतना और कह देना है कि उन फूलों पर बेहोशी की तेज दवा इस ढङ्ग पर छिड़की हुई थी कि कुछ मालूम नहीं होता था और खुशबू के साथ उस दवा का गुन भी धीरे धीरे फैल रहा था । यद्यपि फूलों की फैलने वाली खुशबू के सबब नकाबपोशों पर उसका कुछ असर हो भी चुका था मगर उन्हें इस बात का खयाल कुछ भी न था ॥

जब उन दोनों ने उस लाश को उठा लिया और फूलों की खुशबू को तेजी के साथ दिमाग में घुसने का मौका मिला तब उन दोनों नकाबपोशों ने समझा कि हमारे साथ ऐयारी की गई । मगर अब

कर ही क्या सकते थे ? तुरत सर में चक्कर आने लगा जिसके सबब से वे दोनों बैठ गये और साथ ही इसके बेहोश हो कर जमीन पर लम्बे होगये। उस समय उस औरत की लाश भी चैतन्य होगई और वह देहाती गूंगा भी उनकी खोपड़ी पर आ मौजूद हुआ। यह हाल देखकर उस औरत ने देहाती गूंगे से कहा, "अब क्या करना चाहिये?"

देहाती०। बस अब हमारा काम हो गया। अब इन्हें मालूम हो जायगा कि भूतनाथ कोई साधारण ऐयार नहीं है॥

औरत०। मगर अब भी आपको इस बात के सोचने का मौका है कि दोनों नकाबपोश आपसे रञ्ज न हो जायँ और इस बखेड़े का नतीजा बुरा न निकले॥

देहा०। इन बातों को मैं खूब सोच चुका हूं। उन दोनों नकाबपोशों को जो हमारे राजा साहब के दर्बार में जाया करते हैं मैं रञ्ज होने का मौका ही न दूंगा और इन दोनों में से भी केवल एक ही को उठा के ले जाऊंगा और अपना काम निकाल लूंगा॥

इतना कहकर उस देहाती ने दोनों नकाबपोशों के चेहरे पर से नकाब उलट दी और असली सूरत पर निगाह पड़ते ही चौंक कर औरत की तरफ देखा और कहा, "ओफ ओह! ये सूरतें तो वे ही हैं जिन्होंने दर्बारेआम में दारोगा और जैपाल को बदहवास कर दिया था। पहिले दिन जब एक नकाबपोश ने अपने चेहरे पर से नकाब हटाई थी तो दारोगा के सर में चक्कर * आ गया था, और दूसने दिन जब दूसरे नकाबपोश ने सूरत दिखाई तो जयपाल की जान शरीर से निकलने की तैयारी करने लगी थी †॥"

---

* देखो सन्तति हिस्सा १८ बयान १०॥

† देखो सन्तति हिस्सा १८ बयान १२॥

इसी बीच में वह औरत भी उठकर हर तरह से दुरुस्त होगई थी जिसे थोड़ी देर पहिले दोनों नकाबपोश मुर्दा समझ कर उठा ले चले थे। असल में उसका हाथ कटा हुआ न था, असली हाथ कपड़े के अन्दर छिपा हुआ था और एक बनावटी हाथ कटा हुआ दूसरा लगा कर दिखा दिया गया था ॥

ऊपर की बातचीत से हमारे पाठक समझ ही गये होंगे कि देहाती महाशय असल में भूतनाथ हैं और दोनों औरतें उसके नौजवान शागिर्द तथा मर्द हैं ॥

भूतनाथ की आखिरी बात सुन कर उसके एक शागिर्द ने जो औरत की सूरत में था कहा, "क्या ये ही दोनों हमारे महाराज के दर्बार में जाया करते हैं ?"

भूत०। दर्बार में जब नकाबपोशों ने सूरत दिखाई थी तब दो दफे इन्हीं दोनों की सूरतें देखने में आई थीं मगर हम यह नहीं कह सकते कि वहां जाने वाले दोनों नकाबपोश यही हैं, मेरा दिल यही गवाही देता है कि वे दोनों नकाबपोश कोई दूसरे ही हैं और जब दर्बार में जाते हैं तो केवल नकाब ही डाल कर नहीं बल्कि अपनी सूरत भी बदल कर जाते हैं और उस दिन इन्हीं की सी सूरत बदल कर गये थे॥

शागिर्द०। बेशक ऐसा ही हुआ ॥

भूत०। खैर अब मैं इन दोनों में से एक को छोड़ न जाऊंगा जैसा कि पहिले इरादा कर चुका था बल्कि दोनों ही को उठाकर ले जाऊंगा और असल भेद मालूम करके छोड़ूंगा ॥

इतना कहके भूतनाथ ने ऐयारों के ढङ्ग पर उन दोनों नकाबपोशों की गठड़ी बांधी और तीनों आदमी मिलजुल कर उन्हें उठा लेगये ॥

ग्यारहवां बयान।

नकाबपोशों के चले जाने बाद जब केवल घरवाले ही वहां रह गये तब राजा बीरेन्द्रसिंह ने अपने पिता से तारासिंह की बाबत जो कुछ हाल हम ऊपर लिख आये हैं कुछ घटा बढ़ा कर बयान किया और इसके बाद कहा कि "तारासिंह नकाबपोशों के सामनेही लौट कर आगया था जिससे अभी तक यह पूछने का मौका न मिला कि वह कहां गया था और वह तस्वीर कहां से मिली थी जो उसने अपनी मां को दी थी॥"

इतना कह कर बीरेन्द्रसिंह चुप हो गये और देवीसिंह ने वह कपड़े वाली तस्वीर (जो चम्पा ने दी थी) महाराज सुरेन्द्रसिंह के सामने रख दी। सुरेन्द्रसिंह ने बड़े गौर से उस तस्वीर को देखा और इसके बाद तारासिंह से पूछा :—

सुरेन्द्र०। निस्सन्देह यह तस्वीर किसी अच्छे कारीगर के हाथ की बनी हुई है, तुम्हें कहां से मिली?

तारा०। मैं स्वयम् इस तस्वीर का हाल अर्ज करने वाला था परन्तु इसके सम्बन्ध की कई ऐसी बातों का जानना आवश्यक था जिनके बिना इसका पूरा भेद मालूम नहीं हो सकता अतएव मैं उन्हीं बातों के जानने की फिक्र में पड़ा हुआ था और इसी सबब से अभी तक कुछ अर्ज करने की नौबत नहीं आई॥

तेज०। तो क्या तुम्हें इसका पूरा पूरा भेद मालूम होगया?

तारा०। जी नहीं, मगर कुछ कुछ मालूम हुआ है॥

तेज०। तो इस काम मे तुमने अपने साथियों से मदद क्यों नहीं ली?

तारा०। अभी तक मदद की जरूरत नहीं पड़ी थी मगर हां अब मदद लेनी पड़ेगी॥

बीरेन्द्र०। खैर बताओ कि इस तस्वीर को तुमने क्योंकर पाया ?

तारा० । (इधर उधर देख कर) भूतनाथ की स्त्री से ॥

तारासिंह की इस बात को सुन कर सब कोई चौंक पड़े, खास कर देवीसिंह को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और उसने हैरत की निगाह से अपने लड़के तारासिंह की तरफ देखा और पूछाः—

देवी० । भूतनाथ की स्त्री तुम्हें कहां मिली ?

तारा० । उसी जङ्गल में जिसमें आपने और भूतनाथ ने उसे देखा था, बल्कि उसी झोपड़ी में जिसमें भूतनाथ और आप उसके साथ गये थे और लाचार हो कर लौट आये थे । आपको यह सुन कर ताज्जुब होगा कि वह वास्तव में भूतनाथ की स्त्री थी ॥

देवी० । (आश्चर्य्य से) वह वास्तव में भूतनाथ की स्त्री थी !!

तारा०। जी हां, आप और भूतनाथ नकाबपोशों के फेर में यद्यपि कई दिनों तक परेशान हुए परन्तु उतना हाल मालूम न कर सके जितना मैं जान आया हूं ॥

इस समय दर्बार में आपुस वालों के सिवाय कोई गैर आदमी ऐसा न था जिसके सामने इस तरह की बातों के कहने सुनने में किसी तरह का खयाल होता अतएव बड़ी उत्कण्ठा के साथ सब कोई तारासिंह की बातें सुनने के लिये तैयार होगये और देवीसिंह का तो कहना ही क्या जिसका दिल तूफान में पड़े हुए जहाज की तरह हिंडोले खा रहा था । उसे यकायक यह खयाल पैदा हुआ कि अगर वह वास्तव में भूतनाथ की स्त्री थी तो दूसरी औरत भी जरूर चम्पा थी जिसे नकाबपोशों के मकान में देखा था, अस्तु उसने बड़े ताज्जुब के साथ अपने लड़के तारासिंह से पूछा—" क्या तुम बता सकते हो कि जिन दो औरतों को हमने नकाबपोशों के मकान में देखा था वे कौन थीं ?"

तारा०। उनमें से एक तो जरूर भूतनाथ की स्त्री थी मगर दूसरी के बारे में अभी तक कुछ पता नहीं लगा॥

देवी०।(कुछ सोच कर) तो दूसरी भी जरूर तुम्हारी मां होगी?

तारा०। शायद ऐसा हो मगर मुझे विश्वास नहीं होता॥

तेज०। तुम्हें यह कैसे निश्चय हुआ कि वह वास्तव में भूतनाथ की स्त्री है?

तारा०। उसने स्वयम् भूतनाथ की स्त्री होना स्वीकार किया बल्कि और भी बहुत सी बातें ऐसी कहीं जिससे किसी तरह का शक नहीं रहा॥

देवी०। और तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि नकाबपोशों के घर में जाकर हम लोगों ने किसे देखा, या जङ्गल में भूतनाथ की स्त्री हमलोगों को मिली थी और हम लोग उसके पीछे पीछे एक झोपड़ी में जाकर सूखे हाथ लौट आये?

तारा०। यह सब हाल मुझे बखूबी मालूम है और उस समय मैं भी उसी जङ्गल में था जिस समय आपने भूतनाथ की स्त्री को देखा था और उसके पीछे पीछे गये थे। इस समय आप यह सुन कर और भी ताज्जुब करेंगे कि आप से अलग हो कर भूतनाथ ने उसी दिन अर्थात् कल सन्ध्या के समय उन दोनों नकाबपोशों को गिरफ़ार कर लिया जिनकी सूरत यहां दरबार में देख कर दारोगा और जयपाल बदहवास हो गये थे॥

बीरेन्द्र०। (ताज्जुब से) हैं! अगर ऐसा है तो कह सकते हैं कि भूतनाथ ने बहुत बुरा किया। मगर वे दोनों नकाबपोश तो आज भी यहां आये थे जिनका जिक्र तुम कर रहे हो॥

तारा०। जी हां, इन्हें तो मैं अपनी आंखों ही से देख चुका हूं मगर मेरे कहने का मतलब यह है कि भूतनाथ ने कल जिन दोनों

नकाबपोशों को गिरफ़ार किया है उनकी सूरतें ठीक वैसी ही हैं जैसी दारोगा और जयपाल ने यहां दर्बार में देखी थी, चाहे वे लोग कोई भी हों॥

तेज०। और भूतनाथ ने उन्हें गिरफ़ार कहां पर किया?

तारा०। उसी खोह के मुहाने ही पर भूतनाथ ने उन्हें धोखा दिया जिसमें नकाबपोश लोग रहते हैं॥

देवी०। मालूम होता है कि हमलोगों की तरह तुम भी कई दिनों से नकाबपोशों की खोज में पड़े हो॥

तारा०। खोज में नहीं बल्कि फेर में॥

बीरेन्द्र०। खैर तुम खुलासे तौर पर सब हाल बयान कर जाओ इस तरह पूछने और कहने से काम न चलेगा॥

तारा०। जो आज्ञा, मगर मेरा हाल कुछ बहुत लम्बा चौड़ा नहीं है, केवल इतना ही कहना है कि मैं भी पांच सात दिन से उन नकाबपोशों के फेर में पड़ा हूं और इत्तफाक से मैं भी उस खोह के अन्दर जा पहुंचा जिसमें वे लोग रहते हैं (कुछ सोच कर और जीतसिंह की तरफ देख कर) अगर कोई हर्ज न हो तो दो घण्टे के बाद मुझसे मेरा हाल पूछा जाय॥

जीत०। (महाराज की तरफ देख कर और कुछ इशारा पा कर) खैर कोई चिन्ता नहीं मगर यह बताओ कि दो घण्टे के अन्दर तुम क्या काम करोगे?

तारा०। कुछ भी नहीं मैं केवल अपनी मां से मिल कर स्नान ध्यान से छुट्टी पा लूंगा॥

देवी०। (धीरे से) आजकल के लड़के भी कुछ विचित्र ही पैदा होते हैं, खास करके ऐयारों के!!

इसके जवाब में तारासिंह ने अपने बाप देवीसिंह की तरफ देखा

और मुस्कुरा कर सर झुका लिया। यह बात देवीसिंह को कुछ बुरी मालूम हुई मगर कुछ बोलने का मौका न देख कर चुप रह गया॥

तेज०। (तारा से) आज जब हम लोग तुम्हारे न मिलने से परेशान थे तो हमारी परेशानी को देखकर नकाबपोश ने कहा था कि "तारासिंह के लिये आपको तरद्दुद न करना चाहिये, आशा है कि वह घण्टे भर के अन्दर ही यहां आ पहुंचें।" और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही, तो क्या नकाबपोशों को तुम्हारा हाल मालूम था? यह बात नकाबपोश से भी पूछी गई थी मगर उसने कुछ जवाब न दिया और कहा कि इसका जवाब तारा ही देगा॥

तारा०। नकाबपोशों की सभी बातें ताज्जुब की होती हैं, मैं नहीं जानता कि उन्हें मेरा हाल क्योंकर मालूम हुआ॥

तेज०। क्या तुम्हें इस बात की खबर है कि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने तुम्हें और भैरोसिंह को बुलाया है?

तारा०। नहीं॥

तेज०। (कुमार की चीठी तारा को देकर) लो इसे पढ़ो॥

तारा०। (चीठी पढ़ कर) नकाबपोशों ही के हाथ यह चीठी आई होगी॥

तेज० हां और उन्हीं नकाबपोशों के साथ तुम दोनों को जाना भी पड़ेगा॥

तारा०। जब मर्जी होगी हम दोनों चले जायँगे॥

इसके बाद महाराज की आज्ञानुसार दर्बार बर्खास्त किया गया और सब कोई अपने अपने ठिकाने चले गये। तारासिंह भी महल में अपनी मां से मिलने के लिये चला गया और घण्टे भर से ज्यादे देर तक अपनी मां के पास बैठा बातचीत करता रहा इसके बाद जब महल से बाहर आया तो सीधे जीतसिंह के डेरे में चला गया और

जब मालूम हुआ कि वे महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास गये हुए हैं तो तारासिंह भी महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास चला गया ॥

हम यह नहीं कह सकते कि महाराज सुरेन्द्रसिंह, जीतसिंह और तारासिंह में देर तक क्या क्या बातें होती रहीं, हां इसका नतीजा यह जरूर निकला कि तारासिंह को पुनः अपना हाल किसी से न कहना पड़ा अर्थात् महाराज ने उसे अपना हाल बयान करने से माफी दे दी और तारा को भी जो कुछ कहना सुनना था महाराज से कह सुन कर छुट्टी पा ली। औरों को तो इस बात का ऐसा खयाल न हुआ मगर देवीसिंह को यह चालाकी बुरी मालूम हुई और उसे निश्चय हो गया कि तारासिंह और चम्पा दोनों मां बेटे मिले हुए हैं और साथही इसके बड़े महाराज इस भेद को जानते हैं मगर ताज्जुब है कि ऐयारों पर प्रगट नहीं करते.इसका कोई न कोई सबब जरूर है और इस लिये देवीसिंह की हिम्मत न पड़ी कि अपने लड़के को कुछ कहे या डांटे ॥

दो घण्टे रात जा चुकी थी जब महाराज सुरेन्द्रसिंह ने बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को अपने पास बुलवाया। उस समय जीतसिंह पहिले ही से महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास बैठे हुए थे, अस्तु जब दोनों आदमी वहां आगये तो दो घण्टे तक तारासिंह के बारे में बातचीत होती रही और इसके बाद महाराज आराम करने के लिये पलङ्ग पर चले गये। बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह भी अपने कमरे में चले आये ॥

बारहवां बयान।

दूसरे दिन अपने मामूली समय पर पुनः दोनों नकाबपोशों के आने की इत्तला मिली। उस समय जीतसिंह, बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह राजा गोपालसिंह बलभद्रसिंह, इन्द्रदेव और बद्रीनाथ वगैरह अपने यहां के कुल ऐयार लोग भी महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास बैठे हुए थे और उन्हीं नकाबपोशों के बारे में तरह तरह की बातें हो रही थीं आज्ञानुसार दोनों नकाबपोश हाजिर किये गये और फिर इस तरह बातचीत होने लगी :—

तेज०। (नकाबपोशों की तरफ देख कर) तारासिंह की जुबानी सुनने में आया है कि "भूतनाथ ने आपके दो आदमियों को ऐयारी से गिरफ़ार कर लिया है॥"

एक नकाबपोश०। जी हां, हमलोगों को भी इस बात की खबर लग चुकी है मगर कोई चिन्ता की बात नहीं है। गिरफ़ार होने और बेइज्जती उठाने पर भी वे दोनों भूतनाथ को किसी तरह की तकलीफ न देंगे और न भूतनाथ ही उन्हें किसी तरह की तकलीफ दे सकेगा। यद्यपि उस समय भूतनाथ ने उन दोनों को नहीं पहिचाना मगर जब उनका परिचय पावेगा और पहिचानेगा तो उसे बड़ा ही ताज्जुब होगा। जो हो मगर भूतनाथ को ऐसा करने की जरूरत न थी। ताज्जुब है कि ऐसे फजूल कामों में भूतनाथ का जी क्यों कर लगता है। ऐयारी करके जिस समय भूतनाथ ने दोनों को गिरफ़ार किया था उस समय उन दोनों की सूरत देखने के साथ ही छोड़ देना था क्योंकि एक दफे भूतनाथ इस दरबार में उन दोनों सूरतों को देख चुका था और जानता था कि आखिर इन दोनों का हाल मालूम होहीगा। अब उन दोनों को गिरफ़ार करके ले जाने से

भूतनाथ की बेचैनी कम न होगी बल्कि और ज्यादे होगी ॥

तेज० । हां हम लोगों ने भी यही सुना था कि जिन सूरतों को देख कर मायारानी का दारोगा और जयपाल बदहवास हो गये थे उन्हीं दोनों को भूतनाथ ने गिरफ़ार किया है ॥

नकाब० । बेशक ऐसाही है ॥

तेज० । तो क्या वे दोनों स्वयम् इस दर्बार में आये थे या आप लोगों ने उन दोनों के ऐसी सूरत बनाई थी ?

नकाब०। जी नहीं,वे लोग स्वयम् यहां नहीं आये थे बल्कि हमही दोनों उन दोनों की तरह अपनी सूरत बनाये हुए थे । दारोगा और जयपाल इस बात को समझ न सके ॥

तेज० । असल में वे दोनों कौन हैं जिन्हें भूतनाथ ने गिरफ़ार किया है ?

नकाब० । (कुछ सोच कर) आज नहीं, मगर हो सकेगा तो दो एक दिन में मैं आपकी इस बात का जवाब दूंगा क्योंकि इस समय हमलोग ज्यादे देर तक यहां ठहरना नहीं चाहते । इसके अतिरिक्त सम्भव है कि कल तक भूतनाथ भी उन दोनों को लिये हुए यहां तक आ जाय । अगर भूतनाथ अकेला ही आवे तो हुक्म दीजियेगा कि उन दोनों को भी यहां ले आवे,उस समय कम्बख़्त दारोगा और जैपाल के सामने उन दोनों का हाल सुनने से आपलोगों को विशेष आनन्द मिलेगा । मैं भी (कुछ रुक कर) मौजूद ही रहूंगा जो बात समझ में न आवेगी मैं समझा दूंगा (कुछ रुक कर) हां भैरोसिंह और तारासिंह के विषय में क्या आज्ञा होती है ? आज वे दोनों हमारे साथ भेजे जायँगे ? क्योंकि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को उन दोनों के बिना सख्त तकलीफ है ॥

सुरे०। हां,भैरो और तारा तुम दोनों के साथ जाने के लिये तैयार हैं॥

इतना कह कर महाराज ने भैरोसिंह और तारासिंह की तरफ देखा जो उसी दर्बार में बैठे हुए नकाबपोशों की बातें सुन रहे थे। महाराज को अपनी तरफ देखते देख दोनों भाई उठ खड़े हुए और महाराज को सलाम करने बाद दोनों नकाबपोशों के पास आ कर बैठ गये॥

नकाब०। (महाराज से) तो अब हम लोगों को आज्ञा मिलनी चाहिये॥

सुरेन्द्र०। क्या आज दोनों लड़कों का हाल हम लोगों को न सुनाओगे?

नकाब० (हाथ जोड़ कर) जी नहीं, क्योंकि देर हो जाने से आज भैरोसिंह और तारासिंह को इन्द्रजीतसिंह के पास हम लोग पहुंचा न सकेंगे॥

सुरेन्द्र०। खैर क्या हर्ज है। कल तो तुम लोगों का आना होहीगा?

नकाब०। अवश्य॥

इतना कह कर दोनों नकाबपोश उठ खड़े हुए और सलाम कर के बिदा हुए। भैरोसिंह और तारासिंह भी उनके साथ साथ रवाना हुए॥

तेरहवां बयान ।

रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है, पहाड़ के एक सुनसान दर्रे में जहां किसी आदमी का जाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव जान पड़ता था, सात आदमी बैठे हुए किसी के आने का इन्तजार कर रहे हैं और उन लोगों के पास ही एक लालटेन जल रही है। यह स्थान चुनारगढ़ के तिलिस्मी मकान से लगभग छः सात कोस की दूरी पर होगा। यह दो पहाड़ों के बीच वाला दर्रा बहुत बड़ा, पेचीला, ऊँचा नीचा और ऐसा भयानक था कि साधारण मनुष्य एक सायत के लिये भी वहां खड़ा रह कर अपने उछलते और कांपते हुए कलेजे को सम्हाल नहीं सकता था। इस दर्रे में बहुत सी गुफाएँ ऐसी हैं जिनमें सैकड़ों आदमी आराम से रह कर दुनियादारों की आंखों से बल्क बहम और गुमान से भी अपने को छिपा सकते हैं। इसी से समझ लेना चाहिये कि यहां ठहरने या बैठने वाला आदमी साधारण न होगा बल्कि बड़े जीवट और कड़े दिल का आदमी होगा॥

ये सातों आदमी, जिन्हें हम बेफिक्री के साथ बैठे देखते हैं भूतनाथ के साथी हैं और उसी की आज्ञानुसार ऐसे स्थान में अपना घर बनाये हुए हैं। इस समय भूतनाथ यहां आने वाला है अस्तु ये लोग उसी का इन्तजार कर रहे हैं॥

इसी समय भूतनाथ भी उन दोनों नकाबपोशों को जिन्हें आज धोखा दे कर गिरफ़ार किया था लिये हुए आ पहुंचा। भूतनाथ को देखते ही वे लोग उठ खड़े हुए और बेहोश नकाबपोशों की गठड़ी उतारने में सहायता दी॥

वे दोनों बेहोश ज़मीन के ऊपर सुला दिये गये और इसके बाद

भूतनाथ ने अपने एक साथी की तरफ देख कर कहा, "थोड़ा पानी ले आओ हम इन दोनों के चेहरे को धोकर देखा चाहते हैं॥"

इतना सुनते ही एक आदमी दौड़ता हुआ चला गया और थोड़ी ही दूर पर एक गुफा के अन्दर घुस कर पानी का भरा हुआ लोटा लेकर चला आया। भूतनाथ ने बड़ी होशियारी से (जिसमें उनका कपड़ा भींगने न पावे) दोनों नकाबपोशों का चेहरा धोकर लालटैन की रोशनी में गौर से देखा मगर किसी तरह का फर्क न पा कर धीरे से कहा, "इन लोगों का चेहरा रङ्गा हुआ नहीं है॥"

इसके बाद भूतनाथ ने उन दोनों को लखलखा सुंघाया जिससे वे तुरत ही होश में आ कर उठ बैठे और घबराहट के साथ चारों तरफ देखने लगे। लालटैन की रोशनी में भूतनाथ के चेहरे पर निगाह पड़ते ही उन दोनों ने भूतनाथ को पहिचान लिया और हँस कर भूतनाथ से कहा, "बहुत खासे! ये जाल आप ही के रचे हुए थे?"

भूत०। जी हां, मगर आप इस बात का खयाल भी अपने दिल में न लाइयेगा कि मैं आपको दुश्मनी की नीयत से पकड़ लाया हूं॥

एक नकाबपोश०। (हँस कर) नहीं नहीं, यह बात हम लोगों के दिल में नहीं आ सकती और न तुम हमें किसी तरह का नुक्सान पहुंचा ही सकते हो मगर मैं यह पूछता हूं कि तुम्हें इस कार्रवाई के करने से फायदा ही क्या होगा?

भूतनाथ०। आपलोगों से किसी तरह का फायदा उठाने की भी मेरी नीयत नहीं है, मैं तो केवल दो चार बातों का जवाब पाकर अपनी दिलजमई कर लूंगा और इसके बाद आप लोगों को उसी ठिकाने पहुंचा दूंगा जहाँ से ले आया हूं॥

नकाब०। मगर तुम्हारा यह खयाल भी ठीक नहीं है क्योंकि तुम खूब समझ गये होगे कि हमलोग थोड़े ही दिन के लिये अपने

चेहरे पर नकाब डाले हुए हैं और अपना भेद प्रगट होने नहीं देते, इसके बाद हम लोगों का भेद छिपा भी नहीं रहेगा, अस्तु यह जान कर भी तुम्हें इतनी जल्दी क्यों पड़ी है और क्यों तुम्हारे पेट में चूहे कूद रहे हैं ? क्या तुम नहीं जानते कि स्वयम् महाराज सुरेन्द्रसिंह और राजा बीरेन्द्रसिंह हम लोगों का भेद जानने के लिये बेताब हो रहे थे मगर कई बातों पर ध्यान दे कर हम लोगों ने अपना भेद खोलने से इन्कार कर दिया और कह दिया कि कुछ दिन सब्र कीजिये फिर आपसे आप हम लोगों का भेद खुल जायगा, फिर तुम हो क्या चीज जो तुम्हारे कहने से हम लोग अपना भेद खोल देंगे ?

नकाबपोश की कुरुखी मिली हुई बातें सुन कर यद्यपि भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया मगर क्रोध करने का मैाका न देख कर चुप हो रहा और नरमी के साथ फिर बातचीत करने लगा ॥

भूत० । आपका कहना ठीक है, मैं इस बात को खूब जानता हूं मगर मैं उन भेदों को खोलना नहीं चाहता जिन्हें हमारे महाराज जानना चाहते हैं, मैं तो केवल दो चार मामूली बातें आप लोगों से पूछना चाहता हूं जिनका जवाब देने में न तो आपलोगों का भेद ही खुलता है और न आप लोगों का कोई हर्ज ही है । इसके अतिरिक्त मैं वादा करता हूं कि मेरी बातों का जो कुछ आप जवाब देंगे उसे मैं किसी दूसरे पर तब तक प्रगट न करूंगा जब तक आपलोग स्वयं अपना भेद न खोलेंगे ॥

नकाब० । (कुछ सोच कर) अच्छा पूछो क्या पूछते हो ?

भूत० । पहिली बात मैं यह पूछता हूं कि देवीसिंह के साथ मैं आपलोगों के मकान में गया था यह बात आपको मालूम है या नहीं ?

नकाब० । हां मुझे मालूम है ॥

भूत० । खैर, और दूसरी बात यह है कि वहां मैंने अपने लड़के

हरनामसिंह को देखा था, क्या वह वास्तव में हरनामसिंह ही था?

नकाब०। (कुछ क्रोध की निगाह से भूतनाथ को देख कर) हां था तो वही, फिर?

भूत०। (लापरवाही के साथ) कुछ नहीं मैं केवल अपना शक मिटाना चाहता था। अच्छा अब तीसरी बात यह जानना चाहता हूं कि वहां देवीसिंह ने अपनी स्त्री को और मैंने अपनी स्त्री को देखा था क्या वे दोनों वास्तव में हम दोनों की स्त्रियां थीं या कोई और?

नकाब०। चम्पा के बारे में तुम पूछने वाले कौन हो? हां अपनी स्त्री के बारे में तुम पूछ सकते हो सो मैं साफ कह देता हूं कि हां वह बेशक तुम्हारी स्त्री "रामदेई" थी॥

यह जवाब सुनते ही भूतनाथ चौंका और उसके चेहरे पर क्रोध और ताज्जुब की निशानी दिखाई देने लगी। भूतनाथ को निश्चय था कि उसकी स्त्री का असली नाम "रामदेई" किसी को मालूम नहीं है मगर इस समय एक अज्ञान आदमी के मुंह से उसका नाम सुन कर भूतनाथ को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और इस बात पर उसे क्रोध भी चढ़ आया कि मेरी स्त्री इन लोगों के पास क्यों आई? क्योंकि वह एक ऐसे स्थान पर थी जहां उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई जा नहीं सकता था, ऐसी अवस्था में निश्चय है कि वह अपनी खुशी से मकान के बाहर निकली और इन लोगों के पास आई। केवल इतना ही नहीं उसे इस बात के खयाल से और भी रञ्ज हुआ कि मुलाकात होने पर भी उसकी स्त्री ने उससे अपने को छिपाया बल्कि एक तौर पर धोखा दे कर बेवकूफ बनाया। अस्तु इस तरह की बातों को परेशानी और रञ्ज के साथ भूतनाथ सोचने लगा॥

नकाबपोश०। बस जो कुछ पूछना था पूछ चुके या अभी कुछ बाकी है?

भूत० । हां अभी कुछ और भी पूछना है ॥

नकाब० । तो जल्दी से पूछते क्यों नहीं सोचने क्या लग गये ?

भूत०। अब यह पूछना है कि मेरी स्त्री आप लोगों के पास कैसे आई ? और वह खुद आप लोगों के पास आई या उसके साथ जबरदस्ती की गई ?

नकाब०। अब तुम दूसरी राह चले, इस बात का जवाब हमलोग नहीं दे सकते ॥

भूत० । आखिर इसका जवाब देने में हर्ज ही क्या है ?

नकाबपोश०। हर्ज हो या न हो मगर हमारी खुशी भी तो कोई चीज है ॥

भूत० । (क्रोध में आ कर) ऐसी खुशी से काम नहीं चलता, आपको मेरी बातों का जवाब देना ही पड़ेगा ॥

नकाब०। (हँस कर) माना आप हम लोगों पर हुकूमत कर रहे हैं और जबरदस्ती पूछ लेने का दावा रखते हैं ॥

भूत०। क्यों नहीं ? आखिर आपलोग इस समय मेरे कब्जे में हैं ॥

इतना सुनतेही नकाबपोश को क्रोध चढ़ आया और उसने तीखी आवाज में कहा, "इस भरोसे न रहना कि हम लोग तुम्हारे कब्जे में हैं, अगर अब तक नहीं समझे थे तो अब समझ रक्खो कि उस आदमी का तुम कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते जो अपने हाथों से तुम्हारे छिपे हुए ऐबों की तस्वीर बनाने वाला है, हां हां बेशक तुमने वह तस्वीर भी हमारे मकान में देखी होगी अगर वास्तव में अपने लड़के हरनामसिंह को उस दिन देख लिया है तो ॥"

यह एक ऐसी बात थी जिसने भूतनाथ के होशहवाश दुरुस्त कर दिये । अब तक जिस जोश और दिमाग के साथ वह बैठा बातें कर रहा था वह बिलकुल जाता रहा और घबराहट तथा परेशानी ने

उसे अपना शिकार बना लिया। वह उठ कर खड़ा हो गया और बेचैनी के साथ इधर उधर टहलने लगा। बड़ी मुश्किल से कुछ देर में भूतनाथ ने अपने को सम्हाला और नकाबपोश की तरफ देख कर पूछा, "क्या वह तस्वीर आपके हाथ की बनाई हुई थी?"

नकाब०। बेशक॥

भूत०। तो आप ही ने उस आदमी को वह तस्वीर भी दी होगी जो मुझ पर उस तस्वीर की बाबत दावा करने के लिये कहता था?

नकाब०। इस बात का जवाब नहीं दिया जायगा॥

भूत०। तो क्या आप मेरे उन भेदों को दर्बार में खोला चाहते हैं?

नकाब०। अभी तक तो ऐसा करने का इरादा नहीं था मगर अब जैसा मुनासिब समझा जायगा किया जायगा॥

भूत०। उन भेदों को आपके अतिरिक्त आपकी मण्डली में और भी कोई जानता है?

नकाब०। इसका जवाब देना भी उचित नहीं जान पड़ता॥

भूत०। आप बड़ी जबर्दस्ती करते हैं॥

नकाब०। जबर्दस्ती करने वाले तो तुम थे मगर अब क्या होगया?

भूत०। (तेजी के साथ) मुमकिन है कि मैं अब भी जबरदस्ती का बर्ताव करूं, कोई क्या जान सकता है कि तुम लोगों को कौन उठा ले गया था॥

नकाब०। (हँस कर) ठीक है, तुम समझते हो कि यह बात किसी को मालूम न होगी कि हमलोगों को भूतनाथ उठा लेगया है॥

भूत०। (ज़ोर दे कर) ऐसा हई है, इसके विपरीत भी क्या कोई समझा सकता है?

इतने ही में थोड़ी दूर पर से यह आवाज आई, "हां समझा सकता है और विश्वास दिला सकता है कि यह बात छिपी हुई नहीं है॥"

अब तो भूतनाथ की कुछ विचित्र ही हालत हो गई, वह घबड़ा कर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी और उसने फुर्ती के साथ अपने आदमियों से कहा कि "पकड़ो पकड़ो जाने न पावे॥"

भूतनाथ के आदमी तेजी के साथ उसकी खोज में दौड़ गये मगर नतीजा कुछ भी न निकला अर्थात् वह आदमी गिरफ्तार न हुआ और भाग कर चला गया। यह हाल देख कर दोनों नकाबपोशों ने खिलखिला कर हँस दिया और कहा, "क्यों अब तुम अपनी क्या राय कायम करते हो?"

भूत०। हां मुझे विश्वास हो गया कि आपका यहां आना छिपा नहीं रह सकता अथवा हमारे पीछे २ आपका कोई आदमी यहां तक जरूर आया है, इसमें कोई शक नहीं कि आप लोग अपने काम में पक्के हैं कच्चे नहीं, मगर ऐयारी के फन में मैंने आपको दबा लिया॥

नकाब०। यह बात दूसरी है, तुम ऐयार हो और हमलोग ऐयारी नहीं जानते मगर इतना होने पर भी तुम लोग हमारे लिये दिन रात परेशान रहते हो और कुछ करते धरते नहीं बन पड़ता। मगर भूतनाथ! हम तुमसे फिर भी यही कहते हैं कि हम लोगों के फेर में न पड़ो और कुछ दिन सब्र करो, फिर आपसे आप हमलोगों का हाल मालूम हो जायगा। ताज्जुब है कि तुम इतने बड़े ऐयार होकर जल्दबाजी के साथ ऐसी ओछी कार्रवाई करके खुदबखुद काम बिगाड़ने की कोशिश करते हो! उस दिन दर्बार में तुम देख चुके हो और जान भी चुके हो कि हम लोग तुम्हारी तरफदारी करते हैं, तुम्हारे ऐबों को छिपाते हैं और तुम्हें एक विचित्र ढङ्ग से माफी दिला कर खास महाराज का कृपापात्र बनाया चाहते हैं, फिर क्या सबब है कि तुम हमलोगों का पीछा करके खाहनखाह हमारा क्रोध बढ़ा रहे हो?

भूत०। (गुस्से को दबा कर नर्मी के साथ) नहीं नहीं आप इस बात का गुमान भी न कीजिये कि मैं आप लोगें को दुःख दिया चाहता हूं और......

नकाब०। (बात काट के लापरवाही के साथ) दुःख देने की बात हम नहीं कहते क्योंकि तुम हम लोगें को दुःख देही नहीं सकते॥

भूत०। खैर न सही, मगर मैं अपने दिल की बात कहता हूं कि किसी बुरे इरादे से मैं आपलोगें का पीछा नहीं करता, क्योंकि मुझे इस बात का निश्चय हो चुका है कि आपलोग मेरे सहायक हैं, मगर क्या करूं अपनी स्त्री को आपके मकान में देख कर हैरान हूं और मेरे अन्दर तरह तरह की बातें पैदा हो रही हैं। आज मैं इसी इरादे से आप लोगें का यहां ले आया था कि जिस तरह हो सके अपनी स्त्री का असल भेद मालूम कर लूं॥

नकाब०। जिस तरह के क्या मानी? हम कह चुके हैं कि तुम किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुंचा सकते और न डरा धमका कर कुछ पूछ सकते हो क्योंकि हम लोग बड़े ही जबरदस्त हैं॥

भूत०। अब इतनी ज्यादे शेखी ते। न बघारिये, क्या आप ऐसे मजबूत हो गये कि हमारा हाथ कोई काम कर ही नहीं सकता?

नकाब०। हमारे कहने का यह मतलब नहीं है बल्कि यह है कि ऐसा करने से तुम्हें कोई फायदा नहीं हो सकता क्योंकि हमारे सङ्गी साथी सभी कोई तुम्हारे भेदों को जानते हैं मगर तुम्हें नुक्सान पहुंचाना नहीं चाहते। हमारे ही तरफ ध्यान देकर देख लो कि तुम्हारे हाथों दुःखी होकर भी तुम्हें दुःख देना नहीं चाहते और जो कुछ तुम कर चुके हो उसे सह कर बैठे हैं॥

भूत०। हमने आपको क्या दुःख दिया है?

नकाब०। अगर इस बात का जवाब देंगे ते। तुम औरें का ते।

नहीं मगर हमें पहिचान जाओगे ॥

भूत० । अगर आपको पहिचान भी जाऊंगा तो क्या हर्ज है ? मैं फिर प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूं कि जब तक आप स्वयम् अपना भेद न न खोलेंगे तब तक मैं अपने मुंह से कुछ भी किसी के सामने न कहूंगा, आप इस बात का निश्चय रखिये ॥

नकाब०। (कुछ सोच कर) मगर हमारा जवाब सुन कर तुम्हें गुस्सा चढ़ आवेगा और ताज्जुब नहीं कि खञ्जर का वार कर बैठो ॥

भूत०। नहीं नहीं, कदापि नहीं, क्योंकि मुझे अब निश्चय होगया है कि आपका यहां आना छिपा नहीं है और अगर आपके साथ कोई बुरा बर्ताव करूंगा तो किसी लायक न रहूंगा ॥

नकाब०। हां ठीक है और बेशक बात भी ऐसी ही है, (फिर कुछ सोच कर) अच्छा तो अब हम तुम्हारी उस बात का जवाब देते हैं सुनो और अपने कलेजे को अच्छी तरह सम्हालो ॥

भूत० । कहिये मैं हर तरह से सुनने के लिये तैयार हूं ॥

नकाब०। उस पीतल वाली सन्दूकड़ी में जिसके खुलने से तुम डरते हो, जो कुछ है वह हमारेही शरीर का खूनहै, उसे तुम हमारे ही सामने से उठा ले गये थे और हमारा ही नाम "दलीपशाह" है ॥

यह एक ऐसी बात थी कि जिसके सुनने की उम्मीद भूतनाथ को नहीं हो सकती थी और न भूतनाथ में इतनी ताकत थी कि ऐसी बातें सुन कर भी अपने को सम्हाले रहता। उसका चेहरा एकदम जर्द पड़ गया, कलेजा धड़कने लगा, हाथ पैर में कपकपी होने लगी और सकते की सी हालत में ताज्जुब के साथ नकाबपोश के चेहरे पर गौर करने लगा ॥

नकाब० । तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास हुआ या नहीं ?

भूत०। नहीं, तुम दलीपशाह कदापि नहीं हो सकते, यद्यपि मैंने दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है मगर उसके पहिचानने में गलती-नहीं कर सकता और न इस बात की उम्मीद हो सकती है कि दलीपशाह मुझे माफ कर देगा या मेरे साथ दोस्ती का बर्ताव करेगा॥

नकाब०। तब तो मुझे दलीपशाह होने के लिये कुछ और भी सबूत देना पड़ेगा और उस भयानक रात की तरफ इशारा करना पड़ेगा जिस रात को तुमने वह कार्रवाई की थी और जिस रात को घटाटोप अँधेरी छाई हुई थी, बादल गरज रहे थे, बार बार बिजली चमक चमक औरतों के कलेजे को दहला रही थी बल्कि उसी समय एक दफे बिजली तेजी के साथ चमक कर पास ही वाले खजूर के पेड़ पर गिरी थी और तुम स्याह कम्बल की घोघी लगाये आम की बाड़ी में घुस कर यकायक गायब हो गये थे। कहो कुछ और भी परिचय दूं या बस?

भूत०। (कांपती हुई आवाज में) बस बस बस, मैं ऐसी बातें सुना नहीं चाहता (कुछ रुक कर) मगर मेरा दिल यही कह रहा है कि तुम दलीपशाह नहीं हो॥

नकाबपोश०। हां! तब तो मुझे कुछ और भी कहना पड़ेगा। जिस समय तुम घर के अन्दर घुसे थे तुम्हारे हाथ में स्याह कपड़े का एक बहुत बड़ा लिफाफा था, जब मैंने तुम पर खञ्जर का वार किया था तब वह लिफाफा तुम्हारे हाथ से गिर पड़ा था और मैंने उसे उठा लिया था जो अभी तक मेरे पास मौजूद है अगर तुम चाहो तो मैं दिखा सकता हूं॥

भूतनाथ०। (जिसका बदन डर के बारे कांप रहा था) बस बस बस! मैं तुम्हें कह चुका हूं और फिर कहता हूं कि मैं ऐसी बातें सुना नहीं चाहता और न इसके सुनने से विश्वास हो सकता है कि

तुम दलीपशाह हो । मुझ पर दया करो और अपनी चलती फिरती जुबान रोको ॥

नकाबपोश० । अगर विश्वास नहीं हो सकता तो मैं कुछ और भी कहूंगा, अगर तुम न सुनोगे तो मैं अपने साथी को सुनाऊंगा । (अपने साथी नकाबपोश की तरफ देख के) मैं उस समय अपनी चारपाई के पास बैठा कुछ लिख रहा था जब यह भूतनाथ मेरे सामने आ कर खड़ा हो गया था । कम्बल की घोघी क्षण भर के लिये इस के आगे की तरफ से हट गई थी और इसके कपड़े पर पड़े हुए खून के छींटे दिखाई दे रहे थे । यद्यपि मेरी तरह भूतनाथ के चेहरे पर भी नकाब पड़ी हुई थी मगर मैं खूब समझता था कि यह भूतनाथ है, मैं उठ खड़ा हुआ और फुरती के साथ इसके चेहरे पर से नकाब हटा कर इसकी सूरत देख ली उस समय इसके चेहरे पर भी खून के छींटे पड़े हुए दिखाई दिये थे । भूतनाथ ने मुझे डांट कर कहा था कि "तुम हट जाओ और मुझे अपना काम करने दो ।" तब तक मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह मेरे पास क्यों आया है और क्या चाहता है, जब मैंने पूछा कि "तुम क्या किया चाहते हो और मैं यहां से क्यों हट जाऊं ?" तब इसने मुझ पर खञ्जर का वार किया, क्योंकि यह उस समय बिल्कुल पागल हो रहा था और मालूम होता था कि यह इस समय अपने पराये को पहिचान नहीं सकता...

भूत०। (बात काट कर) ओफ ! बस करो, वास्तव में उस समय मुझमें अपने पराये को पहिचानने की ताकत न थी, मैं अपनी गरज में मतवाला और साथ ही इसके अन्धा भी हो रहा था ॥

नकाबपोश० । हां हां सो तो मैं खुद ही कह रहा हूं, क्योंकि तुमने उस समय अपने प्यारे लड़के को कुछ भी नहीं पहिचाना और रुपये की लालच ने तुम्हें मायारानी के तिलिस्मी दारोगा का हुक्म

मानने पर मजबूर किया (अपने साथी नकाबपोश की तरफ देख कर) उस समय इसकी स्त्री अर्थात् कमला की मा इससे रञ्ज हो कर मेरे ही घर में आई और छिपी हुई थी और जिस चारपाई के पास मैं बैठा हुआ लिख रहा था उसी पर इसका एक छोटा बच्चा अर्थात् कमला का छोटा भाई सो रहा था और उसकी मां अन्दर के दालान में भोजन कर रही थी और उसके पास उसकी बहिन अर्थात् भूतनाथ की साली भी बैठी हुई अपने दुःख दर्द की कहानी के साथ ही साथ भूतनाथ की शिकायत भी कर रही थी, उसका छोटा बच्चा उसकी गोद में था मगर भूतनाथ......

भूत०। (बात काटता हुआ) ओफ ओफ! बस करो, मैं सुनना नहीं चाहता। तु...तु...तु...तुम...मैं......

इतना कहता हुआ भूतनाथ पागलों की तरह इधर उधर घूमने लगा और फिर एक चक्कर खा कर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश होगया॥
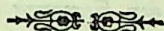
चौदहवां बयान।

भूतनाथ के बेहोश होजाने पर दोनों नकाबपोशों ने भूतनाथ के साथियों में से एक को पानी लाने के लिये कहा और जब वह पानी ले आया तो उस नकाबपोश ने जो अपने को दलीपशाह बताता था अपने हाथ से भूतनाथ को होश में लाने का उद्योग किया। थोड़ी ही देर में भूतनाथ चैतन्य हो गया और नकाबपोश की तरफ देख कर बोला, "मुझसे बड़ी भारी भूल हुई जो आप दोनों को फंसाकर यहां ले आया! आज मेरी हिम्मत बिलकुल टूट गई और मुझे निश्चय हो गया कि अब मेरी मुराद पूरी नहीं हो सकती और मुझे लाचार

होकर अपनी जान दे देनी पड़ेगी ॥"

नकाबपोश०। नहीं नहीं भूतनाथ तुम ऐसा मत सोचो देखो हम कह चुके हैं और तुम्हें मालूम भी हो चुका है कि हमलोग तुम्हारे ऐबों को खोला नहीं चाहते बल्कि राजा बीरेन्द्रसिंह से तुम्हें माफी दिलाने का बन्दोबस्त कर रहे हैं, फिर तुम इस तरह हतास क्यों होते हो ? होश करो और अपने को सम्हालो ॥

भूत० । ठीक है, मुझे इस बात की आशा हो चली थी कि मेरे ऐब छिपे रह जायंगे और मैं इस बात का बन्दोबस्त भी कर चुका था कि वह पीतल वाली सन्दूकड़ी खोली न जाय मगर अब वह उम्मीद कायम नहीं रह सकती क्योंकि मैं अपने दुश्मन को अपने सामने मौजूद पाता हूं ॥

नकाबपोश० । बड़े ताज्जुब की बात है कि दर्बार में हम लोगों की कैफियत देखकर भी तुम हमें अपना दुश्मन समझते हो ! यदि तुम्हें मेरी बातों का विश्वास न हो तो मैं तुम्हें इजाजत देता हूं कि खुशी से मेरा सिर काट कर दिलजमई कर लो और अपना शक मिटा लो । तब तो तुम्हें अपने भेदों के खुलने का भय न रहेगा ?

भूतनाथ० । (ताज्जुब से नकाबपोश की सूरत देखकर) दलीपशाह ! वास्तव में तुम बड़े दिलावर, शेरमर्द, रहमदिल और नेक आदमी हो ! क्या सचमुच तुम मेरे कसूरों को माफ करते हो ?

नकाबपोश० । हां हां, मैं सच कहता हूं कि मैंने तुम्हारे कसूरों को माफ कर दिया बल्कि दो रईसों के सामने इस बात की कसम खा चुका हूं ॥

भूत० । वे दोनों रईस कौन हैं ?

नकाब०। जिनके कब्जे में इस समय हमलोग हैं और जो नित्य महाराजा साहब के दर्बार में जाया करते हैं ॥

भूत०। क्या राजा साहब के दर्बार में जानेवाले नकाबपोश कोई दूसरे हैं आप नहीं हैं ? या उस दिन दरबार में आप नहीं थे जिस दिन आपकी सूरत देखकर जयपाल घबड़ाया था ?

नकाब०। हां बेशक वे नकाबपोश दूसरे हैं और समय समय पर नकाब डालने के अतिरिक्त सूरत भी बदल कर जाया करते हैं। उस दिन वे हमारी सूरत बनकर दर्बार में गये थे हम नहीं गये थे॥

भूत०। वे दोनों कौन हैं ?

नकाब०। वही तो एक बात है जिसे हमलोग खोल नहीं सकते, मगर तुम घबड़ाते क्यों हो ? जिस दिन उनकी असली सूरत देखोगे खुश हो जाओगे, तुमहीं नहीं बल्कि कुल दर्बारियों को और महाराज साहब को भी खुशी होगी क्योंकि वे दोनों नकाबपोश कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं॥

भूत०। मेरे इस भेद को वे दोनों जानते हैं या नहीं ?

नकाब०। फिर तुम उसी तरह की बातें पूछने लगे !!

भूत०। अच्छा अब न पूछूंगा मगर अन्दाज से मालूम होता है कि जब आप उनके सामने भेद छिपाने की कसम खा चुके हैं तो वे इस भेद को जानते जरूर होंगे। खैर अब आप कहते ही हैं कि मेरा भेद छिपा रह जायगा तो मुझे घबड़ाना न चाहिये। मगर मैं फिर भी यही कहूंगा कि आप दलीपशाह नहीं हैं !!

नकाब०। (खिलखिला कर हँसने के बाद) फिर मुझे भी कुछ और कहना ही पड़ेगा। अहा ! तुम्हारी स्त्री बेचारी बड़ी ही नेक थी। जो कुछ तुमने उसके सामने किया......

भूत०। (नकाबपोश के मुंह पर हाथ रख कर) बस बस बस मैं कुछ भी सुना नहीं चाहता, यह कैसी माफी है कि आप अपनी ज़ुबान नहीं रोकते॥

इतने ही में पत्थरों की आड़ में से एक आदमी निकल कर बाहर आया और यह कहता हुआ भूतनाथ के सामने खड़ा हो गया, "तुम इन्हें भले ही रोक दो मगर मैं उन बातों की याद दिलाये बिना नहीं रह सकता ॥"

नहीं कह सकते कि इस नये आदमी को यहां आये कितनी देर हुई या कब से पत्थरों की आड़ में छिपा हुआ इन दोनों की बातें सुन रहा था । भूतनाथ उसे यकायक अपने सामने देख कर चौंक पड़ा और घबराहट तथा परेशानी के साथ उसकी सूरत देखने लगा । उस आदमी ने जानबूझ कर रोशनी के सामने अपनी सूरत कर दी जिसमें पहिचानने के लिये भूतनाथ को तकलीफ न करनी पड़े ॥

यह वही आदमी था जिसे भूतनाथ ने नकाबपोशों के मकान में सूराख के अन्दर से झांक कर देखा था और जिसने नकाबपोशों के सामने एक बड़ी सी तस्वीर पेश करके कहा था कि "कृपानाथ ! बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूंगा ॥"

इस आदमी को देख कर भूतनाथ पहिले से भी ज्यादे घबरा गया, उसके बदन का खून बर्फ की तरह जम गया और उसमें हाथ पैर हिलाने की ताकत बिलकुल न रही । उस आदमी ने पुनः कड़क कर भूतनाथ से कहा, "ये नकाबपोश साहब तुम्हारी बात मान कर चाहे चुप रह जायँ मगर मैं उन बातों को अच्छी तरह याद दिलाये बिना न रहूंगा जिसके सुनने की ताकत तुम में नहीं है । अगर तुम इनको दलीपशाह नहीं मानते तो मुझे दलीपशाह मानने में तुम्हें कोई उज्र भी न होगा ॥"

भूतनाथ यद्यपि आश्चर्य्य घटनाओं का शिकार हो रहा था और एक तौर पर खौफ, तरद्दुद, परेशानी और नाउम्मीदी ने उसे चारों तरफ से आ कर घेर लिया था मगर फिर भी उसने कोशिश करके

अपने होशहवाश दुरुस्त किये और उस नये आये हुए दलीपशाह की तरफ देख कर कहा, "बहुत खासे! एक दलीपशाह ने तो परेशान कर ही रक्खा था अब आप दूसरे दलीपशाह भी आ पहुंचे, थोड़ी देर में कोई तीसरे दलीपशाह आ जायँगे, फिर मैं काहे को किसी से दो बात कर सकूंगा (पुराने दलीपशाह की तरफ देख के) अब बताइये दलीपशाह आप हैं या यह ?"

पुराने दलीप०। तुम इतने ही में घबड़ा गये! हमारे यहां जितने नकाबपोश हैं सभी अपना नाम दलीपशाह बताने के लिये तैयार होंगे मगर तुम्हें अपनी अक्ल से पहिचानना चाहिये कि वास्तव में दलीपशाह कौन है॥

भूतनाथ०। इस कहने का मतलब तो यही है कि आपलोग सच नहीं बोलते॥

पुराना दलीप०। जो बातें हमने तुमसे कही थीं क्या वे झूठ हैं?

नया दलीप०। या मैं जो कुछ कहूंगा वह झूठ होगी? अच्छा सुनो मैं एक दिन का जिक्र करता हूं जब तुम ठीक दोपहर के समय उसी पीतलवाली सन्दूकड़ी को बगल में छिपाए रोहतासगढ़ की तरफ भागे जाते थे, जब तुम्हें प्यास लगी तब तुम एक ऊंचे जगतवाले कूएं पर पानी पीने के लिये ठहर गए जिस पर एक पुराने नीम के पेड़ की सुन्दर छाया पड़ रही थी। उसी कूएं की जगत में नीचे की तरफ एक खुली कोठड़ी थी और उसमें एक मुसाफिर गर्मी की तकलीफ मिटाने की नीयत से लेटा हुआ तुम्हारे ही बारे में तरह तरह की बातें सोच रहा था। तुम्हें उस आदमी के वहां मौजूद रहने का गुमान भी न था मगर उसने तुम्हें कुएं पर आते हुए देख लिया था अस्तु वह इस फिक्र में पड़ गया कि तुम्हारी छोटी सी गठड़ी में क्या चीज है उसे मालूम करे और अगर उसमें कोई चीज उसके मत-

लब को हो तो उसे निकाले। उस समय उस आदमी की सूरत ऐसी न थी कि तुम उसे पहिचान सकते बल्कि वह ठीक देहाती पण्डित की सूरत में था। क्योंकि वह वास्तव में एक ऐयार था। अस्तु वह हाथ में लोटा लिये हुए कोठड़ी के बाहर निकला और उस ठिकाने गया जहां पर तुम कूएं में झुक कर पानी खींच रहे थे। तुम्हें इस बात का गुमान भी न था कि वह तुम्हारे साथ दगा करेगा मगर उसने पीछे से तुम्हें एक ऐसा धक्का दिया कि तुम कूएं के अन्दर जा रहे और उसने तुम्हारे ऐयारी के बटुए पर कब्जा कर लिया और जो कुछ उसके अन्दर था उसे अच्छी तरह देख और समझ लिया बल्कि कुछ ले भी लिया। क्या तुम्हें आज तक मालूम भी हुआ कि वह कौन था?

भूत०। (ताज्जुब से) नहीं, मैं अभी तक न जान सका कि वह कौन था, मगर इन बातों के करने से तुम्हारा मतलब ही क्या है?

नया दलीप०। मतलब यही है कि तुम जान जाओ कि इस समय वही आदमी तुम्हारे सामने खड़ा है॥

भूत०। (क्रोध से खञ्जर निकाल कर) क्या वह तुम ही थे?

नया दलीप०। (खञ्जर का जवाब खञ्जर ही से देने के लिये तैयार होकर) बेशक मैं ही था और मैंने तुम्हारे बटुए में क्या क्या देखा सो भी इसी समय बयान करूंगा॥

पहिला दलीप०। (भूतनाथ को डपट कर) बस खबरदार! होश में आओ और अपनी करतूतों पर ध्यान दो। हमने पहिले ही कह दिया था कि तुम क्रोध में आकर अपने को बर्बाद कर दोगे, बेशक तुम बर्बाद हो जाओगे और कौड़ी काम के न रहोगे, साथ ही इसके यह भी समझ रखना कि तुम दलीपशाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और न उसे तुम्हारे तिलिस्मी खञ्जर की कुछ पर्वाह है॥

भूतनाथ०। मैं आपसे किसी तरह की तकरार नहीं करता मगर इसको सजा दिये बिना भी न रहूंगा क्योंकि इसने मेरे साथ दगा करके मुझे बहुत बड़ा नुक्सान पहुंचाया है तथा यही वह शख्स है जो मुझ पर दावा करने वाला है। अस्तु हमारे इसके इसी जगह सफाई हो जाय तो बेहतर है॥

पहिला दलीप०। खैर जब तुम्हारी बदकिस्मती आही गई है तो हम कुछ नहीं कहते तुम लड़ के देख लो और जो कुछ बदा है भोगो मगर साथ ही इसके यह भी सोच लो कि तुम्हारी तरह इसके और मेरे हाथ में भी तिलिस्मी खञ्जर है और इन खञ्जरों की चमक में तुम्हारे आदमी तुम्हें कुछ भी मदद नहीं पहुंचा सकते॥

भूतनाथ०। (कुछ सोच कर और रुक कर) तो क्या आप इसकी मदद करेंगे?

पहिला दलीप०। बेशक॥

भूत०। आप तो मेरे सहायक हैं!!

पहिला दलीप०। मगर इतने नहीं कि अपने साथियों को नुक्सान पहुंचावें॥

भूत०। आखिर यह सब मुझे नुक्सान पहुंचाने के लिये तैयार हैं तो क्या किया जाय?

पहिला दलीप०। इससे भी माफी की उम्मीद करो क्योंकि हम लोगों के सर्दार तुम्हारे पक्षपाती हैं॥

भूतनाथ०। (खञ्जर म्यान में रख कर) अच्छा अब हम आपकी मेहरबानी पर भरोसा करते हैं जो चाहे कीजिये॥

पहिला दलीप०। (नये दलीप से) आओ जी तुम मेरे पास बैठ जाओ॥

नया दलीप०। मैं तो इससे लड़ता ही नहीं मुझे क्या कहते हो?

लो मैं तुम्हारे पास बैठ जाता हूं मगर यह तो बताओ कि अब इसी भूतनाथ के कब्जे में पड़े रहोगे या यहां से चलोगे?

पहिला दलीप०। (भूतनाथ से) कहो अब मेरे साथ क्या सलूक किया चाहते हो? मुनासिब तो यही है कि हमें कैद करके दर्बार में ले चलो॥

भूत०। नहीं, मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है बल्कि आप मुझे माफी की उम्मीद दिलाइयें तो मैं यहां से चला जाऊं॥

पहिला दलीप०। हां तुम माफी की उम्मीद कर सकते हो मगर इस शर्त पर कि अब हमलोगों का पीछा न करो॥

भूतनाथ०। नहीं अब ऐसा न करूंगा। मैं आपको आपके ठिकाने पहुंचा दूंगा॥

नया दलीप०। हमें अपना रास्ता मालूम है किसी के मदद की जरूरत नहीं॥

इतना कह कर नया दलीपशाह उठ खड़ा हुआ और साथ ही वे दोनों नकाबपोश भी जिन्हें भूतनाथ बेहोश करके लाया था उठे और अपने मकान की तरफ चल पड़े॥

पन्द्रहवां बयान।

महाराज सुरेन्द्रसिंह के दरबार में दोनों नकाबपोश दूसरे दिन नहीं आये बल्कि तीसरे दिन आये और आज्ञानुसार बैठ जाने पर अपनी गैरहाजिरी का सबब एक नकाबपोश ने इस तरह पर बयान किया:—

"भैरोसिंह और तारासिंह को साथ लेकर यद्यपि हमलोग इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के पास गये थे मगर रास्ते में कई तरह

की तकलीफ हो जाने के कारण जुकाम (सर्दी) और बुखार के शिकार बन गये, गले में दर्द और रेजिश के सबब साफ बोला नहीं जाता था बल्कि अभी तक आवाज साफ नहीं हुई, इस लिये कुंअर इन्द्र· जीतसिंह ने जोर देकर हमलोगों को रोक लिया और दो दिन अपने पास से हटने न दिया, लाचार हम लोग हाजिर न हो सके बल्कि उन्होंने एक चीठी भी महाराज के नाम की दी है ॥"

यह कह के नकाबपोश ने एक चीठी जेब से निकाली और उठ कर महाराज के हाथ में देदी । महाराज ने बड़ी प्रसन्नता से वह चीठी जो खास इन्द्रजीतसिंह के हाथ की लिखी हुई थी पढ़ी और उसके बाद बारी बारी से सभों के हाथ में वह चीठी घूमी, उसमें यह लिखा हुआ था:—

प्रणाम इत्यादि के बाद,

"आपके आशीर्वाद से हम लोग प्रसन्न हैं, दोनों ऐयारों के न होने से जो तकलीफ थी अब वह जाती रही । रामसिंह और लक्ष्मण· सिंह ने हम लोगों की बड़ी मदद की इसमें कोई सन्देह नहीं, हम लोग तिलिस्म का बहुत ज्याद काम खतम कर चुके हैं आशा है कि आज के तीसरे दिन हम दोनों भाई आपकी सेवा में उपस्थित होंगे और इसके बाद जो कुछ तिलिस्म का काम बचा हुआ है उसे आपकी सेवा में रह कर ही पूरा करेंगे । हम दोनों की इच्छा है कि तब तक आप कैदियों का मुकद्दमा भी बन्द रक्खें क्योंकि उसके देखने और सुनने के लिये हम बेचैन हो रहे हैं! उपस्थित होने पर हम दोनों अपना अनूठा हाल भी अर्ज करेंगे ॥"

इस चीठी को पढ़ कर और यह जान कर सभी प्रसन्न हुए कि अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह आया ही चाहते हैं, इसी तरह इस उपन्यास के प्रेमी पाठक भी यह जान कर प्रसन्न होंगे कि

अब यह उपन्यास भी शीघ्र ही समाप्त हुआ चाहता है । अस्तु कुछ देर तक खुशी के चरचे होते रहे और इसके बाद पुनः नकाबपोशों से बातचीत होने लगी ॥

एक नकाब० । भूतनाथ लौट कर आया या नहीं ?

तेज० । ताज्जुब है कि भूतनाथ अभी तक नहीं आया शायद आप के साथियों ने उसे......

नकाबपोश० । नहीं नहीं, हमारे साथी लोग उसे दुःख न देंगे, मुझे तो विश्वास था कि भूतनाथ आ गया होगा क्योंकि वे दोनों नकाबपोश लौट कर हमारे यहां पहुंच गये जिन्हें भूतनाथ गिरफ़ार कर के ले गया था मगर अब शक होता है कि भूतनाथ पुनः किसी फेर में तो नहीं पड़ गया या उसे पुनः मेरे किसी साथी को पकड़ने का शौक तो नहीं हुआ ॥

तेज० । आपके साथी ने लौट कर अपना हाल तो कहा होगा ?

नकाबपोश० । जी हां, कुछ हाल कहा था जिससे मालूम हुआ कि उन दोनों को गिरफ़ार करके ले जाने पर भूतनाथ को पछताना पड़ा ॥

तेज० । क्या आप बता सकते हैं कि क्या क्या हुआ ?

नकाबपोश० । बता सकते हैं मगर यह बात भूतनाथ को नापसन्द होगी क्योंकि भूतनाथ को उन लोगों ने उसके पुराने ऐबों को जता कर डरा दिया था और इसी सबब से वह उन नकाबपोशों का कुछ बिगाड़ न सका । हां हमलोग उन दोनों नकाबपोशों को अपने साथ यहां ले आये हैं, यह सोच कर कि भूतनाथ यहां आ गया होगा अस्तु उसका मुकाबला हुजूर के सामने कर दिया जायगा ॥

तेज० । हां ! वे दोनों नकाबपोश कहां हैं ?

नकाबपोश० । बाहर फाटक पर उन्हें छोड़ आया हूं किसी को

हुक्म दिया जाय बुला लावे ॥

इशारा पाते ही एक चोबदार उन्हें बुलाने के लिये चला गया, उसी समय भूतनाथ भी दर्बार में हाजिर होता दिखाई दिया। कौतुक की निगाह से सभों ने भूतनाथ को देखा। भूतनाथ ने सभों को सलाम किया और आज्ञानुसार देवीसिंह के बगल में बैठ गया ॥

जिस समय भूतनाथ इस इमारत की ड्योढ़ी पर आया था उसी समय उन दोनों नकाबपोशों को फाटक के बाहर टहलता हुआ देख कर चौंक पड़ा था। यद्यपि उन दोनो के चेहरे नकाब से खाली न थे मगर फिर भी भूतनाथ ने उन्हें पहिचान लिया कि ये दोनों वही नकाबपोश हैं जिन्हें हम फँसा ले गये थे। अपने धड़कते हुए कलेजे और परेशान दिमाग को लिये हुए भूतनाथ फाटक के अन्दर चला गया और दर्बार में हाजिर हो कर उसने दोनों सर्दार नकाबपोशों को देखा ॥

एक नकाबपोश०। कहो भूतनाथ! अच्छे तो हो?

भूत०। हुजूर लोगों के अकबाल से जिन्दा हूं मगर दिन रात इसी सोच में पड़ा रहता हूं कि प्रायश्चित करने या क्षमा मांगने से ईश्वर भी अपने भक्तों के पापों को भुला कर क्षमा दे देता है परन्तु मनुष्यों में यह बात क्यों नहीं पाई जाती!!

नकाब०। जो लोग ईश्वर के भक्त हैं और जो निर्गुण और सगुण सर्वशक्तिमान जगदीश्वर का भरोसा रखते हैं वे जीवमात्र के साथ वैसा ही बर्ताव करते हैं जैसा ईश्वर चाहता है या जैसी कि हरि इच्छा समझी जाती है। अगर तुमने सच्चे दिल से परमात्मा से क्षमा मांग ली और अब तुम्हारी नीयत साफ है तो तुम्हें किसी तरह का दुःख नहीं मिल सकता, अगर कुछ मिलता भी है तो इसका कारण तुम्हारे चित्त का विकार है। तुम्हारे चित्त में अभी तक शान्ति नहीं

हुई और तुम एकाग्र हो कर कार्य्यों की तरफ ध्यान नहीं देते इसी लिये तुम्हें सुख प्राप्त नहीं होता । अस्तु हमारा कहना इतना ही है कि तुम शान्ति के स्वरूप बनो और ज्यादे खोज बीन के फेर न पड़ो, यदि तुम इस बात को मानोगे तो निःसन्देह अच्छे रहोगे और तुम्हें किसी तरह का कष्ट न होगा ॥

भूत० । निःसन्देह आप उचित कहते हैं ॥

देवी० । भूतनाथ ! तुम्हें यह सुन कर प्रसन्न होना चाहिये कि दो ही तीन दिन में कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह आने वाले हैं ॥

भूत० । (ताज्जुब से) यह कैसे मालूम हुआ ?

देवी० । उनको चीठी आई है ॥

भूत० । कौन लाया है ?

देवी० । (नकाबपोश की तरफ बता कर) येही लाये हैं ॥

भूत० । क्या मैं उस चीठी को देख सकता हूं ?

देवी० । अवश्य ॥

इतना कह कर देवीसिंह ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह की चीठी भूतनाथ के हाथ में देदी और भूतनाथ ने प्रसन्नता के साथ पढ़ कर कहा, "अब सब बखेड़ा तै हो जायगा ॥"

जीत० । (महाराज का इशारा पा कर भूतनाथ से) भूतनाथ ! तुम्हें महाराज की तरफ से किसी तरह का खौफ न रहना चाहिये, क्योंकि महाराज आज्ञा दे चुके हैं कि तुम्हारे ऐबों पर ध्यान न देंगे और देवीसिंह, जिन्हें महाराज अपना अङ्ग समझते हैं तुम्हें अपने भाई के बराबर मानते हैं । अच्छा यह बताओ कि तुम्हारे लौट आने में इतना विलम्ब क्यों हुआ ? क्योंकि जिन दो नकाबपोशों को तुम गिरफ़ार करके ले गये थे उन्हें अपने घर लौटे दो दिन हो गये ॥

भूतनाथ कुछ जवाब दिया ही चाहता था कि वे दोनों नकाब-

पोश भी हाजिर हुए जिन्हें बुलाने के लिये चोबदार गया था जब वे दोनों सभों को सलाम कर के आज्ञानुसार बैठ गये तब भूतनाथ ने जवाब दिया:—

भूतनाथ०। (दोनों नकाबपोशों की तरफ बता कर) जहां तक मैं खयाल करता हूं वे दोनों नकाबपोश ये ही हैं जिन्हें मैं गिरफ्तार कर के ले गया था (नकाबपोशों से) क्यों साहबो?

एक नकाबपोश०। ठीक है, मगर हम लोगों को ले जाकर तुमने क्या किया सो महाराज को मालूम नहीं है॥

भूत०। हम लोग एक साथ ही अपने अपने स्थान की तरफ रवाना हुए थे, ये दोनों तो बेखटक अपने घर पहुंच गये होंगे मगर मैं एक विचित्र तमाशे के फेर में पड़ गया था॥

जीत०। वह क्या?

भूतनाथ०। (कुछ सङ्कोच के साथ) क्या कहूं कहते शर्म मालूम होती है॥

देवी०। ऐयारों को किसी घटना के कहने में शर्म न होनी चाहिये, चाहे उन्हें अपनी दुर्गति का हाल क्यों न कहना पड़े, और यहां कोई गैर शख्स भी बैठा हुआ नहीं है, ये नकाबपोश साहब भी अपने ही हैं, तुम खुद देख चुके हो कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने इनके बारे में क्या लिखा है॥

भूत०। ठीक है मगर......खैर जो होगा देखा जायगा मैं बयान करता हूं सुनिये। इन नकाबपोशों को बिदा करने बाद जिस समय मैं वहां से रवाना हुआ रात आधी से कुछ ज्यादा जा चुकी थी। जब मैं "पिपलिया" वाले जङ्गल में पहुंचा जो यहां से दो ढाई कोस होगा, तो गाने की मधुर आवाज मेरे कानों में पड़ी और मैं ताज्जुब से चारो तरफ गौर करने लगा। मालूम हुआ कि दाहिनी तरफ से

आवाज आ रही है अस्तु मैं रास्ता छोड़ धीरे २ दाहिनी तरफ चला और गौर से उस आवाज को सुनने लगा। जैसे जैसे आगे बढ़ता था आवाज साफ होती जाती थी और यह जान पड़ता था कि मैं इस आवाज से अपरिचित नहीं हूं बल्कि कई दफे सुन चुका हूं अस्तु उत्कण्ठा के साथ मैं कदम बढ़ा कर चलने लगा और आगे जाने बाद मालूम हुआ कि दो औरतें मिल कर बारी बारी से गा रही हैं, जिनमें से एक की आवाज पहिचानी हुई है। जब उस ठिकाने पहुंच गया जहां से आवाज आती थी तो देखा कि " बड़ " के एक बहुत बड़े और पुराने पेड़ के ऊपर कई औरतें चढ़ी हुई हैं जिनमें से दो औरतें गा रही हैं। वहां बहुत अन्धकार हो रहा था इस लिये इस बात का पता नहीं लग सकता था कि वे औरतें कौन, कैसी और किस रङ्ग ढङ्ग की हैं तथा उनका पहिरावा कैसा है॥

मैं भले बुरे का कुछ खयाल न कर के उस पेड़ के नीचे चला गया और तिलिस्मी खञ्जर अपने हाथ में ले कर रोशनी के लिये उस का कब्जा दबाया उसकी तेज रोशनी के सब चारो तरफ उजाला हो गया और पेड़ पर चढ़ी हुई वे औरतें भी दिखाई देने लगीं। मैं उन के पहिचानने की कोशिश कर ही रहा था कि यकायक उस पेड़ के चारो तरफ चक्र की तरह आग भभक उठी और तुरत ही बुझ गई, जैसे किसी ने बारूद की लकीर में आग लगा दी हो और वह भक से उड़ जाने बाद केवल धूआं ही धूआं रह जाय। ठीक वैसा ही मालूम हुआ। आग बुझ जाने के साथ ही ऐसा जहरीला और कड़वा धूआं फैला कि मेरी तबीयत घबड़ा गई और मैं समझ गया कि इस में बेहोशी का असर जरूर है और मेरे साथ ऐयारी की गई। बहुत कोशिश की मगर मैं अपने को सम्हाल न सका और बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ा॥

मैं नहीं कह सकता कि बेहोश होने बाद मेरे साथ कैसा सलूक किया गया, हां जब मैं होश में आया और मेरी आंख खुली तो मैंने एक सुन्दर सजे हुए कमरे में अपने को हथकड़ी बेड़ी से मजबूर पाया। उस समय कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी और मेरे सामने साफ फर्श के ऊपर कई औरतें बैठी हुई थीं जिनमें मेरी औरत एक ऊंची गद्दी पर बैठी हुई उन सभों की सर्दार मालूम पड़ती थी॥

॥ बीसवां हिस्सा समाप्त ॥
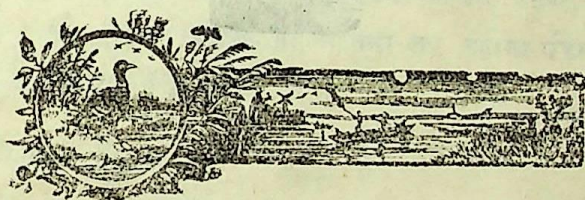
रेलवे सीरीज।

मूल्य प्रति अङ्क ≤) आना।

खोई हुई दुलहिन—

एक साहब ने बड़ी मुश्किलों से तो अपनी प्रेमिका से शादी करी और ब्याह होने के बाद ही दुलहिन गायब हो गई। वह कहां गई और क्या हुई तथा किस तरह उसका हाल मालूम हुआ यह सब इसमें लिखा गया है॥

चित्र—

एक छोटा सा जासूसी उपन्यास। एक जमींदार के बेटे धोखे में पड़ एक वेश्या के साथ बैठ अपनी तस्वीर उतरवा चुके थे। उस चित्र के कारण उन्हें कितना कष्ट उठाना पड़ा इसका हाल लिखा गया है॥

प्रोफेसर भोंदू—

एक बहुत सूक्ष्म बुद्धि के प्रोफेसर ने अपना माथा खाली करके एक बोतल ईजाद की थी, इस बोतल में यह तारीफ थी कि उसके अन्दर जो प्राणी रख दिया जाय वह मरता न था। किस प्रकार इस बोतल की परीक्षा की गई और उस परीक्षा का क्या नतीजा निकला यह पढ़ आप हँस पड़ेंगे॥

रामरखा का खून—

नशे की हालत में एक बाबू साहब को यह धुन सवार होगई कि उन्होंने अपने एक दोस्त को मार डाला है। बस डर के मारे उनकी बुरी हालत होगई और वे दरदर भागने लगे। अन्त में बड़ी कठिनता से उनका यह डर दूर हुआ॥

श्यामा—

एकही युवती के दो प्रेमियों का हाल, आपस के विद्वेष से दोनों ही ने उस युवती की आशा छोड़ दी, एक डाकू हो गया दूसरा मरने के लिये फौज में भरती हो गया। अन्त में किस तरह पर इनके झगड़ों का फैसला हुआ सो पढ़िये॥

मिलने का पता—

मैनेजर लहरी प्रेस,

लाहौरी टोला,

बनारस सिटी।